मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
धनबाद	26.1	17.3
जमशेदपुर	26.1	17.4
डालटनगंज	25.9	16.6

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

शुभम संदेश

रांची, धनबाद एवं पटना से प्रकाशित

एक राज्य - एक अखबार

पेज 8-9

www.lagatar.in | शनिवार, 09 दिसंबर 2023 ● मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 12, संवत 2080 ● पृष्ठ : 16, मूल्य : ₹ ~~5~~ ● वर्ष : 1, अंक : 231 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 5 मात्र

किसने क्या कहा

- मैं न्यायाधीश नहीं हूं, मैं सभापति हूं : **ओम बिरला**
- मोदी सरकार के तहत बुनियादी ढांचे के विकास में तेजी आई -**ज्योतिरादित्य सिंधिया**
- मिजोरम के नए सीएम के साथ काम करने को उत्सुक : **हिमंत विश्व शर्मा**

सर्राफा

सोना (बिक्री)	58,400
चांदी (किलो)	75,000

ब्रीफ खबरें

लोगों ने स्थिरता के लिए मत दिया: पीएम

देहरादून। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को उत्तराखंड को निवेश के लिए प्रमुख गंतव्य के तौर पर पेश करते हुए कहा कि हाल के चुनावों में जनता ने स्थिर और मजबूत सरकारों के लिए मतदान किया है.

तेलंगाना के पूर्व सीएम केसीआर को फ्रैक्चर

हैदराबाद। तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव को एर्रावेली स्थित अपने आवास में गिरने के कारण हुए फ्रैक्चर के बाद कूल्हा प्रतिरोपण सर्जरी करानी होगी और ठीक होने की प्रक्रिया में लगभग छह से आठ सप्ताह का समय लगेगा.

लालदुहोमा ने मिजोरम के सीएम पद की शपथ ली

आइजोल। जोराम पीपुल्स मूवमेंट (जेडपीएम) के नेता लालदुहोमा ने शुक्रवार को मिजोरम के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली. इस मौके पर उन्होंने राज्य को ईमानदार सरकार देने का वादा किया है.

कैंसर पीड़ित अभिनेता जू. महमूद का निधन

मुंबई। कारवां, हाथी मेरे साथी और मेरा नाम जोकर जैसी फिल्मों में अपने बेहतरीन अभिनय से मशहूर हुए चरित्र अभिनेता जूनियर महमूद का कैंसर के कारण शुक्रवार को निधन हो गया. वह 68 वर्ष के थे.

सिर्फ कैलोरी पर नजर रखना जरूरी नहीं

सैन मार्कोस (अमेरिका)। वजन-समावेशी स्वास्थ्य देखभाल का अर्थ है बेहतर स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना, जिसमें वजन घटाने की आवश्यकता नहीं है.

ताइवान जलडमरूमध्य में चीनी गुब्बारा देखा गया

ताइपे। ताइवान जलडमरूमध्य में एक चीनी सैन्य निगरानी गुब्बारा और बड़े पैमाने पर भेजे गए सैन्य विमान एवं पोत देखे गए हैं. ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी दी.

आईसीसी ने फाइनल की पिच को औसत करार दिया

नयी दिल्ली। आईसीसी ने अहमदाबाद के स्टेडियम की उस पिच को औसत करार दिया है जिस पर 19 नवंबर को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच वनडे विश्व कप का फाइनल खेला गया था.

पुतिन फिर राष्ट्रपति का चुनाव लड़ेंगे

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने घोषणा की है कि वह देश के शीर्ष पद के लिए 2024 में होने वाला अगला चुनाव भी लड़ेंगे. रूसी मीडिया ने यह जानकारी दी. पुतिन ने कहा 17 मार्च के राष्ट्रपति चुनाव में भाग लेने के फैसले की घोषणा की. कहा, मैं नहीं छिपाऊंगा. मेरे पास कई विचार थे, लेकिन अब, आप सही हैं, मैं रूसी संघ के राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ूंगा.

बड़ी कार्रवाई

कांग्रेस सांसद धीरज साहू के ठिकानों पर तीसरे दिन भी आयकर की छापेमारी जारी

नोटों की गिनती जारी

सौरभ सिंह। रांची

कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू और उनसे संबंधित ठिकानों पर आईटी की छापेमारी शुक्रवार को भी तीसरे दिन जारी रही. धीरज साहू व उनके रिश्तेदारों सहित उनसे जुड़ी कंपनियों के कई ठिकानों पर रेड में नोटों का जखीरा मिला है. रेड के दूसरे दिन नोटों की गिनती में आयकर विभाग ने लगभग 300 करोड़ नकद की गिनती की थी.

इधर, **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी** ने भी इस पर चुटकी ली है. मोदी ने अपने एक्स पोस्ट में धीरज साहू के ठिकानों पर रेड की खबर साझा करते हुए लिखा, "देशवासी इन नोटों के ढेर को देखें और फिर इनके नेताओं के ईमानदारी के भाषणों को सुनें, जनता से जो लूटा है, उसकी पाई-पाई लौटानी पड़ेगी, यह मोदी की गारंटी है." पीएम ने इस ट्वीट के जरिये कांग्रेसियों को भी निशाने पर लिया है. कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू के घर से आईटी टीम ने पांच-छह अलमारी से 300 करोड़ से अधिक की जब्ती की है, जबकि नोटों की गिनती जारी है.

झारखंड-ओडिशा के साथ बंगाल के 10 ठिकानों पर रेड: आईटी की टीम ने राज्यसभा सांसद धीरज साहू और उनसे जुड़ी कंपनियों के ठिकानों पर छापेमारी का दायरा भी बढ़ा दिया है. साहू के 10 ठिकानों, जिसमें झारखंड-ओडिशा के साथ ही साथ बंगाल के ठिकानों पर आयकर की छापेमारी जारी है. झारखंड में धीरज साहू के लोहरदगा स्थित पैतृक आवास के रांची रेडियम रोड स्थित सुशीला निकेतन, ओड़िशा के संबलपुर, बोलांगीर, टिटिलागढ़, सुंदरगढ़, राउरकेला और भुवनेश्वर में भी छापेमारी जारी है. इसके इसके अलावा बंगाल के कोलकाता में एक ठिकाने पर छापा मारा गया है. इस मामले में कोई कुछ बोलने को तैयार नहीं है. **-शेष पेज 13 पर**

नोट गिनते-गिनते मशीनें भी कई बार ठप हुईं

आईटी की टीम ने धीरज साहू के ठिकानों से मिले करोड़ों रुपये के नोटों की गिनती के लिए बैंक से मशीनें मंगवाई हैं. कई नोट मशीनों से नोटों की गिनती की जा रही है. अबतक 300 करोड़ से भी अधिक की बरामदगी की बात सामने आयी है, जबकि नोटों की गिनती तीसरे दिन भी चल ही रही थी. बरामद नोटों 157 बड़े बैगों में भरकर ट्रक से बैंक में पहुंचाया गया.

X पीएम मोदी ने एक्स पोस्ट पर लिखा-जनता से जो लूटा है, उसकी पाई-पाई लौटानी पड़ेगी, यह मोदी की गारंटी है

2000 का एक भी नोट नहीं

आईटी की रेड में नोटों की जो तस्वीर सामने आयी, उसमें सारे नोट 500, 200, 100 और 50 के हैं. लेकिन एक भी नोट 2000 का नहीं मिला. सूत्रों के अनुसार, 2000 के नोट अब प्रचलन से बाहर हैं और इन्हें बदलने की समय सीमा बीत गई है. नोटों का जखीरा और 2000 के नोट का नहीं होना कई बातों की ओर इशारा करता है. 300 करोड़ की गिनती पूरी हो चुकी, इसमें और वृद्धि हो सकती है.

बैंक खाते फ्रीज, ईडी भी कर सकती है पूछताछ

आईटी की 40 सदस्यों की टीम बुधवार से ही ओडिशा के बोलांगीर, रायगढ़ा और संबलपुर, झारखंड के रांची-लोहरदगा और कोलकाता में समूह के ठिकानों पर छापेमारी कर रही है. रेड में आईटी टीम को कई बैंकों के पासबुक भी मिले हैं. आईटी ने धीरज साहू से जुड़ी कंपनियों के कई खातों को फ्रीज कर दिया है. इस मुद्दे में आईटी के अफसर इतनी नकदी जमा करने पर पूछताछ कर सकते हैं. साथ ही ईडी की टीम भी धीरज साहू और जुड़े लोगों से पूछताछ कर सकती है.

भाजपा ने मांगा सीएम हेमंत सोरेन का इस्तीफा

नयी दिल्ली। भाजपा ने शुक्रवार को कहा कि विपक्षी गठबंधन भ्रष्टाचार की गारंटी है, जबकि पीएम नरेंद्र मोदी की गारंटी इसे जड़ से उखाड़ने और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की है. झारखंड से कांग्रेस सांसद धीरज प्रसाद साहू से जुड़े कारोबारी समूह से संबंधित ठिकानों पर आईटी रेड के दौरान भारी मात्रा में नकदी बरामद होने के बाद भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने इंडिया गठबंधन पर निशाना साधा. उन्होंने मांग की कि झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन को पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है और उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए. भाजपा मुख्यालय में पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा, नौ अलमारियों से 300 करोड़ से अधिक की राशि मिली है. कांग्रेस नेता भ्रष्ट तरीकों से कमाए गए धन से अपनी जेबें भर रहे हैं और यह पैसा गांधी परिवार के पास जाता है. **-शेष पेज 13 पर**

लोकसभा में जोरदार हंगामा, विपक्ष ने किया वॉकआउट

टीएमसी सांसद के खिलाफ कैश फॉर क्वेरी मामले में प्रस्ताव ध्वनिमत से पास

महुआ की लोस सदस्यता रद्द

एजेंसी। नई दिल्ली

कैश फॉर क्वेरी मामले में टीएमसी की सांसद महुआ मोइत्रा की संसद सदस्यता शुक्रवार को रद्द कर दी गई. पैसे लेकर सवाल पूछने के मामले में भाजपा सांसद विनोद सोनकर की अध्यक्षता वाली एथिक्स कमेटी की रिपोर्ट को लोकसभा के पटल पर रखा गया और उस पर चर्चा हुई.

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने चर्चा के बाद सदन के सामने रखे प्रस्ताव पर सदस्यों से राय मांगी कि वो मोइत्रा की सदस्यता खत्म करने के पक्ष में हैं या विरोध में? फिर महुआ की लोकसभा सदस्यता खत्म करने का फैसला ध्वनिमत से पारित हो गया. सदन संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने मोइत्रा के निष्कासन का प्रस्ताव रखा था. इस कार्रवाई का विरोध कर रहे विपक्षी सांसदों ने सदन में जम कर हंगामा किया. महुआ के समर्थन में विपक्षी सांसद संसद भवन के बाहर आ गए. इसमें सोनिया गांधी भी शामिल थीं. **-शेष पेज 13 पर**

महुआ मोइत्रा क्या बोलीं

संसद सदस्यता रद्द होने पर मोइत्रा ने कहा कि मैंने अडाणी का मुद्दा उठाया था, जिस वजह से मुझे संसद की सदस्यता से बर्खास्त किया गया है. एथिक्स कमेटी के सामने मेरे खिलाफ कुछ भी नहीं था, सबूत नहीं थे. बस उनके पास केवल एक ही मुद्दा था कि मैंने अडाणी का मुद्दा उठाया था. निष्कासन की सिफारिश पूरी तरह से इस आधार पर है कि मैंने अपना पोर्टल लॉगिन साझा किया है. इसको नियंत्रित करने के लिए कोई भी नियम नहीं हैं. एथिक्स कमेटी के पास निष्कासित करने का कोई अधिकार नहीं है. यह आपके (भाजपा) अंत की शुरुआत है.

क्या था 2005 का कैश फॉर क्वेरी केस

12 दिसंबर 2005. एक न्यूज पोर्टल के स्टिंग ऑपरेशन से सियासी भूचाल आ गया. स्टिंग में 11 सांसदों को दिखाया गया कि वे संसद में सवाल पूछने के बदले पैसे की पेशकश स्वीकार कर रहे थे. इनमें से 6 भाजपा के थे, 3 बीएसपी के और 1 कांग्रेस के सांसद थे. ये सांसद थे- वाईजी महाजन, छत्रपाल लोढ़ा, अन्ना साहेब पाटिल, मनोज भुइंया, सीपी सिंह, राम सेवक, एनके कुशवाहा, प्रदीप गांधी, सुरेश चंदेल, लाल चंद्र कोल और राजा राम पाल. 24 दिसंबर 2005 को 11 सांसदों को बाहर कर दिया गया. लोस में प्रणब मुखर्जी ने 10 सांसदों के निष्कासन का प्रस्ताव रखा, जबकि रास में तत्कालीन पीएम मनमोहन सिंह ने एक सांसद को निष्कासित करने का प्रस्ताव रखा था.

'डेमोक्रेसी की बाईपास सर्जरी हो गई है.' मैं बता रही हूं कि महुआ परिस्थितियों की शिकार हुई हैं. मैं इसकी निंदा करती हूं. हमारी पार्टी महुआ के साथ है. ***-ममता बनर्जी, टीएमसी अध्यक्ष***

विपक्ष के 3 सवाल, सरकार का जवाब

1. विपक्ष ने सवाल किया गया कि प्रस्ताव पास करने में जल्दबाजी क्यों. इस पर भाजपा सांसद हिना गावीत ने कहा कि उन्होंने दो घंटों में पूरी रिपोर्ट पढ़ ली है.

2. विपक्ष ने सवाल किया कि महुआ को सफाई देने का मौका क्यों नहीं? इस पर मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा, ऐसे ही मामले में साल 2005 में 11 सांसदों को निष्कासित किया गया था.

3. विपक्ष ने पूछा कि यह सदन है या कोई अदालत? स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि यह संसद है, कोई अदालत नहीं. सदन को अदालत कहकर संबोधित ना किया जाए.

नया खुलासा : ईडी के गवाह विजय हांसदा को तोड़ने का मकसद

प्रेम प्रकाश ने जेल में रहते दिलवाए 10 लाख

विनीत आभा उपाध्याय। रांची

ईडी ने सुप्रीम कोर्ट में प्रेम प्रकाश की जमानत याचिका का विरोध किया. याचिका पर सुनवाई के दौरान ईडी ने विरोध करते हुए कई जानकारियां कोर्ट को दी हैं.

कोर्ट को बताया कि प्रेम प्रकाश ने ईडी के गवाह को बयान से मुकरने के लिए सत्ता शीर्ष पर बैठे एक व्यक्ति के जरिए 10 लाख रुपये दिलवाये. इसके बाद ही ईडी का गवाह विजय हांसदा न सिर्फ रांची पीएमएलए के विशेष कोर्ट के समक्ष अपने बयान से मुकर गया, बल्कि ईडी के अफसरों पर भी झूठा केस किया. ईडी ने अपने हलफनामे में शीर्ष अदालत को यह भी बताया है कि वर्ष 2017 में एक विभागीय सचिव ने प्रेम प्रकाश को बॉडी गार्ड उपलब्ध कराने के लिए तत्कालीन डीजीपी को पत्र लिखा था.

फिलहाल उक्त आईएएस अधिकारी झारखंड सरकार में एक महत्वपूर्ण पद की जिम्मेवारी संभाल रहे हैं. उस सीनियर आइएसएस अधिकारी के इशारे पर ही प्रेम प्रकाश को जेल में सुविधाएं मुहैया करायी जा रही हैं. वहीं ईडी ने कोर्ट के समक्ष एक तस्वीर भी पेश की है, जिसमें स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है कि प्रेम प्रकाश को जेल के एक अलग वार्ड में रखा गया है, जहां उसकी खिदमत के लिए 3 अन्य बंदी लगाए गए हैं. पिछले दिनों ईडी ने जब जेल में छापेमारी की थी, तो उस दौरान प्रेम प्रकाश के वार्ड नंबर 11 का जो सीसीटीवी फुटेज मिला हैस उसमें यह दिखाई दे रहा है कि प्रेम प्रकाश घंटों जेल के बाहर के लोगों से न सिर्फ मुलाकात करता है, बल्कि खुलेआम जेल में मोबाइल का भी इस्तेमाल करता है. प्रेम प्रकाश जेल के अधिकारियों के साथ मिलकर ईडी के अधिकारियों पर एक महिला से केस करवाने का भी षड्यंत्र रच चुका है और जेल में बंद अपराधियों और उग्रवादियों से ईडी अधिकारियों पर हमले कराने की भी योजना बना रहा था.

खास बातें

- इसके बाद ही विजय हांसदा अपने बयान से मुकर गया
- प्रेम प्रकाश को मिलीं हैं जेल में सारी सुख-सुविधाएं

रैपो रेट यथावत, कम नहीं होगी ईएमआई

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक ने एक बार फिर रेपो रेट को जस का तस रखने का फैसला लिया है. तीन दिवसीय मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक के बाद आरबीआई के गवर्नर शक्तिकांत दास ने बताया कि कमेटी ने एक बार फिर रेपो रेप में कोई बदलाव नहीं करने का फैसला किया है. रेपो रेट फिलहाल 6.5 फीसदी है.

- आरबीआई ने अनुमान लगाया आगे वृद्धि दर 7 फीसदी रहेगी

हालांकि उन्होंने कहा कि अब इस पर केंद्रीय बैंक की पैनी नजर होगी. बैठक में 6 में से 5 सदस्यों ने रेपो रेट स्थिर रखने के फैसले पर सहमति जताई है. आरबीआई गवर्नर ने कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 के लिए सकल घरेलू उत्पाद की ग्रोथ 7 फीसदी रहने का अनुमान है. इससे पहले आरबीआई ने 6.5 फीसदी ग्रोथ रहने का अनुमान लगाया था. उन्होंने कहा कि तीसरी तिमाही में जीडीपी 6.5 फीसदी और चौथी तिमाही में 6 फीसदी की दर से बढ़ेगी. दास ने कहा कि 2024-25 की पहली तिमाही के लिए वास्तविक जीडीपी ग्रोथ 6.7 प्रतिशत, दूसरी तिमाही में 6.5 प्रतिशत और तीसरी तिमाही में 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है.

मुंडा छत्तीसगढ़ व आशा लकड़ा एमपी में पर्यवेक्षक

रांची। भाजपा ने शुक्रवार को एमपी, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में पर्यवेक्षकों के नाम का ऐलान कर दिया है. झारखंड से भी दो नेताओं (अर्जुन मुंडा और आशा लकड़ा) को पर्यवेक्षक बनाया गया है. केंद्रीय कृषि मंत्री और झारखंड के पूर्व सीएम अर्जुन मुंडा, सर्वानंद सेनवाल और दुष्यंत गौतम को छत्तीसगढ़ का पर्यवेक्षक बनाया गया है. वहीं हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर, के लक्ष्मण और रांची की पूर्व मेयर और भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री आशा लकड़ा को मध्य प्रदेश का पर्यवेक्षक बनाया गया है. केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, विनोद तावड़े और सरोज लकड़ा राजस्थान के पर्यवेक्षक बनाये गये हैं. ये पर्यवेक्षक तीनों राज्यों में विधायक दल की बैठक में विधायकों की राय लेंगे. इसके बाद मुख्यमंत्री के नाम का ऐलान किया जाएगा.

▪ भाजपा ने तीन राज्यों के पर्यवेक्षकों का किया ऐलान

दो फैसले पलटे झारखंड हाईकोर्ट ने दिया आदेश, पत्नी को घर ले जाओ, तभी मिलेगी जमानत

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- ऐसी शर्त किसी तरह से उचित नहीं

विधि संवाददाता। रांची

सुप्रीम कोर्ट ने हाल में अपने एक आदेश में कहा है कि आईपीसी (भारती दंड संहिता) की धारा 498ए के तहत आरोपी पति को अग्रिम जमानत देते समय यह शर्त नहीं लगाई जा सकती कि पति अपनी पत्नी को अपने घर ले जाएगा और उसका भरण-पोषण करेगा.

शीर्ष अदालत ने अपने आदेश में कहा कि हमारी राय में अग्रिम जमानत देते समय हाईकोर्ट द्वारा न तो ऐसी शर्त लगाई जानी चाहिए और न ही यह अपीलकर्ता द्वारा दायर याचिका को अस्वीकार करने का आधार हो सकता है. सुप्रीम कोर्ट की न्यायाधीश जस्टिस बेला एम. त्रिवेदी और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की खंडपीठ इस मामले की सुनवाई की. दरअसल घरेलू हिंसा के एक मामले में आरोपी पति ने झारखंड हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी. जिसपर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने पति को जमानत देते हुए यह शर्त लगा दी कि उसे अपनी पत्नी को अपने घर ले जाना होगा और उसे सम्मान के साथ रखना होगा. हाईकोर्ट के इस आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी. सभी पक्षों को सुनने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट द्वारा लगाई गई शर्तों को दरकिनार करते हुए याचिकाकर्ता को रांची सिविल कोर्ट के समक्ष सरेंडर करने का निर्देश देते हुए जमानत की सुविधा प्रदान कर दी. प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता मयंक सापरे और कुमार शिवम ने पक्ष रखा. वहीं राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता मधुस्मिता बोरा और दीपांकर सिंह ने बहस की.

हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में दी चुनौती

दरअसल घरेलू हिंसा के एक मामले में आरोपी पति ने झारखंड हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी. जिसपर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने पति को जमानत देते हुए यह शर्त लगा दी कि उसे अपनी पत्नी को अपने घर ले जाना होगा और उसे सम्मान के साथ रखना होगा. हाईकोर्ट के इस आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गयी थी. सुप्रीम कोर्ट ने फैसला पलट दिया.

'किशोरियों को उपदेश न दें जज'

सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता हाईकोर्ट के उस फैसले की कड़ी आलोचना की, जिसमें किशोरियों को 'अपनी यौन इच्छाओं पर नियंत्रण' रखने की सलाह दी गई थी. शीर्ष अदालत ने हाईकोर्ट की इन टिप्पणियों को आपत्तिजनक बताया. न्यायमूर्ति अभय एस ओका और पंकज मिथल की पीठ ने कहा कि ये टिप्पणियां संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत प्रदत्त किशोरों के अधिकारों का उल्लंघन हैं. पीठ ने मामले में बंगाल सरकार और अन्य पक्षों को नोटिस जारी करते हुए कहा, हमारा मानना है कि जजों से निजी विचार व्यक्त करने या उपदेश देने की अपेक्षा नहीं की जाती. शीर्ष अदालत ने इस मामले में अपनी मदद के लिए अधिवक्ता माधवी दीवान को न्याय मित्र नियुक्त किया. शीर्ष कोर्ट ने कलकत्ता हाईकोर्ट के 18 अक्टूबर, 2023 के उस फैसले का स्वतः संज्ञान लिया, जिसमें टिप्पणी की गई थी कि किशोरियों को अपनी यौन इच्छाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए और दो मिनट के सुख के लिए खुद को समर्पित नहीं करना चाहिए.

मानगो में हुए गैंगवार में जवान समेत दो की मौत

संवाददाता। जमशेदपुर

शहर के आजादनगर थाना अंतर्गत सिटी इन होटल के बाहर गुरुवार रात फायरिंग की घटना के बाद शुक्रवार को भी अपराधियों ने पुलिस को चुनौती देते हुए दिन दहाड़े फायरिंग की. अपराधियों ने मानगो थाना अंतर्गत जवाहरनगर रोड नंबर 17 के पास सज्जाद उर्फ टांडा पर गोलियां बरसाई. इस दौरान सूचना पाकर पहुंचे टाइगर मोबाइल के जवान पर भी अपराधियों ने गोली चला दी. हालांकि, इस बीच स्थानीय लोगों ने एक अपराधी को दबोच लिया और तीन मौके से फरार होने में सफल रहे. घायलों को इलाज के लिए तत्काल टीएमएच ले जाया गया जहां सज्जाद को मृत घोषित कर दिया गया. सज्जाद के सिर पर गोली लगी है. वहीं जवान के छाती में गोली लगी थी. उसकी भी स्थिति गंभीर थी और अस्पताल में इलाज के दौरान जवान की भी मौत हो गई. सूचना पाकर सिटी एसपी टीएमएच पहुंचे और मामले की जानकारी ली. बता दें कि 29 दिसंबर 2021 को सज्जाद के भाई डाबर ने जाकिर नगर रोड नंबर 14 में दानिश की गोली मरवाकर हत्या कर दी थी. वहीं सज्जाद पर सोनारी में गैंगस्टर गणेश सिंह पर बमबारी करने का आरोप लगा था. आशंका जताई जा रही है कि दानिश के मौत का बदला लेने के लिए ही शहजादा की हत्या कराई गई है.

- पेज 6 भी देखें

खास बातें

- एक अपराधी को लोगों ने दबोचा, तीन हो गए फरार
- गैंगस्टर गणेश सिंह पर बमबारी का आरोपी था मृतक सज्जाद

झारखंड में पायलट प्रोजेक्ट के तहत ग्रामीण जलापूर्ति योजनाओं में लगेगी इलेक्ट्रो क्लोरीनेटर मशीन

नल-जल योजना के तहत क्लोरीनेटर मशीन से घर-घर शुद्ध व साफ पानी पहुंचाएगा विभाग

अमित सिंह। रांची

झारखंड में पीने का शुद्ध पानी उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीण जलापूर्ति योजनाओं में एलेक्ट्रो क्लोरिनेटर मशीन लगायी जाएगी. खूंटी स्थित भगवान बिरसा मुंडा के गांव उलिहातू में पहली मशीन इंस्टॉल की गयी है. नागपुर की कंपनी राइट वाटर सॉल्यूशन ने 100 केएलपीएच क्षमता की इलेक्ट्रो क्लोरीनेटर मशीन लगायी है. इस मशीन के सहयोग से रॉ वाटर ट्रिटमेंट किया जाएगा. उसके बाद शुद्ध पानी टंकी में पहुंचेगा. फिर शुद्ध पानी की आपूर्ति टंकी से घर-घर होगी. प्रदेश में हर घर नल जल योजना के तहत 61,69,152 लाख हाउस होल्ड वाटर कनेक्शन देने का लक्ष्य है. 23 लाख घरों तक नल जल योजना का लाभ पहुंचा दिया गया.

शुभम संदेश एक्सक्लूसिव

खास बातें

- प्रदेश में 61,69,152 लाख घरों तक वाटर कनेक्शन देने का लक्ष्य
- 23 लाख घरों को नल जल योजना से लाभान्वित किया जा चुका है
- 4 ,424 गांव के आठ लाख ग्रामिण घरों में नल से जल पहुंचाने का है लक्ष्य

इलेक्ट्रो क्लोरीनेशन मशीन कैसे करती है काम

इलेक्ट्रो-क्लोरीनेटर मशीन पानी में सोडियम क्लोराइड (सामान्य नमक या एनएसीआई) के इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से कीटाणुशोधन के लिए क्लोरीन का उत्पादन करती है. नमक के घोल को 6-12 ग्राम/लीटर की सांद्रता वाले सोडियम हाइपोक्लोराइट में या तो एक बफर टैंक में या फ्लो-थ्रू सिस्टम में परिवर्तित किया जाता है, लगातार हाइपोक्लोराइट का उत्पादन करता है. पानी में मौजूद बैक्टीरिया, टर्बिडिटी सहित अन्य रसायनों का ट्रिटमेंट करता है.

मप्र, छग, बिहार में लगायी जा रही है मशीन

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के मंत्री मिथलेश ठाकुर ने एलेक्ट्रो क्लोरीनेटर मशीन पायलट प्रोजेक्ट के तहत लगाने से संबंधित योजना पर काम करने का निर्देश अफसरों को दिया है. पायलट प्रोजेक्ट के तहत मशीन लगाने की योजना है. उसके बाद संथाल सहित अन्य क्षेत्रों में चल रही ग्रामीण जलापूर्ति योजनाओं में मशीन इंस्टॉल की जाएगी, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को पीने का शुद्ध पानी मिल सके. इलेक्ट्रो क्लोरीनेटर मशीन लगाने की योजना को हर घर नल जल योजना का हिस्सा बनाया जाएगा, ताकि ग्रामीण जलापूर्ति योजनाओं में केंद्र व राज्य के सहयोग से लगाया जा सके. मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार जैसे राज्यों में ग्रामीण जलापूर्ति योजनाओं में पायलट प्रोजेक्ट के तहत इलेक्ट्रो क्लोरीनेटर मशीन लगायी जा रही है.

क्यों जरूरी है ग्राउंड वाटर का ट्रीटमेंट

प्रदेश में चापानल, कुआं या बोरिंग का पानी अब पीने लायक नहीं रहा. भूमिगत जल में रसायनों की मात्रा खतरनाक स्तर पर पहुंच चुकी है. पेयजल एवं स्वच्छता विभाग की राज्यस्तरीय जल जांच प्रयोगशाला की जांच में यह सामने आ चुका है. ग्राउंड वाटर में निर्धारित से कहीं ज्यादा फ्लोराइड, आयरन व टर्बिडिटी (गंदलापन, ने-फ्लो टर्बिडिटी यूनिट) की मात्रा है. इसमें लगातार बढ़ोत्तरी रही है. ऐसे में बिना ट्रीटमेंट के ग्राउंड वाटर (रॉ वाटर) का उपयोग सेहत के लिए हानिकारक है.

80 % आबादी ग्राउंड वाटर के भरोसे

प्रदेश में 80 % आबादी प्रतिदिन निर्धारित मात्रा से ज्यादा फ्लोराइड, आर्सेनिक, आयरन, कॉपर, जिंक व मैग्नीशियम युक्त पानी का सेवन कर रही है. रांची सहित राज के लगभग सभी जिलों के भूगर्भ जल में आयरन की मात्रा जरूरत से ज्यादा पाई गई है. साहिबगंज, दुमका, धनबाद, हजारीबाग, चतरा, बोकारो, गढ़वा व सिमडेगा में पानी में फ्लोराइड व आर्सेनिक की मात्रा अधिकतम पाई गई है.

योजनाओं में वाटर ट्रीटमेंट का प्रावधान नहीं

प्रदेश में ग्रामीण जलापूर्ति योजना के तहत जहां पर सरफेस वाटर (जैसे कोई जलाशय, नदी, तालाब या पोखर) हो, या फिर जहां सरफेस वाटर की व्यवस्था नहीं है, वहां बोरिंग कर सोलर प्लेट बेस्ड ओवरहेड टैंक बनाकर और पाइप बिछाकर हर घर तक नल से जल पहुंचाना लक्ष्य है. विभाग ने बिना जल शुद्धिकरण का प्रावधान किए ही ग्रामीण जलापूर्ति योजनाओं का क्रियान्यवन शुरू कर दिया. ऐसे में ज्यादातर घरों में वाटर कनेक्शन से स्वच्छ पीने का पानी नहीं पहुंचेगा.

सरकार की प्राथमिकता जनता को शुद्ध पीने का पानी मिले

सरकार की प्राथमिकता है कि जनता को शुद्ध पीने का पानी मिले. ग्राउंड वाटर दूषित भी हो रहा है. ऐसे में लोगों के घरों तक शुद्ध पानी पहुंचे, इसके लिए वाटर ट्रीटमेंट निहायत जरूरी है. पायलट प्रोजेक्ट के तहत जलापूर्ति योजनाओं में प्रारंभिक स्तर पर इलेक्ट्रो क्लोरीनेटर मशीन लगाने पर विचार किया गया है. मशीन की तकनीकी परख की जा रही है, ड्यूरेबिलिटी देखने के बाद इस पर आगे का काम किया जाएगा. सबकुछ ठीक रहा, तो मशीन लगाई जाएगी, ताकि लोगों को शुद्ध पानी मिले. - **मिथलेश ठाकुर**, मंत्री, पेयजल विभाग

ब्रीफ खबरें

झासा के पदाधिकारियों ने सीएस से मुलाकात की

रांची। झारखंड प्रशासनिक सेवा संघ की अध्यक्ष रंजीता हेम्ब्रम और महासचिव राहुल कुमार ने शुक्रवार को प्रोजेक्ट भवन में राज्य के मुख्य सचिव से मुलाकात की. बताया गया कि यह एक शिष्टाचार भेट थी. इसमें प्रीमियर सर्विस, चाइल्ड केयर लीव, डीपीसी की बैठक, समयबद्ध प्रमोशन और प्रोन्नत पदाधिकारी के पद को उत्क्रमित करने की परिपाटी को समाप्त करना जैसे मुद्दे पर चर्चा हुई.

रजरप्पा में मां के दरबार में मत्था टेकेंगे चिराग

रांची। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान शनिवार को रांची पहुंचेंगे. यहां से मां छिन्मस्तिका के दरबार में मत्था टेकने देखने लिए रजरप्पा जाएंगे. पुनः रांची लौट कर चिराग दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगे. राष्ट्रीय अध्यक्ष के आगमन को देखते हुए लोक जनशक्ति पार्टी रांची जिले के पदाधिकारी की बैठक लाइन टैंक रोड स्थित कार्यालय में हुई. इस दौरान जिला अध्यक्ष दिनेश सोनी ने कहा कि एयरपोर्ट पर राष्ट्रीय अध्यक्ष का भव्य स्वागत किया जाएगा.

सरयू ने डीजीपी व गृह विभाग को लिखा पत्र

रांची। विधायक सरयू राय ने झारखंड के डीजीपी और गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव को पत्र लिखा है. उन्होंने कहा है कि 6 दिसंबर को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के जमशेदपुर दौरे के समय भाजयुमो के जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष अमित शर्मा को दिन भर बिरसानगर थाने में हिरासत में रखा गया था. सरयू राय ने कहा कि अमित ने 4 दिसंबर को बर्मामाइंस थाना प्रभारी को क्षेत्र में चलने वाले अवैध स्क्रैप के टाल की जानकारी देकर दोषियों पर कार्रवाई की मांग की थी.

पंकज मिश्रा फिर से रिम्स में हुए भर्ती

रांची। अवैध खनन मामले में आरोपी पंकज मिश्रा को फिर से रिम्स में भर्ती कराया गया है. शुक्रवार को फिर से यूरिनल इंफेक्शन की शिकायत के साथ सर्जरी के डॉ विनय प्रताप के देखरेख में भर्ती किया गया है. उन्हें रिम्स के पेइंग वार्ड के कमरा ए-14 में भर्ती किया गया है. चिकित्सकों के अनुसार वर्तमान में प्रारंभिक जांच की जा रही है. जांच के सभी रिपोर्ट आने के बाद ही कुछ स्पष्ट कहा जा सकेगा.

हाईकोर्ट में हाजिर हुए बाल विकास सचिव झा

रांची। महिला एवं बाल विकास विभाग के सचिव कृपानंद झा शुक्रवार को झारखंड हाईकोर्ट में उपस्थित हुए. उन्होंने कोर्ट को यह जानकारी दी कि राज्य के छह जिलों के सीडब्ल्यूसी में अध्यक्ष के रिक्त पदों पर दो सप्ताह में नियुक्ति प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी. दुमका, हजारीबाग, कोडरमा, लोहरदगा, साहिबगंज, सिमडेगा को छोड़ सभी जिलों में सीडब्ल्यूसी काम कर रही है. उन्होंने बताया कि रांची और जमशेदपुर में एक-एक अतिरिक्त जेजे बोर्ड के गठन के लिए कैबिनेट ने स्वीकृति दे दी है.

मिशन 2024 : नहीं दिख रहीं झामुमो-कांग्रेस की गतिविधियां

फील्ड से लेकर मीडिया, सोशल प्लेटफॉर्म में भाजपा काफी एक्टिव

सत्य शरण मिश्रा। रांची

मिशन 2024... लोकसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों ने राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर अपनी तैयारी तेज कर दी है. झारखंड में भी 14 लोकसभा सीटों के लिए भाजपा ने अपनी रणनीति तैयार कर ली है, लेकिन इंडिया क्या कर रहा है, इसका कुछ पता नहीं चल पा रहा है. झारखंड में इंडिया एक्टिव हुआ भी है या नहीं, काम कर रहा है या नहीं, इसे लेकर ऊहापोह की स्थिति बनी हुई है. कांग्रेस-झामुमो अपनी ढफली बजाते हुए अपना राग आलाप रहे हैं. यहां राजद का कोई पता ठिकाना नहीं है. आजसू एक्टिव है और कार्यक्रम भी कर रहा है. झारखंड में संगठन को मजबूत बनाने के लिए कार्यक्रमों और बैठकों का दौर जारी है, लेकिन सिर्फ भाजपा को छोड़कर किसी दूसरे दल की सक्रियता मीडिया, सोशल मीडिया और फिल्ड में नहीं दिख रही है. या यों कहिए जिस ढंग से भाजपा तैयारी में जुटी है, उसके मुकाबले दूसरी पार्टियां कहीं दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही हैं.

कांग्रेस पार्टी झामुमो से थोड़ा ज्यादा एक्टिव : सरकार की सहयोगी राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस, झामुमो से थोड़ी ज्यादा एक्टिव जरूर नजर आती है. कांग्रेस के मंत्रियों ने जनसुनवाई कर जनता से जुड़ने की कोशशि की, लेकिन लोगों का कितना जुड़ाव पार्टी से हुआ, उनकी समस्याएं दूर हुईं या नहीं, इसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं हैं. पार्टी के पास शायद ही ऐसा कोई डेटा हो कि जनसनुवाई में कितने लोग आए और कितनों की समस्या दूर हुई. वैसे इसके अलावा कांग्रेस का कोई बड़ा कार्यक्रम नजर नहीं आ रहा, जिससे जनते उसके नाम पर गंभीरता से विचार कर सके. हां, एक बात जरूर है कि कांग्रेस के मंत्रियों और विधायकों के सोशल मीडिया प्रोफाइल एक्टिव हैं और उनमें पार्टी के कार्यक्रम दिख रहे हैं, लेकिन अखबारों में कांग्रेस नेताओं के नियमित रूप से बयान नहीं दिखते. सिर्फ प्रदेश स्तर पर महीने होने वाली 2-4 बैठकों के अलावा कोई खास गतिविधियां नहीं दिखतीं.

भाजपा के सभी सांसद-विधायक सोशल मीडिया पर ज्यादा एक्टिव

भाजपा हर रोज पंचायत, प्रखंड, जिला से लेकर राज्य स्तर पर दर्जनों बैठकें कर रणनीति तैयार कर रही है. भाजपा के युवा से लेकर महिला, एसटी-एससी मोर्चा सहित अन्य मोर्चे भी सक्रिय हैं. भाजपा लहातार राज्य सरकार पर हमले भी कर रही है. उसके कार्यक्रम और बैठक अखबारों और सोशल मीडिया में दिख रहे हैं. झारखंड में भाजपा के सभी 12 सांसद, 25 विधायक, प्रदेश पदाधिकारी और कार्यकर्ता सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं. सोशल मीडिया पर भी भाजपा नेताओं की हर दिन की गतिविधियां दिख रही हैं. अखबारों के लोकल एडिशन में भी उनकी खबरें प्रमुखता से छप रही हैं, लेकिन झामुमो-कांग्रेस, राजद जैसी पार्टियों की वैसी सक्रियता नहीं दिख रही है.

झामुमो के कार्यक्रम कहीं नजर नहीं आते

झारखंड में झामुमो और कांग्रेस का भी दावा है कि उनका संगठन 2024 के लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट गया है. पार्टी एक्टिव भी है. झामुमो ने हाल ही में सांगठनिक फेरबदल भी की है. पार्टी सदस्यता अभियान भी चला रही है, लेकिन पार्टी के कार्यक्रमों की खबर न तो सोशल मीडिया पर कहीं नजर आती न और अखबारों में दिख रही है. हां, अलबत्ता झामुमो के एकमात्र नेता सुप्रियो भट्टाचार्य सरकार का बचाव करते और विपक्ष खासकर भाजपा पर जमकर हमले बोलते नजर आते हैं. उनके बयान मीडिया में दिखते हैं, जबकि सबसे अधिक 30 विधायकों वाली इस पार्टी के अधिकांश विधायकों का सोशल मीडिया प्रोफाइल एक्टिव ही नहीं है. झामुमो के मंत्रियों के भी फेसबुक-ट्विटर में जयंती और श्रद्धांजलि वाले पोस्ट और ट्वीट से ज्यादा कुछ नहीं दिखता.

कारगिल योद्धा हृदयनाथ और डॉ संजय सिंह कल कांग्रेस में शामिल होंगे

रांची। प्रदेश कांग्रेस का कार्यक्रम आ अब लौट चलें अभियान के तहत 10 दिसंबर को राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसर डॉ संजय सिंह और कारगिल के योद्धा हृदयनाथ यादव कांग्रेस में शामिल होंगे. ये प्रदेश कांग्रेस प्रभारी अविनाश पांडेय व प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर के समक्ष शामिल होंगे. ये दोनों राहुल गांधी के भारत जोड़ो यात्रा के संदेश से प्रभावित होकर कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं. यह जानकारी देते हुए प्रदेश कांग्रेस महासचिव एवं प्रवक्ता राकेश सिन्हा ने बताया कि लगातार राजनीतिक दल, सामाजिक कार्यकर्ताओं का संपर्क कांग्रेस की सदस्यता लेने के लिए किया जा रहा है.

पंचायतों के लिए 6 साल में केंद्र ने दिए 7123 करोड़

रांची। झारखंड के पंचायतों के विकास के लिए केंद्र सरकार ने पिछले 6 वर्षों में झारखंड को 7123 करोड़ रुपये दिये गये हैं. 14वें और 15वें वित्त आयोग के तहत 7071 करोड़ रुपये दिये गये हैं. वहीं पिछले 5 सालों में ग्राम स्वराज अभियान के तहत 45 करोड़, पंचायत प्रोत्साहनीकरण योजना के तहत 7 करोड़ रुपये मिले हैं. लोकसभा में रांची के सांसद संजय सेठ के पूछे गये सवाल पर केंद्रीय पंचायती राज राज्यमंत्री कपिल पाटिल ने यह जानकारी दी. केंद्रीय मंत्री ने बताया कि 2018-19 से 2023-24 तक 14वें और 15वें वित्त आयोग के तहत पंचायत के विकास के लिए विभिन्न राज्यों को बड़े पैमाने पर राशि जारी की गई है, जिसमें झारखंड को 7000 करोड रुपये से अधिक की राशि जारी हुई है.

आपकी बात

"बैंक में नौकरी की. अब गरीब छात्रों को सहयोग करती हैं. पेंशन की आधी रकम को गरीब बच्चों पर खर्च करती हैं"

नाम : सोनाली मुंडा
पेशा : शिक्षा
विशेषज्ञ : सामाजिक कार्यकर्ता
निवास : मोरहाबादी, रांची

सोनाली मुंडा की पहचान पूरे झारखंड में सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में होती है. जरूरतमंदों की सेवा और उनका कल्याण ही उनके जीवन का ध्येय है. उन्होंने रांची विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र विषय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की. इसके बाद समाज सेवा से जुड़ गयीं. बैंक में 15 साल तक नौकरी भी की. इसके बाद गरीब विद्यार्थियों को सहयोग करती हैं. पेंशन की आधी रकम को गरीब बच्चों के बीच में बांटने का काम करती हैं. खासकर स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के लिए किताब, कॉपी, पेन देकर सहयोग करती हैं. सामाजिक कार्यकर्ता सोनाली मुंडा ने बताया कि गैर आदिवासी समाज के कार्यक्रम में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हूं. आर्थिक रूप से सहयोग भी करती हूं. अपने माता-पिता से प्रेरणा लेकर समाज की हर तबके के लोगों के साथ में कदम मिलाकर चलने का प्रयास कर रही हूं. सभी के साथ में समन्वय स्थापित करना अब पेशा बन चुका है. शादी ब्याह में लगने का खर्च भी पेंशन के आधी रकम को वहन करती हूं. इसके लिए पति का हमेशा सहयोग मिलता है. उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को आर्थिक मदद करती है. वर्तमान में 4 गरीब बच्चों को रांची के डॉन बास्को स्कूल में पढ़ा रही है. इसकी स्कूल फी भी जमा कर रही हैं.

जदयू का दायरा बढ़ाएंगे नीतीश कुरमी बहुल क्षेत्र रहेगा फोकस

विशेष संवाददाता। रांची

बिहार के सीएम और जदयू नेता नीतीश कुमार अपनी पार्टी का दायरा बढ़ाने की कवायद में जुट गए हैं. इसी कवायद के तहत वे झारखंड आ रहे हैं. एक अरसे बाद वे पार्टी के कार्यक्रम के तहत झारखंड आ रहे हैं. दरअसल इसके पीछे उनका हिडेन एजेंडा लोकसभा और विधानसभा चुनाव भी है. नीतीश कुमार झारखंड के अलावे उत्तर प्रदेश में भी पार्टी का कैंडिडेट उतारना चाहते हैं. पार्टी से मिली जानकारी के अनुसार इसी अभियान के तहत वे अपना चुनावी दौरा शुरू करेंगे. इसके तहत वे 21 दिसंबर को रामगढ़ आ रहे हैं. दरअसल रामगढ़ का चयन भी एक रणनीति का हिस्सा है. रामगढ़, हजारीबाग, गिरिडीह आदि जिले महतो बहुल हैं. उनकी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद खीरू महतो भी कुरमी समाज से आते हैं. इसलिए महतो बहुल क्षेत्र को टारगेट करते हुए रामगढ़ को चुना गया है. वे अपनी पार्टी से महतो, खासकर कुरमी वोटर को अपने पक्ष में करना चाहते हैं.

नीतीश कुमार के रामगढ़ आगमन की तैयारी जोरों पर : बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 21 जनवरी को झारखंड के रामगढ़ आ रहे हैं. इसको लेकर प्रदेश इकाई ने तैयारी शुरू कर दी है.

यूपी का भी होगा दौरा, फूलपुर लोस से उतार सकते हैं प्रत्याशी

नीतीश कुमार उत्तर प्रदेश में भी पार्टी का लाना चाहते हैं. मिली जानकारी के अनुसार यूपी का फूलपुर लोकसभा क्षेत्र से पार्टी चुनाव लड़ सकती है. यूपी प्रदेश इकाई ने इससे पहले नीतीश कुमार को इस सीट से चुनाव लड़ने का आग्रह कर चुका है. पार्टी इकाई ने नीतीश कुमार से यूपी में चुनाव लड़ने के साथ-साथ रैली करने की भी मांग की थी.

स्कॉलरशिप हेल्पलाइन शुरू 48 घंटे में होगा समाधान

विशेष संवाददाता। रांची

छात्रवृति का लाभ लेने वालों स्टुडेंट्स की समस्याओं के समाधान के लिए विभाग ने नयी पहल की है. आदिवासी कल्याण आयुक्त कार्यालय मोहराबादी में स्कॉलरशिप हेल्पलाइन शुरू की गयी है. इस हेल्पलाइन के माध्यम से 48 घंटे के अंदर छात्रों की समस्याओं का समाधान किया जाएगा. इसका लाभ प्री और पोस्ट मैट्रिक छात्रवृति का लाभ उठाने छात्र-छात्राओं को मिलेगा.

इन नंबरों पर कर सकते हैं शिकायत : छात्रवृति का लाभ लेने वाले छात्र-छात्राएं टोल फ्री नंबर 1800-599-1289 पर सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक कॉल कर सकते हैं. हैं.

व्हाट्सप्प नंबर 9440256299 चौबीस घंटे चालू रहेगा. इसके माध्यम से छात्रों की समस्या ऑनलाइन फॉर्म के माध्यम से पंजीकृत किया जाएगा. इसके अतिरिक्त एक्स (पूर्व में ट्विटर) अकाउंट @<TWC_Office_Jhar. पर भी छात्र अपनी समस्या और शिकायत दर्ज करा सकते हैं. इस नयी व्यवस्था के तहत छात्र अपनी समस्या के समय से समाधान के लिए अपनी छात्रवृति आवेदन संख्या, पूरा नाम, अकादमिक वर्ष, मोबाइल नंबर, एवं जिले के साथ अपनी समस्या का विवरण देंगे.

सड़क से सदन तक आंदोलन करेगी भाजपा

धीरज साहू पर एफआईआर कर जल्द हो गिरफ्तारी, खुलेंगे राज : बाबूलाल

संवाददाता। रांची

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा है कि राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों से मिले 300 करोड़ रुपये में कांग्रेस और इंडी गठबंधन के नेताओं का भी हिस्सा है. कांग्रेस और इंडी गठबंधन में शामिल दलों का करप्शन से पुराना रिश्ता रहा है. उन्होंने कहा कि राज्य में बीते दिनों ईडी की छापेमारी के दौरान भारी मात्रा में कैश बरामद हुए थे. उस समय ईडी के डर से भ्रष्टाचार के पैसों विभिन्न राज्यों में हस्तांतरित कर दिया गया था. संभवतः वही पैसे अब

बरामद हुए हैं. ये एक बहुत बड़ा स्कैम है. इस मामले में बिना देरी किये धीरज साहू पर एफआईआर होना चाहिए और उन्हें गिरफ्तार कर कड़ाई से पूछताछ करनी चाहिए. तभी यह सामने आयेगा की 300 करोड़ में किसके-किसके पैसे हैं. बाबूलाल मरांडी प्रदेश भाजपा मुख्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रहे थे.

बाबूलाल मरांडी ने कहा कि इंडी गठबंधन के नेताओं की ओर से बार-बार कहा जाता है कि भाजपा ने उनके पीछे ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग को लगा रखा है. अब सब साफ हो रहा है कि आखिर विपक्ष के लोग क्यों डर रहे हैं. पीएम मोदी ने कह दिया है कि एक भी भ्रष्टाचारी नहीं छोड़ा जाएगा. यह मोदी की गारंटी है. बाबूलाल ने कहा कि इस मामले को लेकर भाजपा सड़क से सदन तक आवाज बुलंद करेगा. झारखंड में पार्टी की ओर आंदोलन किया जाएगा. बैठक कर आंदोलन की रणनीति बनाई जाएगी.

चिंतनीय 44500 हेक्टेयर वन भूमि पर से अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाने का निर्देश

राज्य में घना जंगल घटा, वन भूमि पर अतिक्रमण बढ़ा

रवि भारती। रांची

झारखंड में एक तरफ घने जंगल घटते जा रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ वन भूमि का अतिक्रमण भी होता जा रहा है. अब वन विभाग वन भूमि को अतिक्रमण मुक्त करने के लिए विशेष अभियान चलाएगा. इसके लिए सभी वन प्रमंडल के डीएफओ को निर्देश दिया गया है. फिलहाल राज्य में 44,500 हेक्टेयर वन भूमि पर अतिक्रमण है. सबसे अधिक पौड़ैयाहाट में 25206 हेक्टेयर वन भूमि पर अतिक्रमण है. वहीं दूसरे नंबर पर सारंडा वन प्रमंडल में 5,827 हेक्टेयर वन भूमि अतिक्रमित है. अब तक राज्य में 2006 हेक्टेयर वन भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया जा चुका है.

- वन विभाग वन को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए चलाएगा अभियान
- सबसे अधिक पोड़ैयैहाट और सारंडा वन क्षेत्र की भूमि है अतिक्रमित
- 2006 हेक्टेयर वन भूमि को अब तक कराया जा चुका है अतिक्रमण मुक्त

23,611 वर्ग किलोमीटर में है वन क्षेत्र

झारखंड में फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक 23611 वर्ग किलोमीटर में वन क्षेत्र है, जिसमें घने जंगल में दो वर्ग किलोमीटर की कमी आई है.

किस वन प्रमंडल में कितनी वन भूमि है अतिक्रमित

(हेक्टेयर में)

वन प्रमंडल	अतिक्रमित वन भूमि
रांची, खूंटी, गुमला, सिमडेगा	6,863
रामगढ़, बोकारो, धनबाद	1,371
लातेहार, चतरा, हजारीबाग	2,635
दुमका, जातमाड़ा, पोड़ैयाहाट	25,358
गढ़वा, पीटीआर	213
चाईबासा, सारंडा, धालधूम	6,490
लोहरदगा, कोडरमा, गोड्डा	1,501

खनन कंपनियों ने नहीं किया आदेश का पालन

झारखंड में सबसे अधिक खनन कंपनियों ने वन भूमि का अतिक्रमण किया है. राज्य सरकार ने पोड़ैयाहाट, कोल्हान और सारंडा क्षेत्र में खनन कंपनियों को ड्राफ्ट तैयार करने का निर्देश दिया था. इसके लिए एक कमेटी भी बनी थी, लेकिन आज तक इसका प्रारूप तैयार नहीं हो पाया है. राज्य सरकार ने खनन कंपनियों को निर्देश दिया था कि इन जंगल क्षेत्रों में जानवरों के साथ कई पेड़-पौधों की भी प्रजातियां भी हैं. इसे देखते हुए जरूरत के हिसाब से खनिज निकाला जाए. लेकिन इसके विपरित खनन कंपनियां अधिक से अधिक वन भूमि पर खनन करने लगीं.

हाईकोर्ट ने पूछा- सिख दंगा पीड़ितों को कितना मुआवजा दिया गया

संवाददाता। रांची

झारखंड हाईकोर्ट में शुक्रवार को 1984 में हुए सिख दंगा के पीड़ितों को मुआवजा दिलाने एवं दंगे से संबंधित क्रिमिनल केस की मॉनिटरिंग किये जाने की मांग को लेकर दायर जनहित याचिका पर सुनवाई हुई. इस दौरान मुआवजा भुगतान को लेकर हाईकोर्ट द्वारा 15 सितंबर को दिये गये आदेश के मामले में राज्य सरकार की ओर से स्टेटस रिपोर्ट दाखिल नहीं किये जाने पर अदालत ने नाराजगी जाहिर की. इसके बाद चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की बेंच ने राज्य सरकार को तीन दिनों के अंदर स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया. साथ ही अदालत ने सरकार से पूछा कि सिख दंगा के पीड़ितों को किन-किन जिलों में कितना मुआवजा दिया गया है. कोर्ट ने सरकार से यह भी पूछा है कि कैबिनेट के अप्रूवल के बाद भी बोकारो जिला को एक करोड़ 20 लाख की राशि क्यों नहीं आवंटित की गयी.

- हाईकोर्ट ने झारखंड सरकार से इस संबंध में पूछे हैं सवाल

राज्यभर की खबरों के लिए स्कैन करें

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in | शनिवार, 09 दिसंबर 2023 ● मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 12, संवत 2080 ● पृष्ठ : 16, मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 1, अंक : 231 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 5 मात्र

ब्रीफ खबरें

राज्यपाल बने सूबे के वोटर, सीएस ने भेंट की

रांची। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से शुक्रवार को राज्य के नए मुख्य सचिव एल खियांगते राजभवन में मुलाकात की. यह शिष्टाचार मुलाकात थी. वहीं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने राज भवन में भेंट की. उन्होंने राज्यपाल को राज्य में लोकसभा चुनाव 2024 के लिए चल रहे मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी. राज्यपाल ने झारखंड राज्य के मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज कराया.

धनबाद जेल में नहीं हुई परिजनों की मुलाकाती

धनबाद। जेल में बंद गैंगस्टर अमन सिंह की हत्या के पांच दिनों बाद शुक्रवार को भी मुलाकाती पर रोक लगी रही है. जेल में बंद बंदियों से उनके परिजनों से होने वाली मुलाकात नहीं हो सकी. मुलाकाती के लिए जेल गेट गए परिजन मायूस होकर लौट गए. बता दें कि रविवार को दिन में जेल के अंदर ही अमन सिंह की गोलियों से हुई हत्या के बाद से जेल प्रशासन कड़ाई बरते हुए हैं.

बेर तोड़ने के क्रम में खंता में गिरा बच्चा, मौत

गिरिडीह। बनियाडीह पहाड़ी के समीप बैर तोड़ने गए 10 साल के बच्चे करण भुइयां की अवैध कोयला खंता में गिरने से मौत हो गई. कोयला तस्करों ने अवैध खनन के लिए वहां मुहाना बनाया था. करण पेशरा बहियार का रहने वाला था. सीसीएल के जीएम बशाक चौधरी, पीओ और थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे और मामले की जानकारी ली. मशक्कत के बाद खंता से शव निकाला गया.

कसमार में 65 रैयतों की आपत्ति का हुआ समाधान

बोकारो। बरलंगा से कसमार वाया नेमरा पथ निर्माण को लेकर हिसीम पंचायत के खुदीबेडा मौजा के रैयतों की बैठक जिला भू अर्जन कार्यालय, सड़क निर्माण एजेंसी के अधिकारी शामिल हुए. बैठक में जमीन अधिग्रहण को लेकर चर्चा करते हुए रैयतों ने आपत्ति जतायी. इस दौरान खुदीबेड़ा के 65 रैयतों ने जमीन की जानकारी अमीन को दी. प्रक्रिया पूरी होने के बाद मुआवजा नोटिस का वितरण किया जाएगा.

जेपीएससी बैकलॉग परीक्षा 21 जनवरी को

रांची। जेपीएससी ने संयुक्त असैनिक सेवा प्रारंभिक प्रतियोगिता परीक्षा की तिथि की घोषणा कर दी है. यह बैकलॉग परीक्षा है. इसके लिए 2017 में विज्ञापन निकाला गया था. इसका विज्ञापन संख्या 27/2017 है. परीक्षा 21 जनवरी 2024 को दो पालियों में ली जाएगी. पहली पाली की परीक्षा 10 से 12 बजे तक चलेगी होगी. वहीं दूसरी पाली की परीक्षा 2 से 4 बजे तक चलेगी. जेपीएससी की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर आप 9 जनवरी से अपना एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं.

स्कूल वैन दुर्घटनाग्रस्त, बच्ची-चालक की मौत, 9 रिम्स रेफर

संवाददाता। हजारीबाग

जिले के कटकमसांडी थाना क्षेत्र अंतर्गत रेलवे स्लाइडिंग के पास सारथी बस (हजारीबाग से चतरा चलने वाली) ने स्कूल वैन को ठोक दिया. वहीं चालक की मौके पर ही मौत हो गयी. जबकि एक बच्ची की मौत इलाज के दौरान हो गयी. सभी बच्चे छड़वा डैम स्थित संत एगस्टिन स्कूल के बताए गए हैं.

घटना में चतरा जिले के नोनगांव निवासी स्कूल वैन के चालक रामप्रवेश यादव पिता लालू यादव (25 वर्ष) की घटनास्थल पर ही मौत हो गई. 15 बच्चे घायल हो गए. गंभीर रूप से घायल चतरा जिले के नोनगांव निवासी बच्ची शिवानी कुमारी, पिता कैलाश प्रजापति का भी इलाज के दौरान मौत हो गयी. गंभीर रूप से घायल अंशु कुमारी सहित 9 बच्चों को रिम्स रेफर किया गया है. जबकि पीयूष कुमार व राहुल कुमार पिता दिनेश्वर साव, मद्धेश्वर कुमार पिता रामसेवक प्रसाद,रानी कुमारी पिता आफताब आलम सहित अन्य दो बच्चे का शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में इलाज चल रहा है.

ब्लैक फ्राइडे

स्थानीय लोगों ने बच्चों को अस्पताल में कराया भर्ती

स्थानीय लोगों ने ही सभी बच्चों को अलग-अलग गाड़ी से कटकमसांडी अस्पताल ले गये, जहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने सभी को शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया. कुछ बच्चों को उनके अभिभावकों ने बेहतर इलाज के लिए दूसरे अस्पताल में भर्ती कराया हैं. वहीं कुछ बच्चों का इलाज शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में ही चल रहा है.

रेलवे स्लाइडिंग के पास हाइवा खड़ा रहने से होता है हादसा

प्रत्यक्षदर्शी रोशन कुमार पांडे में बताया कि रेलवे स्लाइडिंग के पास भारी संख्या में हाइवा खड़ी रहती है. जिस कारण दूसरी ओर से आ रही गाड़ी को लोग देख भी नहीं पाते हैं. स्कूल वैन बच्चों को लेकर हजारीबाग आ रही थी. मोड के पास स्कूल वैन की हजारीबाग की ओर से आ रही बस से टकरा गयी. टक्कर इतनी जोरदार थी कि स्कूल वैन के परखच्चे उड़ गये. आसपास के लोगों ने मदद के लिए बच्चों को गोद में उठाकर अपनी गाड़ी से अस्पताल पहुंचाया. वहां से स्थानीय और अस्पताल प्रबंधन की मदद से घायल बच्चों मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया.

हमारी सरकार बनने के घंटे भर बाद से ही विपक्ष हर रोज कर रहा गिराने की कोशिश : सीएम

हम डरनेवाले लोग नहीं

प्रमुख संवाददाता। गोड्डा

सीएम ने गोड्डावासियों को दी 441.06 करोड़ की 217 योजनाओं की सौगात

सीएम बोले

- केंद्र को पता है कि हमारे पास पैसे नहीं हैं, फिर भी रोक दिया पीएम आवास योजना का पैसा
- इतने सालों बाद विपक्ष को आई भगवान बिरसा मुंडा की याद
- डबल इंजन की सरकार ने सरकारी कर्मचारियों को अपनी सेवा में लगा लिया था

6.96 करोड़ की 2 योजनाओं का उद्घाटन

- 133 करोड़ रुपये की 215 योजनाओं की रखी गई आधारशिला
- 181303 लाभुकों के बीच 300.96 करोड़ की परिसंपत्तियों का वितरण

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गोड्डा के मुंदर कोठी स्टेडियम में आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम में एक बार फिर केंद्र सरकार पर हमला किया. कहा कि केंद्र को पता है कि हमारे पास पैसा नहीं है, लेकिन फिर भी उसने पीएम आवास का फंड रोक दिया. फिर भी हम गरीबों को आवास जरूर उपलब्ध कराएंगे.

उन्होंने यह भी कहा, इतने सालों बाद केंद्र सरकार को आदिवासियों और भगवान बिरसा मुंडा की याद आई है. इससे पहले आदिवासियों की याद नहीं आयी. 2019 में जब हमने सरकार बनाई तो एक घंटे के बाद से वे सरकार गिरा रहे हैं और हर दिन मुख्यमंत्री बदल रहे हैं. लेकिन हम डरने वाले लोग नहीं हैं. हम अपना काम करते रहेंगे. मेरे रहते झारखंडियों का कोई अहित नहीं होने पाएगा. सीएम ने कहा कि 20 सालों में विपक्ष ने राज्य को दिशा नहीं दी, बल्कि इसे खोखला करते रहे. डबल इंजन सरकार ने सरकारी कर्मियों को जनता की सेवा में नहीं बल्कि अपनी सेवा में लगा दिया. यही वजह है कि आज आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार शिविरों में समस्याओं के लाखों आवेदन आ रहे हैं.

यदि अधिक आवास की जरूरत हुई तो वो भी देंगे

सीएम ने कहा कि केंद्र ने 2022 तक सभी गरीबों को आवास देने की बात कही थी. केंद्र सरकार को मालूम है कि इस राज्य में गरीबों की संख्या अधिक है. हमारी सरकार ने गरीबों को आवास उपलब्ध कराने के लिए कई बार केंद्र सरकार से समन्वय बनाने का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने हमारी बात को अनसुना कर दिया. अब राज्य सरकार ने अपने दम पर 8 लाख गरीब परिवारों को आवास देने का लक्ष्य तय किया है. इसी के तहत अबुआ आवास योजना लागू की गई है. अगर 8 लाख से अधिक आवास की जरूरत हुई, तो चरणबद्ध तरीके से आवास दिलाएंगे.

दलालों के चंगुल में फंसे रहते थे लोग

सीएम ने कहा कि हमारी सरकार ने राज्य के बुजुर्गों, दिव्यांगों, विधवा माताओं-बहनों सहित सभी जरूरतमंदों के प्रति संवेदना दिखाते हुए राज्य में सर्वजन पेंशन योजना लागू की. सर्वजन पेंशन योजना लागू करने वाला झारखंड देश का पहला राज्य है. इससे पहले पूर्ववर्ती सरकारों ने इन सभी जरूरतमंदों के पेंशन के लिए दलालों के चक्कर में फंसने पर मजबूर कर दिया था.

खराब काम करने वाले संवेदक को ब्लैकलिस्ट करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोड्डा जिले में करीब 800 किलोमीटर सड़क का निर्माण हो रहा है. उन्हें सूचना मिली कि सड़क निर्माण में गुणवत्ता से समझौता किया जा रहा है. सीएम ने निर्देश दिया कि जिला प्रशासन इसपर नजर रखे. खराब कार्य करने वाले संवेदकों को ब्लैकलिस्ट करें.

पढ़ाई से कोई बच्ची वंचित नहीं रहेगी

सीएम ने कहा कि सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना से राज्य की 8 लाख बच्चियों को योजना से जोड़ा गया है. परिवार की दो बेटियों को योजना का लाभ देने की बाध्यता समाप्त कर दी गई है. परिवार की सभी बेटियों को योजना का लाभ मिलेगा. पढ़ाई से कोई भी बच्ची वंचित न रहे इसके लिए सरकार संकल्पित है.

सौगातों की बारिश

सीएम ने इस मौके पर 441.06 करोड़ रुपए की 217 योजना की सौगात गोड्डा वासियों को दी. इसमें 6 करोड़ 96 लाख रुपए की 02 योजनाओं का उद्घाटन और 133 करोड़ 34 लाख रुपए की 215 योजनाओं आधारशिला रखी. मुख्यमंत्री ने विभिन्न योजनाओं के 181303 लाभुकों को सशक्त और स्वावलंबी बनाने के लिए उनके बीच लगभग 300 करोड़ 96 लाख रुपए की परिसंपत्तियां बांटीं.

सीएम के आदेश पर गोड्डा समाज कल्याण पदाधिकारी निलंबित

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के आदेश के बाद गोड्डा के जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अनीशा कुजूर को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है. उनपर सावित्री बाई फुले किशोर समृद्धि योजना में लापरवाही बरतने का आरोप है. सीएम शुक्रवार को गोड्डा में आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम के दौरान शिविर में मौजूद बच्चों से संवाद कर रहे थे. इसी दौरान कुछ बच्चियों ने शिकायत की कि उन्हें सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ नहीं मिल रहा है. इसके बाद सीएम ने पदाधिकारी को निलंबित करने का आदेश दिया. कहा कि बेटियों को मिलने वाले अधिकार से कोई समझौता नहीं होगा.

- **किशोरी समृद्धि योजना में कर रहे थे लापरवाही, छात्राओं ने की थी सीएम हेमंत सोरेन से शिकायत**

पुलिस अनुसंधान जारी है...

विशेष संवाददाता। रांची

हजारीबाग जिले के मोरांगी स्थित मेसर्स हजारीबाग राइस मिल के मालिक विजय सिंह पर 2 जनवरी 2023 को प्राथमिकी दर्ज हुई थी. मुफ्फसिल थाने में आईपीसी की धारा 403, 406 एव 420 के तहत मामला दर्ज हुआ था. 11 माह बीत जाने के बाद भी पुलिस अनुसंधान जारी है. अनुसंधान कबतक पूरा हो पाएगा? आरोपी पर कबतक कार्रवाई होगी? 24.33 करोड़ की वसूली का क्या हुआ? इन सवालों का जवाब पुलिस विभाग के भी किसी जिम्मेवार के पास नहीं है.

हजारीबाग पुलिस ने अनुसंधान के नाम पर 24.33 करोड़ रुपये कीमत के चावल की हेराफेरी करने के आरोपी मेसर्स हजारीबाग राइस मिल संचालक विजय सिंह को राहत प्रदान कर दी है. जबकि विजय सिंह के खिलाफ भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने विभागीय जांच के बाद पुलिस को प्रथामिकी दर्ज करने के लिए पत्र लिखा था. पत्र में विजय सिंह ने कैसे 76874.07 क्विंटल चावल की कालाबजारी की, इसकी पूरी जानकारी दी गई थी. इसके बाद भी पुलिस की जांच चल ही रही है और अब तक किसी तरह की कोई कार्रवाई भी नहीं की गयी है. इस संबंध में पूछे जाने पर डीएसपी महेश प्रजापति ने कहा कि अनुसंधान जारी है. मामले की समीक्षा करने के बाद इसकी जानकारी दे पाऊंगा.

दंडाधिकारी ने कहा था : 76874.07 क्विंटल चावल की कालाबाजारी हुई : उपायुक्त के आदेश (ज्ञापांक2/76, 7.12.22) द्वारा मेसर्स हजारीबाग राईस मिल से धान अधिग्रहण करने के लिए सुनील हेंब्रम, प्रखंड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी, सदर को दंडाधिकारी के रूप में प्रतिनियुक्त किया गया था. मेसर्स हेमकुंट राईस मिल प्राइवेट लिमिटेड हजारीबाग को हजारीबाग राईस मिल से अधिग्रहित धान की मिलिंग का आदेश दिया गया. दंडाधिकारी ने प्रतिवेदित किया कि 685.10 क्विंटल धान हजारीबाग राईस मिल से अधिग्रहित कर मेसर्स हेमकुंट राईस मिल प्राइवेट लिमिटेड को मिलिंग के लिए सौंप दिया गया है. हजारीबाग राईस मिल में मात्र 20 टन धान ही बचा है, जो चावल बनने योग्य नहीं है. इससे यह स्पष्ट होता है कि मेसर्स हजारीबाग राईस मिल में धान उपलब्ध नहीं था. राईस मिल द्वारा सीएमआर देने की मांग नहीं है और अधिप्राप्त कुल 76,874.07 क्विंटल सरकारी धान की कालाबजारी की गई है. इसके बाद झारखंड राज्य खाद्य एवं असैनिक आपूर्ति निगम लिमिटेड द्वारा हजारीबाग राईस मिल से शत-प्रतिशत सीएमआर सुपुर्द नहीं किए जाने की स्थिति में दोषी राईस मिल के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करते हुए समतुल्य राशि की वसूली करने का निर्देश दिया था.

हजारीबाग राइस मिल के मालिक विजय सिंह पर 11 माह पहले हुई थी प्राथमिकी

उठते सवाल ?

1. आखिर जांच कब तक पूरी हो पाएगी?
2. आरोपी पर कब तक कार्रवाई होगी?
3. 24 .33 करोड़ की वसूली का क्या हुआ?

क्या है मामला : मेसर्स हजारीबाग राईस मिल, मोरांगी पर 76874.07 क्विंटल चावल की कालाबाजारी का आरोप है. आरोप है कि 3165.09 रुपये प्रति क्विंटल की दर से कुल 24 करोड़ 33 लाख 13 हजार 351रुपये का चावल राईस मिल के संचालक विजय सिंह ने गायब कर दिया. 119899.75 क्विंटल चावल (सीएमआर) भारतीय खाद्य निगम को भेजा जाना था. लेकिन राईस मिल ने कम चावल उपलब्ध कराया. आरोप है कि शेष करोड़ों रुपये के चावल की कालाबाजारी कर दी गयी.

जांच पूरी होते ही दोषियों पर कार्रवाई की जाएगी

मामला गंभीर है. सरकारी राशि के गबन से संबंधित है. पुलिस अनुसंधान जारी है. कई बिंदुओं पर जांच चल रही है. जांच पूरी होने पर निश्चित रूप से दोषियों के खिलाफ कार्रवाई होगी.

-बजरंग महतो, थाना प्रभारी, मुफ्फसिल थाना

दुर्भाग्यपूर्ण दो विभागों का विवाद, नौ माह से काम बाधित, आए दिन हो रही हैं दुर्घटनाएं

धनबाद-बोकारो को जोड़ने वाली दामोदर नदी का पुल मार्ग अटका

संवाददाता। महुदा

धनबाद- बोकारो जिला को जोड़ने वाली तेलमोच्चो स्थित दामोदर नदी पर बना पुल का मार्ग विगत नौ माह से बाधित है. जिसका खामियाजा लोगों को भुगतना पड़ रहा है. पुल का कार्य अधूरा रहने की वजह से आए दिन लोग दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं. साथ ही लोगों को जाम की समस्या झेलनी पड़ती है. बावजूद इसके विभागीय अधिकारी व स्थानीय जनप्रतिनिधि मौन हैं. जानकारी के अनुसार उक्त पुल की मरम्मत नौ माह पूर्व अशोका बिल्डकॉन लिमिटेड कंपनी के द्वारा शुरू की गई थी.

मरम्मत कार्य के बाद निर्माण कार्य की गुणवत्ता की जांच पड़ताल करने वर्दमान बंगाल के यादवपुर से विशेषज्ञों की टीम 20 मार्च में पहुंची थी. जांच रिपोर्ट के मुताबिक एवन साइट के पीएस गॉडर की मरम्मत होनी है. इधर अशोका बिल्डकॉन के अनुसार मरम्मत कार्य पूर्ण हो चुका है. लेकिन एनएचएआइ की मानें तो कार्य अधूरा है. इसी विवाद से पुल पर यातायात अब तक शुरू नही हो पा रहा है. जिसका खामियाजा आम राहगीरों को उठाना पड़ रहा है.

अशोका बिल्डकॉन व एनएचएआई एक दूसरे पर दोषारोपण करते नहीं थकते

क्या कहता है अशोका बिल्डकॉन

अशोका बिल्डकॉन के अधिकारी कहते हैं कि यदि पुनः मरम्मत कार्य होना है, तो एनएचएआइ लिखित आदेश दे. वहीं एनएचएआइ इंतजार मे है कि पुल का कार्य करने के लिए अशोका बिल्डकॉन कार्यादेश मांगे, तभी आदेश देंगे. नतीजा आमजनों को भुगतना पड़ रहा है.

इलाके के जनप्रतिनिधि मौन क्यों

दोनों कंपनियों के विवाद से कब तक पुल पर यातायात बाधित रहेगा. इस समस्या के बावजूद प्रतिनिधियों का मौन समझ से परे है. धनबाद-बोकारों को जोड़ने वाले पुल पर आवागमन अवरुद्ध रहने से लोगों को काफी परेशानी होती है.

सीएम के कार्यक्रम को लेकर झामुमो की बैठक

बोकारो। 11 दिसंबर को मुख्यमंत्री आगमन को ले शुक्रवार को सोनाबाद पंचायत सचिवालय में झामुमो जिला समिति की बैठक हुई. अध्यक्षता जिला अध्यक्ष हीरालाल मांझी व संचालन महानगर जिला अध्यक्ष मंटू यादव ने किया. मौके पर पूर्व विधायक योगेंद्र प्रसाद भी मौजूद थे. बैठक को संबोधित करते हुए अध्यक्ष हीरालाल ने कहा कि कार्यक्रम में हर गांव से लाभुक पहुंचेंगे. प्रशासन तैयारी में लगा है, झामुमो भी अलग से तैयारी कर रही है. कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपने स्तर से प्रचार किया जा रहा है. हजारों लाभुक व पार्टी के कार्यकर्ता भाग लेंगे. मौके पर संतोष रजवार, जयनारायण महतो, अखिलेश महतो, हसन महतो, विजय रजवार, मोहन, अशोक मुर्मू, मुक्तेश्वर महतो, कन्हैया, फैयाज अंसारी, पूनम देवी, निशा हेंब्रम, गोपाल रजवार और अन्य कई लोग उपस्थित थे.

शादी में शामिल होने आई बच्ची की स्विमिंग पुल में डूबने से मौत

संवाददाता। धनबाद

सरायढेला थाना क्षेत्र में शुक्रवार को एक दुखद हादसा हो गया, जहां घर में चल रही शादी समारोह की खुशियां मातम में बदल गईं. एक हादसे में मासूम बच्ची की स्विमिंग पूल में डूबने से मौत हो गई. बताया जाता है कि शादी समारोह में शामिल होने वास्तु बिहार आई लगभग 3 वर्षीय पायल खेलते- खेलते वास्तु बिहार के स्विमिंग पुल की ओर चली गई और वह स्विमिंग पूल में गिर गई, किसी की नजर अचानक स्विमिंग पुल में गिरी बच्ची पर पड़ी इसके बाद उसने हल्ला किया और सभी लोग स्विमिंग पूल की ओर भागे व बच्ची को स्विमिंग पुल से निकाल कर तुरंत एसएनएमएमसीएच अस्पताल पहुंचे. जहां डॉक्टरों ने बच्ची को मृत घोषित कर दिया. आशंका है कि बच्ची के स्विमिंग पूल में गिरने के दौरान घर के किसी भी सदस्य का ध्यान बच्ची की ओर नहीं गया और डूबने से उसकी मौत हो गई. बच्ची के मौत से पूरे घर में मातम पसर गया है और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है.

ब्रीफ खबरें

बिजली चोरी के खिलाफ पांच पर प्राथमिकी

मरकच्चो (कोडरमा)। विद्युत् विभाग के वरीय पदाधिकारियों के निर्देश पर कनीय अभियंता हरीकृष्ण केश्वनी के नेतृत्व मे गठित टीम ने मरकच्चो प्रखंड के नावाडीह पंचायत के विभिन्न गांवों में बिजली चोरी के खिलाफ छापेमारी की.इस दौरान बिजली चोरी के आरोप में पांच लोगों के खिलाफ मरकच्चो थाना में प्राथमिकी दर्ज़ कराई गयी. जिसमें नावाडीह निवासी दशरथ कुमार,अनिल कुमार बर्मा,संजय विस्वकर्मा, गगन साव व पिपराडीह निवासी हिरालाल गुप्ता के नाम शामिल है. विभाग ने दशरथ कुमार पर बीस हज़ार,अनिल कुमार बर्मा व हीरालाल गुप्ता पर दस दस हज़ार तथा संजय विश्वकर्मा पर चालिस हज़ार का जुर्माना भी लगाया है. जानकारी अनुसार उक्त लोग अपने निजी विद्यालयों मे तथा संजय विश्वकर्मा अपने दूकान मे अवैध रूप से बिजली जला रहे थे.

बाइक दुर्घटनाग्रस्त एक युवक घायल

जयनगर (कोडरमा)। जयनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत तिलोकरी में सड़क दुर्घटना में बाइक सवार एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया. घायल की पहचान तिलोकरी निवासी विवेक कुमार सिन्हा उम्र 35 वर्ष पिता लक्ष्मीकांत सिंह के रूप में हुई है. मिली जानकारी के अनुसार विवेक कुमार अपनी बाइक से बरमसिया की तरफ जा रहे थे. इसी दौरान बाइक अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई. जिसके बाद पुलिस के द्वारा घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल कोडरमा पहुंचाया गया. जहां घायल का इलाज चल रहा है.

पीरी पंचायत भवन में लगा शिविर,जुटी भीड़

रामगढ़। आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम का अयोजन शुक्रवार को पीरी पंचायत भवन में किया गया. मौके पर बतौर मुख्य अतिथि बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद, विशिष्ट अतिथि बीडीओ पतरातू मनोज कुमार गुप्ता, मुखिया नीलम देवी, बीसीओ राजेश एक्का, पंसस पैरो देवी आदि शामिल हुए. दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया. संबोधित करते हुए विधायक ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार के कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों को मिले.सरकार के योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचें. यही सरकार की सोच है. ग्रामीण सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेकर आत्मनिर्भर बनें.

एनटीपीसी करवा रहा मॉडर्न टॉयलेट का निर्माण

केरेडारी। जिले के दो प्रखंडों केरेडारी और बड़कागांव प्रखंड में पहला मॉडर्न टॉयलेट का निर्माण एनटीपीसी करवा रहा है.इस मॉडर्न टॉयलेट में सेंसर लगा होगा और अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस भी होगा.अमूमन इस तरह का टॉयलेट हवाई अड्डा में, विदेश में बड़े होटल रेस्टोरेंट महानगर में लगा हुआ देखा जाता है. इस टॉयलेट का निर्माण एनटीपीसी के सीकरी साइट कार्यालय में हो रहा है. नल के समीप हाथ बढ़ाते ही ऑटोमेटिक पानी निकलने लगता है. कंबोर्ड के पास खड़ा होने के बाद बिना छुए ही इसका ढक्कन खुल जाएगा .इस तरह के कई अत्याधुनिक तकनीक से लैस यह मॉडर्न टॉयलेट क्षेत्र के लिए अजूबा है.

हजारीबाग अखिल भारतीय कायस्थ महासभा ने लगाया स्वास्थ्य जांच शिविर

शिविर में हुआ 107 लोगों का स्वास्थ्य जांच परीक्षण

संवाददाता। दारु

समाज कल्याण प्रकोष्ठ,जिला महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान, कायस्थ महासभा जिला इकाई हजारीबाग के तत्वावधान पुराना दुर्गा मंडप दारु के परिसर मे निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया. शिविर देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद की जयंती सप्ताह के छठे दिन आयोजित किया गया. शिविर मे दांत,आंख, बीपी, शुगर, थाईरायड सहित की जांच कर उचित चिकित्सीय परामर्श दिया गया.

शिविर का उद्घटान अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के बी एन प्रसाद, संतोष कुमार सिन्हा, युवा जिला अध्यक्ष रुपेश लाला, युवा प्रखंड अध्यक्ष राजन सिन्हा, ने संजुक्त रूप से फीता काटकर किया.इस शिविर मे श्रीनिवास अस्पताल व डेंटल कॉलेज के सहयोग से लगाया गया था.शिविर में आंख, दांत, ब्लड शुगर, थाइराइड, बी पी कोलेस्ट्रॉल सहित कई चिकित्सय जांच किया गया.शिविर में कुल 107 लोगो की जांच की गयी. इस मौके पर हजारीबाग श्रीनिवास अस्पताल एवं डेंटल कॉलेज से डॉ निषाद गवली, डॉ सौम्या राज, डॉ मेघा कृष्णन, डॉ श्रेया सेन, डॉ आकांक्षा रानी, डॉ सोनाविका, डॉ कोंजिया तबस्सुम, डॉ अन्वेशा, डॉ बोबीनशन, डॉ विनीता, तारा कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, ऋषिकेश सिंह, पिंकू कुमार, राहुल कुमार थे. शिविर को सफल बनाने में हजारीबाग महिला प्रकोष्ठ जिला अध्यक्षा अर्चना सिन्हा, महामंत्री रश्मि लाला,समाज कल्याण प्रकोष्ठ अध्यक्ष रूपेश लाला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष भैया संतोष कुमार सिन्हा महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष दारू उपसमिति पुष्पा सिन्हा संगठन मंत्री अजय अम्बष्ठ अनूप आनद विभूति सिन्हा कोषाध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा, समाज कल्याण प्रकोष्ठ उपाध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा समाज कल्याण प्रकोष्ठ अध्यक्ष दारू उपसमिति राजन सिन्हा,कमल किशोर प्रसाद , सुमन सिन्हा, रौशन सिन्हा, प्रभाकर सिन्हा, मनोरंजन सिन्हा का काफी सराहनीय योगदान रहा.

दारु मे लगा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का लाभ लेते लोग.

खास बातें

- शिविर में कई रोगों के मरीजों को दी गयी परामर्श
- दांत,आंख, बीपी, शुगर, थाईरायड की हुई जांच

शिविर में आवेदनों के आने का सिलसिला जारी

10 स्थानों पर लगा शिविर, अब तक 93445 आवेदन हुए प्राप्त

संवाददाता। हजारीबाग

झारखंड सरकार का महत्वाकांक्षी अभियान आपकी योजना, आपकी सरकार-आपके द्वार को आम जनता का समर्थन मिल रहा है. आपकी योजना, आपकी सरकार-आपके द्वार के तहत 8 दिसंबर को भी शिविर लगाया गया, जिनमें बड़कागाँव प्रखण्ड के गोंदलपुरा,कटकमदाग प्रखण्ड के कुसुम्भा, विष्णुगढ़ प्रखण्ड के नवादा, सदर हजारीबाग प्रखण्ड के सिंघानी, डाड़ी प्रखण्ड के मिश्राईनमोढा, दारू प्रखण्ड के रामदेव खरिका, चौपारण प्रखण्ड के जगदीशपुर, चलकुशा प्रखण्ड के सुदन, टाटीझरिया प्रखण्ड के धरमपुर पंचायत तथा नगर निगम क्षेत्र में वार्ड क्रमांक 18 व 19 के लिए आरईओ कार्यालय इन्द्रपुरी चौक में शिविर लगाकर आमजनों को योजनाओं की जानकारी देकर उन्हें लाभुक बनाया गया.

अब तक 25555 आवेदनों का ऑन द स्पॉट निवारण

अबतक आयोजित शिविरों में विभिन्न योजनाओं के कुल 93445 आवेदन प्राप्त किये गये हैं, जिनमें 25555 आवेदनों का ऑन द स्पॉट निवारण किया गया है . वहीं 224 आवेदनों को निरस्त करते हुए शेष को प्रक्रियाधीन किया गया है . शिविरों में अबतक अबुआ आवास के 53819 आवेदन, सावित्रीबाई फूले किशोरी समृद्धि योजना के 2805, सर्वजन पेंशन के 2348, मुख्यमंत्री पशुधन के 1874, बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना के 546, गुरूजी क्रेडिट योजना के 1047, मनरेगा के 1863, लगान रसीद के 842, केसीसी- 594, भूमि म्यूटेशन के 220, राशनकार्ड संशोधन 727, जाति प्रमाण पत्र 548, आय प्रमाण पत्र 447 सहित कई मामलों के आवेदन मिले.

जरूरतमंदों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण

शिविरों के दौरान 8434 आवेदनों के विरुद्ध 7684 कंबलों का वितरण जरूरतमंद लोगों के बीच किया गया . साथ ही 8766 आवेदनों के विरुद्ध 7676 लाभुकों को योजना के तहत धोती – साड़ी- लुंगी का वितरण किया गया .वहीं शिविर में स्वास्थ्य विभाग के द्वारा हेल्थ कैम्प लगाकर ग्रामीणों का स्वास्थ्य जांच व मुफ्त दवाओं का वितरण भी किया गया .

9 दिसंबर को इन स्थानों पर लगेगा शिविर

9 दिसंबर को ईचाक प्रखडं के पुराना इचाक,बरकट्ठा प्रखडं के चेचकपी, बरही प्रखडं के दुलमाहा, बड़कागाँव प्रखडं के बादम, केरेडारी के गरीकला, कटकमसांडी प्रखडं के कंचनपुर, विष्णुगढ़ प्रखडं के बकसपुरा, सदर हजारीबाग प्रखडं के मोरांगी, चौपारण प्रखण्ड के पाण्डेयबारा आदि.

शपथ पत्र

मैं शम्भू प्रसाद गुप्ता, पिता सीताराम साव, उम्र करीब 47 वर्ष, निवासी ग्राम - भौंरी, पो.- गोदरमाना, थाना- रंका, जिला- गढ़वा, राज्य - झारखंड, शपथपूर्वक निम्नांकित बयान करता हूं :-

1. यह कि मेरा आधार कार्ड सं. 818944458339 में मेरा नाम शम्भू प्रसाद गुप्ता SHAMBHU PRASAD GUPTA अंकित है, जो सही एवं सत्य है।
2. यह कि मेरा P.N.B. Met Life India Insurance में मेरा नाम SHAMBHU PRASAD GUPTHA अंकित है, जो मेरा ही नाम है।
3. यह कि SHAMBHU PRASAD GUPTA एवं SHAMBHU PRASAD GUPTHA दोनों अंग्रेजी स्पेलिंग नाम मेरा ही है।
4. यह कि यह शपथ पत्र मैं अपने दोनों अंग्रेजी स्पेलिंग नाम मेरा ही है इसी के प्रमाण पत्र में यह शपथ पत्र निष्दित कर रहा हूं, जो सही एवं सत्य है।

शपथ पत्र संख्या 22349/03.12.23

घायल को बचाने की बजाय मटर लूटते रहे लोग

दो ट्रकों की टक्कर में दो की मौत, एक गंभीर

संवाददाता। चौपारण

चौपारण के पिपरा में जीटी रोड वन वे कट के पास शुक्रवार की अहले सुबह लगभग 2:00 बजे बड़ा हादसा हो गया. दो ट्रकों के आमने-सामने की टक्कर में दो लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, वहीं एक गंभीर रूप से घायल हो गया. मरने वालों में सलमान (उम्र 27 वर्ष) ग्राम टांडा जिला अमरोहा उत्तर प्रदेश और आसिम (उम्र 18 वर्ष) ग्राम खंद्रावली जिला मेरठ का रहने वाला था. वहीं गुफरान (उम्र 19 वर्ष) ग्राम बीरमपुर जिला हापुर उत्तर प्रदेश गंभीर रूप से घायल हो गया.

आसपास के लोगों का कहना है कि एनएचएआई ने सिंघरावा से दनुआ तक सड़क निर्माण में घोर लापरवाही बरती है. जिसका नतीजा है कि यहां आये दिन दुर्घटना हो रही है, जिसमें कई लोग अपनी जान गंवा रहे हैं.

बता दें कि जीटी रोड के चौड़ीकरण कार्य के कारण पांडेयबारा चौक के आगे से सिंघरावा चौक के आगे तक एनएचएआई कॉन्ट्रैक्टर ने सड़क को वन वे कर दिया है. सड़क को वन वे तो कर दिया गया, मगर सुरक्षा के मापदंडों का ख्याल नहीं रखा गया है, जिस वजह से दुर्घटनाएं हो रही है. हादसे के संबंध में आसपास के लोगों ने बताया कि जीटी रोड में कट के कारण गाड़ी वन वे में आने के लिए टर्न ले रही थी.

इसी बीच विपरीत दिशा से आ रहे कंटेनर से जोरदार टक्कर हो गई. हादसे में मटर लदे ट्रक के परखच्चे उड़ गये. उसके ड्राइवर समेत दो लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई. वहीं एक गंभीर रूप से घायल है.

मानवता शर्मसार

दुर्घटना के बाद मानवता को शर्मसार करने वाली तस्वीर सामने आई . दो ट्रकों की टक्कर में दो की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, वहीं एक अंदर दर्द से कराहता रहा और मदद की गुहार लगाता रहा . मगर आसपास के लोग घायलों को बचाने की बजाय मटर लूटने में व्यस्त रहे . मौके पर पहुंची पुलिस प्रशासन और एंबुलेंस चालक के साथ भी असामाजिक तत्वों ने नोक-झोंक और दुर्व्यवहार किया . प्रशासन ने जब सख्ती दिखाई तब लोग हटे . जिसके बाद पुलिस ने शव को और ट्रक में बचे मटर को अपने कब्जे में लिया और आवागमन को चालू कराया .

महिलाओं की आपत्तिजनक तस्वीर भेजकर करते थे ठगी

संवाददाता। हजारीबाग

हजारीबाग पुलिस को गुप्त सूचना के आधार पर दो साइबर अपराधी को गिरफ्तार किया गया है. जो एस्कॉर्ट सर्विस वेबसाइट के माध्यम से महिलाओं की आपत्तिजनक तस्वीर भेजकर सर्विस दिलाने के नाम पर ठगी करते थे. हजारीबाग पुलिस कप्तान मनोज रतन चोथे को गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी की गुंजरा मोड़ जौटी रोड के पास दो लड़के अपने मोबाइल व्हाटस्एप के जरिए एस्कार्ट सर्विस वेबसाइट के माध्यम से कई लोगों को अलग-अलग नंबरों से संपर्क करके मोबाइल पर वेबसाइट के जरिए महिलाओं की आपत्तिजनक तस्वीरें भेजकर उनसे सर्विस दिलाने के नाम पर ठगी करते हैं. इसी आधार पर थाना प्रभारी, बरकट्ठा के नेतृत्व में छापामारी कर दो साइबर अपराधियों को शुक्रवार को गिरफ्तार किया गया.

इस मामले में बरकट्ठा थाना कांड संख्या 226/23 धारा 420 /385/467/468 /471/34 भा0द0वि0 एवं 66c/67 IT Act के तहत अंकित कर प्राथमिक अभियुक्त महावीर प्रसाद उम्र 28 वर्ष पे0–रामेश्वर प्रसाद ग्राम किमनिया और मुन्ना कुमार उम्र – 27वर्ष पे0– स्वर्गीय किशुन महतो ग्राम सलैया दोनों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत भेजा गया है. पुलिस इनसे अब तक किए गये ठगी के बारे में पूरी जानकारी जुटाने में लग गयी है. पुलिस इनसे जब्त मोबाइल को खंगाल रही है. वहीं अभी तक कितने लोगों को सर्विस देने के नाम पर ठगी किये इसकी भी जानकारी जुटा रही है .पुलिस दोनों से पूछताछ कर रही है.

खास बातें

- पुलिस ने दो साइबर अपराधी को दबोचा
- एस्कॉर्ट सर्विस के नाम पर लोगों को करते थे फोन

विधायक मनीष जायसवाल शहर से हैं बाहर, दिया हरसंभव मदद का भरोसा

संवाददाता। हजारीबाग

जिले के कटकमसांडी में स्कूल वाहन और यात्री बस के बीच भीषण टक्कर हो गयी. हादसे में 14 बच्चे बुरी तरह से घायल हो गए जबकि चालक की मौके पर ही मौत हो गई. घटना के बाद राजनेता और समाजसेवी भी सदस्य अस्पताल पहुंचकर परिजनों से मुलाकात किया है और उन्हें ढांढस बंधाया है साथ ही हर संभव सहायता करने की बात भी कही है .

घटना की जानकारी सदर विधायक मनीष जायसवाल को मिली तो वह भी अपने मीडिया प्रभारी रंजन चौधरी को अस्पताल भेज कर घटना की विस्तृत जानकारी लिए हैं. घायलों को हर संभव मदद करने का भरोसा भी दिलाया है. मनीष जायसवाल शहर से बाहर हैं .ऐसे में उनकी भी पूरी टीम उसे वक्त अस्पताल में दिखा जिन्होंने मेडिकल कॉलेज अस्पताल के सुपरिंटेंडेंट डॉ विनोद कुमार से संपर्क साधा और एंबुलेंस से घायल गंभीर छात्रों को रांची भेजने का काम किया है. वही जो बच्चे का इलाज हजारीबाग मेडिकल कॉलेज अस्पताल में चल रहा है उनसे भी हाल समाचार प्राप्त किया है.

समाजसेवी व कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह ने सभी घायल बच्चों और उनके परिजनों से मुलाकात कर हर संभव मदद का आश्वासन दिया, डाक्टरों को निर्देश दिया बेहतर इलाज करें किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं किया जाएगा .

18 और 19 लगा शिविर, उमड़ी भीड़

हजारीबाग। वार्ड संख्या 18 और 19 के लिए आरईओ कार्यालय इंद्रपुरी चौक में शिविर लगाया गया.इस कार्यक्रम में शहरी निवासियों के लिए सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से जरूरतमंदों को रूबरू कराते हुए उन योजनाओं का अधिकाधिक लाभ आमजनों को दिया जा रहा है.नगर आयुक्त सह प्रशासक शैलेन्द्र लाल ने लाभुकों के बीच कंबल,धोती सारी का वितरण किया. इस शिविर में नगर निगम से तथा सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का स्टॉल लगाया गया.शिविर में होल्डिंग टैक्स से 9, ट्रेड लाइसेंस से 6, सावित्री योजना में 9,सर्वजन पेंशन योजना में 2 आवेदन प्राप्त हुआ.

भक्त महाकाल का नामक एल्बम की शूटिंग

संवाददाता। बरकटठा

प्रखंड क्षेत्र के ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटन स्थल सूर्यकुण्ड धाम में एस.एस म्यूजिक के वैनर तले स्थानीय कलाकारों के द्वारा के द्वारा भक्त महाकाल का नामक गाना के बोल पर शूटिंग किया गया. सूर्यकुण्ड कि अनवरत गर्म पानी के कुंड व आसपास कलकल बहती नदियां,उंचे-उंचे पहाडियों व प्राकृतिक वादियों के छटाओं मनमोहक दृश्य के चलते दर्जनों गानों व एलबमों का सुटिंग स्थानीय व झारखंड प्रदेश के अन्य क्षेत्रों के कलाकारों के द्वारा किया गया है.भक्त महाकाल के एलबम शूटिंग के दौरान कलाकार धर्मेंद्र सिंह, अपुल पाण्डेय, शेषनाथ सिंह, रामाअवतार पाण्डेय, विक्रम रवानी, प्रतुल पाण्डेय,के अलावा दर्जनों लोग मौजूद थे.

विस्थापित प्रभावित भू रैयतों को कंपनी से मिलने वाली सुविधाओं में कटौती

मांग पत्र देने जा रहे भू रैयतों को बीजीआर प्रबंधन ने रोका

संवाददाता। केरेडारी

एनटीपीसी के केरेडारी कोल माइंस के एमडीओ आउट सोर्सिंग कंपनी बीजीआर के बसरिया गांव में निर्मित वर्क शॉप के उद्घाटन समारोह में शामिल हो कर विस्थापित प्रभावित भू रैयतों को कंपनी से मिलने वाली सुविधाओं को लेकर आवदेन पत्र सौंपने जा रहे बेंगवारी गांव के दर्जनों भू रैयतों को बीजीआर प्रबंधन ने रोक दिया.घटना 8 दिसंबर की है. इस संदर्भ में ग्रामीण भू रैयतों ने आक्रोश जताते हुए कहा कि हम बेंगवरी गांव के ग्रामीण भू रैयतों को सुचना मिली कि 8 दिसंबर को बीजीआर कंपनी के वर्क शॉप उद्घाटन करने कंपनी प्रमुख कार्तिक रेड्डी आ रहे हैं.इस अवसर पर भू रैयत बीजीआर कंपनी के प्रमुख कार्तिक रेड्डी से मिलकर प्रभावित भू विस्थापितों को बीजीआर कोल माइनिंग कंपनी से मिलने वाली इकरारनामा के छाया प्रति उपलब्ध कराने को लेकर आवेदन देने बीजीआर के वर्क शॉप पहुंचे.जहां बीजीआर प्रबंधन द्वारा ग्रामीणों को तैनात पुलिस बल के द्वारा रोक दिया गया.जिसपर नाराज विस्थापित भू रैयत कंपनी गेट के बाहर धरना के रुप में बैठ गए.बिजीआर प्रबंधन के नाम लिखे आवदेन पत्र दिखाते हुए कहा है कि बीजीआर कोल माइंस द्वारा प्रभावित एवं भू विस्थापितों को रोजगार समेत अन्य लाभ नहीं दिया जा रहा है. बीजीआर द्वारा बाजबरन काम किया जा रहा है. माइनिंग से हो रहे प्रदूषण से लोगों का हाल बेहाल है. प्रदुषण के रोक थाम पर बीजीआर द्वारा आजतक किसी भी तरह का कोई पहल नहीं किया गया है. रैयत के साथ हुई वार्ता का कोई लिखित कॉपी सौंपी गई है. मौके पर प्रभावित भू विस्थापित रैयत मनोज कुमार अर्जुन कुमार गोपाल कुमार अनिल कुमार संजय साव विनय साव नारायण साव प्रमोद साव विनोद साव हरिहर साव तिलक साव रोहन साव तेजो साव समेत दर्जनों लोग उपस्थित थे.एनटीपीसी के आउटसोर्सिंग कंपनी बीजीयार के प्रोजेक्ट मैनेजर सत्य पाल को फोन लगाने पर रिसीव नहीं किया.

आवदेन पत्र सौंपने जा रहे भू रैयतों को बीजीआर प्रबंधन रोकते हुए .

CLASSIFIED

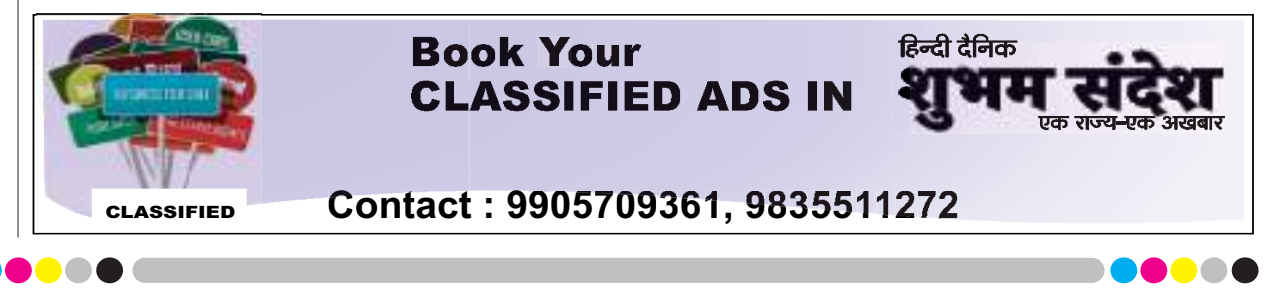

रिम्स ओपीडी

सुबह 9 से दोपहर 1 और शाम 3 से 5 बजे तक

विभाग	डॉक्टर का नाम
मेडिसिनः	डॉ मनोज कुमार प्रसाद
सर्जरीः	डॉ पंकज बोदरा
ऑर्थोपेडिकः	डॉ जीके गुप्ता
न्यूरोसर्जरीः	डॉ आनंद प्रकाश
गायनीः	डॉ नीलम नलिनी
टीबी एवं चेस्टः	डॉ ब्रजेश मिश्रा
रेडिएशन आंकोलॉजीः	डॉ रश्मि सिंह
सर्जिकल आंकोलॉजीः	डॉ रोहित कुमार झा
नेत्रः	डॉ सुनील कुमार
स्किनः	डॉ प्रभात कुमार
ईएनटीः	डॉ बिनोद कुमार सिन्हा
न्यूरोलॉजीः	डॉ रूपेश प्रसाद

सदर अस्पताल हजारीबाग

विभाग	डॉक्टर का नाम
मेडिसीन :	डॉ. सोमा उरांव
मनो चिकित्सा विभाग :	डॉ. मो. एस. जाफर
त्वचा रोग :	डॉ. एसएस चौधरी
शिशु रोग :	डॉ. क्षितिज आनंद
इएनटी :	डॉ. राखी कुमारी
डेंटल विभाग :	डॉ. कोएना मिश्रा

ट्रामा सेंटर : सुबह 8 बजे से अपराह्न 2 बजे तक
- सर्जन : डॉ. विवेक
- मेडिसीन : डॉ. रेफॉर्ड

अपराह्न 2 बजे से रात 10 बजे तक
- सर्जन : डॉ. अमरेंद्र
- मेडिसीन : डॉ. आरके सिंह

रात 10 बजे से सुबह 8 बजे तक
- ऑर्थो विभाग : डॉ. रामकृष्ण
- मेडिसीन : डॉ. अहमद

हजारीबाग का मौसम

- न्यूनतम तापमान : 13 डिग्री सेल्सियस
- अधिकतम तापमान : 22 डिग्री सेल्सियस
- बारिश की स्थिति : शून्य
- हवा की रफ्तार : छः किमी प्रति घंटे

ब्रीफ खबरें

चलाया गया सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान

कोडरमा। नवलशाही थाना पुलिस ने सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाकर आम जनता से लेकर विद्यालय के छात्र छात्राओं को जागरूक किया. इस दौरान पुलिस ने थाना क्षेत्र के नवादा चौक पर लोगों को सड़क सुरक्षा के निर्देशों से अवगत कराया. पुलिस ने ट्रिपल लोडिंग, बिना हेलमेट व बिना ड्राइविंग लाइसेंस के वाहन नहीं चलाने,तेज़ गति व शराब पीकर वाहन नहीं चलाने, सीट बेल्ट लगाकर चार पहिया वाहन चलाने और मालवाहक वाहन पर यात्री के परिवहन नहीं करने को कहा.

स्कूल कर्मियों के बीच मौजे और ईयर कैप का वितरण

कोडरमा। झुमरी तिलैया शहर के रांची पटना रोड स्थित द रामेश्वर वैली स्कूल में शहर में बढ़ते ठंड को देखते हुए गैर शैक्षणिक कर्मचारियों के बीच मौजे और ऊनी ईयर कैप का वितरण किया गया. निदेशक प्रवीण मोदी ने सभी कर्मचारियों को ठंड से बचने की सलाह दी और खुद को ठंड से बचा कर रखने को कहा. निदेशक ने कर्मचारियों को बताया की ठंड सबसे पहले कानो से प्रवेश करती है और पैरो के माध्यम से भी लोगो को ठंड लगती है.

नुक्कड़ नाटक से लोगों को किया गया जागरूक

हजारीबाग। आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित हो इसे लेकर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग नुक्कड़ नाटक के जरिए लोगों को जागरूकता प्रचार रथ के माध्यम से जागरूक कर रहा है.नुक्कड़ नाटक की टीम निर्धारित प्रखंडों के प्रमुख चौराहा, बाजार हाट एवं खासकर सुदूरवर्ती पंचायत क्षेत्र में लोगों को स्थानीय भाषा में जागरुकता संदेश देकर शिविर में भागीदारी करने के लिए प्रेरित कर रही है.

डीएवी स्पोर्ट्स क्लस्टर लेवल टूर्नामेंट्स का हुआ भव्य समापन

डीएवी कोडरमा ओवरऑल चैंपियन, खेलो में उम्दा प्रदर्शन

संवाददाता। कोडरमा

डीएवी स्पोर्ट्स क्लटर लेबल में डीएवी कोडरमा ओवर ऑल चैंपियन .

डीएवी स्पोर्ट्स क्लस्टर लेबल टूर्नामेंट्स का आयोजन हुआ, जिसमें पीवीएसएस झुमरीतिलैया, कोडरमा का चैंपियनशीप पर कब्जा रहा. इस चैंपियनशीप टूर्नामेंट में डीएवी जोन एफ के सभी विद्यालय ने भाग लिया जिसके अंतर्गत क्रिकेट, फुटवॉल, वॉलीवॉल, चेस, बैडमिंटन, रोलर स्केटिंग, चेस , खो-खो, ताइक्वांडो, योगा, जुडो - कराटे, एथलेटिक्स जैसे विभिन्न खेलों का आयोजन हुआ. डीएवी कोडरमा के प्रतिभागियों ने कुल 105 गोल्ड, 72 सिल्वर एवं 22 कांस्य पदक, 13 ट्रॉफी लाकर पूरे क्लस्टर लेबल पर ऑवर ऑल चैंपियन बने. साथ ही 7 बच्चों को बेस्ट प्लेयर का अवार्ड भी मिला.

सभी प्रतिभागी तथा शिक्षकों ने खूब मेहनत की : इस चैंपियनशिप ट्रॉफी पर अपना कब्जा करने के लिए विद्यालय के सभी प्रतिभागी तथा शिक्षकों ने खूब मेहनत की और इस ट्रॉफी को पाने से सभी के बीच खुशी की लहर दौड़ गई. सभी बच्चे बहुत ही प्रसन्न और प्रोत्साहित थे. इस सफलता के लिए झारखंड जोन एफ के सहायक क्षेत्रीय पदाधिकारी निसिकान्त कर ने डीएवी कोडरमा के प्रतिभागियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सभी को बधाई दी एवं उनकी प्रतिभा की सराहना की. साथ ही आगे की राज स्तरीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएँ भी दी. वहीं डीएवी मैनेजिंग कमीटी के मैनेजर मनोज कुमार सिन्हा ने भी सभी प्रतिभागियों की भूरि - भूरि प्रशंसा करते हुए शुभकामनाएं दी तथा बच्चों के मनोबल को बढ़ाया .

एथलीटों ने अद्भुत प्रदर्शन का स्वर्णिम पृष्ठ लिखा : प्राचार्य

बच्चों की खुशी को देखते हुए पूरे गदगद मन से विद्यालय के प्राचार्य कृष्ण कुमार सिंह ने सभी को शुभकामनाएं दी और कहा कि हमारे खेल प्रतिभागियों और एथलीटों ने अद्भुत प्रदर्शन का स्वर्णिम पृष्ठ लिखा .खेल क्षेत्र और एथलेटिक्स मैदान में अपने उत्साह और आत्म विश्वास को प्रदर्शित किया है .यह बेहद गर्व की बात है कि हमारे स्कूल को ओवरऑल चैंपियन घोषित किया गया है . ओवरऑल चैंपियनशीप ट्रॉफी हासिल करना हमारे स्कूल की खेल कौशल का प्रमाण है .साथ ही कहा कि हमारे स्कूल के डीएवी स्पोर्ट्स – 2023 में शानदार उपलब्धियों के लिए सभी खिलाड़ियों, विशेष रूप से खेल शिक्षकों और सभी शिक्षकों एवं अभिभावकों को ढेर सारी बधाईयाँ दी .डीएवी स्पोर्ट्स को शानदार मुकाम तक पहुंचाने में सभी ने भरपूर योगदान दिया .

अंडर 14 क्रिकेट खिलाड़ियों का ओपन ट्रायल 11 को होगा

संवाददाता। कोडरमा

खास बातें
- जिला टीम के गठन के लिए तैयारी की गयी शुरू
- सभी खिलाड़ी जरूरी कागजात के साथ मिले

झारखंड स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में खेले जाने वाले इंटर डिस्ट्रिक्ट अंडर 14 क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए जिला टीम के गठन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है. इसके लिए अंडर 14 के खिलाड़ियों का ओपन ट्रायल 11 दिसंबर दिन सोमवार को सुबह 10 बजे से सी एच हाई स्कूल मैदान में रखा गया है. वहीं ट्रायल के समय खिलाड़ी अपने साथ (2020-21,21-22,22-23,23-24) का मार्कशीट, स्कूल बोनाफाइड सर्टिफिकेट, आधार कार्ड, डिजिटल बर्थ सर्टिफिकेट, (1/9/2010 के बाद और 31/8/2012 के पहले का जन्म होना चाहिए). साथ ही माता-पिता का आधार कार्ड , माता-पिता का वोटर आई कार्ड , खिलाड़ी का आधार हिस्ट्री को अपडेट करके पेपर और दो फोटो लाना आवश्यक है. उक्त प्रपत्र के बिना खिलाड़ी को ट्रायल के योग्य नहीं माना जायेगा. ज्ञात हो कि अंडर 14 टूर्नामेंट दिसंबर में ही खेला जाना है. उक्त आशय की जानकारी सचिव दिनेश सिंह और उपाध्यक्ष अनिल सिंह ने दी.

डीवीसी केटीपीएस एडमिन बिल्डिंग में कार्यक्रम का आयोजन

डीवीसी की लोक जन सुनवाई विधायक अमित ने जताया विरोध

संवाददाता। कोडरमा

डीवीसी केटीपीएस एडमिन बिल्डिंग के पास डीवीसी ने लोक जन सुनवाई कार्यक्रम का आयोजन किया. कार्यक्रम में मुख्य रूप से झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड हजारीबाग के जितेंद्र प्रसाद सिंह, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड रांची के परामर्श अधिकारी कुमारी मनी भूषण मौजूद थे.

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला डीएलओ गौरांग महतो ने किया. वहीं अतिथियों का स्वागत डीवीसी के महाप्रबंधक सह परियोजना प्रधान दिलीप सिंह ने किया. मौके पर सीनियर मैनेजर इलेक्ट्रिक मांडवी कुमारी ने कहा कि केटीपीएस में विस्तारीकरण के तहत 800x2 कुल 1600 मेगावाट का प्लांट लगेगा, इस जन सुनवाई के माध्यम से जानकारी देना है कि प्रदूषण नियंत्रण का क्या उपाय किया जाय. वहीं मौके पर मौजूद विधायक अमित कुमार यादव ने कहा कि 1000 मेगावाट पावर प्लांट से क्षेत्र में प्रदूषण बढा है. लोग मर रहे हैं. करियावां की महिलाओं पर पुलिस लाठीचार्ज हुआ, उन्हें जेल जाना पडा. डीवीसी प्रबंधन बताये कि प्रदूषण नियंत्रण व विस्थापितों के रोजी रोजगार के लिए अब तक क्या किया गया?

डीवीसी ने लोगों को धोखे में रखा : जानकी यादव

वहीं पूर्व विधायक जानकी यादव ने कहा कि डीवीसी ने हमेशा लोगों को धोखे में रखा . कहा कुछ और किया कुछ और . लोगों का भरोसा तोडा है.. मौके पर जिप उपाध्यक्ष निर्मला देवी, मुखिया संजय साव, मनोज सिंह, अवित सिंह, छोटेलाल सिंह, दामोदर यादव, उमेश यादव, अरूण यादव, डीवीसी के डीजीएम हरीश चंद्र सिंह, कोलकाता मुख्यालय के निदेशक काजल बनर्जी, वैंकटेश, निदेशक भूमि संरक्षण परियोजना प्रधान संजय कुमार, वरीय महाप्रबंधक अर्णव मित्रा, महाप्रबंधक मानस मंडल, मुखिया महाप्रबंधक अभय श्रीवास्तव, संजय कुमार सिंह, महेश यादव, सुनील यादव सहित भारी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे.. संचालन डीवीसी के विनोद राय ने किया..

उद्योग लगने से होता है विकास : दिलीप सिंह

जन सुनवाई के दौरान डीवीसी के वरीय महाप्रबंधक सह परियोजना प्रधान दिलीप कुमार सिंह ने लोगों के सवाल का जवाब देते हुए कहा कि नए प्लांट के लिए जमीन का अधिग्रहण नहीं करना है . बेरोजगारी, पर्यावरण, एशपौंड, सीएसआर द्वारा किए गए कार्यो का डाटा उपलब्ध है.. जरूरत पडी तो इसे सार्वजनिक किया जाएगा.. उन्होंने कहा कि उद्योग लगने से किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास होता है.. लोगों को राज्य सरकार की पॉलिसी के अनुरूप रोजगार दिया जा रहा है, इस दौरान बीच बीच में विरोध और शोर शराबा होता रहा.. साथ ही कहा कि सीएसआर हेड हरीश चंद्र ने इलाके में सीएसआर द्वारा कराये गए कार्यो का डाटा प्रस्तुत किया.. वहीं अन्य पदाधिकारियों ने भी विस्थापितों के सवाल का जवाब दिया..

खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी ने कई प्रतिष्ठानों का किया निरीक्षण

संवाददाता। हजारीबाग

खास बातें
- कई प्रतिष्ठानों का नहीं मिला फूड लाइसेंस
- एक सप्ताह के अंदर बनाने की दी चेतावनी

उपायुक्त नैंसी सहाय व एसीएमओ डॉ शशि जयसवाल के निर्देश पर खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी चंद्र प्रकाश गुग्गी ने हजारीबाग शहरी क्षेत्र के कई प्रतिष्ठानों जैसे योलो कैफे एंड लाउंज, मेसर्स स्काई लाइट गार्डन रेस्टोरेंट और मेसर्स बीकानेर एक्सप्रेस रेस्टोरेंट सहित मेसर्स फेमस मेडिकल, मेसर्स न्यू रांची मेडिकल हॉल, मेसर्स ऑर्किड हेल्थप्लस का औचक निरीक्षण किया. जांच के क्रम में मेसर्स स्काई लाइट गार्डन रेस्टूरेंट, फेमस मेडीकल स्टोर, न्यू रांची मेडीकल हॉल एवं मेसर्स ऑर्किड हेल्थ प्लस, पैगोडा चौक के पास फूड लाइसेंस नहीं होने पर चेतावनी देते हुए सात दिनों के अंदर लाइसेंस लेने का आदेश दिया. साथ ही उक्त वर्णित प्रतिष्ठानो पर खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की जांच को लेकर औचक निरीक्षण किया.

उन्होंने खाद्य प्रतिष्ठान जैसे मिठाई दुकान, होटल, रेस्तरां एवं खुदरा दुकानों का निरीक्षण किया.इस दौरान उन्होंने मिठाइयों के प्रतिष्ठानों में खाद्य सुरक्षा के नियमों के अनुपालन के साथ कारोबार करने का निर्देश दिया.उन्होंने खाना पकाने में साफ़ पानी का उपयोग करने, कर्मियों के स्वच्छता पर ध्यान देने, फूड सेफ्टी के अनुज्ञप्ति के साथ कारोबार करने वाले कारोबारियों से समान की खरीद करने सहित उचित लेबल के साथ खाद्य सामग्रियों को पैक करने को कहा. उन्होंने खाद्य सामग्रियों में अनावश्यक रंगों के इस्तेमाल से परहेज करने का निर्देश दिया.खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी ने बताया की खाद्य सुरक्षा मानकों को लेकर विशेष अभियान चलाया जा रहा है और किसी भी प्रकार के मिलावट खोरी के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी.विभिन्न स्थानों पर जांच के क्रम में एक्सपायर्ड दूध और दही जैसे समान को तत्काल नष्ट कर दिया गया और सख्त चेतावनी दी गई.

जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी को किया गया सम्मानित

हजारीबाग। होटल कैपिटॉल हिल, रांची में बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु परिवारों एवं गैर संस्थागत सेवाओं का सशक्तिकरण विषय पर राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में जिला बाल संरक्षण हेतु बेहतर कार्य के लिए जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी, हजारीबाग संजय प्रसाद को मोंमेटो देकर सम्मानित किया गया.

तीन स्वयं सहायता समूहों को मिला 9 लाख का कैश क्रेडिट

संवाददाता। रामगढ़

राज्य सरकार के 4 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे हैं आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत शुक्रवार को मांडू प्रखंड के उत्तरी कर्मा पंचायत में आयोजित शिविर के दौरान बेबी महिला समूह अक्सा महिला समूह एवं समीरा महिला स्वयं सहायता समूह को कुल 9 लाख रुपए का कैश क्रेडिट लिंकेज का स्वीकृति पत्र उपलब्ध कराया गया.मौके पर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने सरकार व जिला प्रशासन का धन्यवाद करते हुए कहा कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के उपरांत न केवल वे रोजगार के नए अवसर से जुड़कर आत्मनिर्भर हो रही है .

पांच साइबर अपराधी गिरफ्तार

हजारीबाग। संवाददाता

गुप्त सूचना के आधार पर हजारीबाग पुलिस ने पांच साइबर अपराधी को गिरफ्तार किया है. हजारीबाग एसपी मनोज रतन चोथे को गुम सूचना प्राप्त हुई कि कुछ लड़के कोर्रा थाना क्षेत्र अंतर्गत बाबूगांव स्थित मटवारी तालाब के समीप किशोर साव के लॉज में रहकर सोशल साइट फेसबुक, इंस्टाग्राम एवं अन्य सोशल साईट के माध्यम से लोगों को फंसाकर उनके वाट्सएप्प पर वीडियो कॉल कर उन्हें अश्लील कृत्य करवाकर उनका स्क्रीन रिकॉर्डिंग बनाकर उन्हें ब्लेकमेल कर अवैध रुप से पैसे ऐंठने का कार्य किया जा रहा है.

सूचना के आलोक में थाना प्रभारी कोर्रा के नेतृत्व में छापामारी दल का गठन कर बाबूगांब स्थित बताए हुए लॉज में छापामारी की गई. लॉज से साइबर क्राइम कर रहें पांच युवकों को विधिवत गिरफ्तार किया गया . कार्रवाई करते हुए कोर्रा थाना काण्ड संख्या 321/23 धारा 420/385/468/471/34 भा.द.वि. और 66(c)/67/67(a) आईटी एक्ट के तहत काण्ड दर्ज कर गिरफ्तार सभी अभियुक्तों को न्यायिक हिरासत में भेजा गया. जिसे गिरफ्तार किया गया वो संदीप कुमार, आशिष कुमार,साजन कुमार, धर्मेन्द्र कुमार,दिलीप मंडल है सभी थाना बरकट्ठा क्षेत्र के कपकी के रहने वाले हैं.इनके पास से 8 एण्ड्रायड मोबाइल ,21,500 रुपये नगद, दो सीम कार्ड, 6 एटीएम कार्ड बरामद किया गया है.

सेवानृवित शिक्षक का हुआ निधन, शोकसभा

मरकच्चो(कोडरमा)। मरकच्चो प्रखंड के मध्य पंचायत अंतर्गत बड़ा अखाडा निवासी समाजसेवी सह सेवानृवित शिक्षक कार्तिक सिंह (85वर्ष)का निधन उनके आवास पर हो गया. मिली जानकारी के अनुसार वह कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे. वहीं उनका अंतिम संस्कार स्थानीय मुक्तिधाम में किया गया. वहीं उनके निधन पर कांग्रेस के नेताओं ने भी शोक प्रकट किया है. कांग्रेसी नेता नूर आलम ने बताया की पार्टी मे वह अभिभावक की तरह थे, उनके निधन पर शिक्षा जगत के लोगों के अलावे प्रखंड के लोगों ने भी शोक व्यक्त किया है. जिनमे प्रमुख विजय कुमार सिंह,पूर्व प्रमुख सावित्री देवी, उपप्रमुख पिंकी देवी,मुखिया रानी सिंह, रंजीत कुमार सिंह ,मुखिया दीपक पाण्डेय आदि उपस्थित थे.

हाथियों ने रौंद डाली धान की फसल

संवाददाता। मरकच्चो (कोडरमा)

मरकच्चो प्रखंड मे एक बार फिर हाथियों के झुंड ने उत्पात मचाना शुरू कर दिया है. गुरुवार की देर रात हाथियों का झुंड ने मरकच्चो प्रखंड के बेरहवा जंगल से सटे पपलो गांव पंहुच कर जम कर उत्पात मचाते हुए धान के फसल को नुकसान पंहुचाया है. हाथियों के झुंड ने पपलो निवासी उपेंद्र यादव व नारायण यादव के पंद्रह पंद्रह कट्ठा खेत मे लगे धान के फसल को खा गया. वही भुनेश्वर यादव, रामचंद्र यादव व सुरेश यादव के दस दस कट्ठा तथा बाबूलाल यादव के 07कट्ठा मे लगे धान को भी खा गए तथा बाकी फसलों को रोंद कर नष्ट कर दिया. वहीं कृषक उपेंद्र यादव ने बताया की हाथियों के झुंड ने खेतों मे लगे फसलों के अलावे उनके खलिहान मे रखे 10 क्विंटल धान को तथा रामसहाय महतो के खलिहान मे रखे पांच क्विंटल धान को भी चट कर गए.

हाथियों के उत्पात से ग्रामीण काफी चिंतित है. ग्रामीणों ने बताया की हाथियों का झुंड है जो बेरहवा जंगल मे बसेरा बनाये हुए है और रात होते ही गांवो मे घुसकर जमकर उत्पात मचाते है. बीती रात ग्रामीणों ने लूप व पटाखे जलाकर बड़ी मुश्किल से हाथियों को जंगल की तरफ खदेड़ा. वहीं कृषको ने बताया की हाथियों का झुंड प्रत्येक साल गांव मे आकर फसलों को बर्बाद कर देता है जिससे किसानों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है. ग्रामीण क्षेत्र के लोग कृषि पर ही निर्भर है और यही उनके अजीविका का साधन भी है लेकिन हर साल हाथियों के उत्पात से किसानों का खेती करने से मोहभंग हो रहा है.

तैयारी 18 को इचाक में 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' के जिला स्तरीय कार्यक्रम

सीएम का हजारीबाग दौरा, जिला प्रशासन ने तैयारियों को लेकर की बैठक

संवाददाता। हजारीबाग

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का 18 दिसंबर को हजारीबाग दौरा प्रस्तावित है. इस दौरान वें इचाक प्रखंड में जिला स्तरीय 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री शामिल होगें.

मुख्यमंत्री का जिला में आगमन एवं कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर उपायुक्त नैंसी सहाय की अध्यक्षता में समाहरणालय सभाकक्ष में बैठक की गई. इस दौरान पुलिस अधीक्षक मनोज रतन चोथे भी मौजूद रहे. बैठक में कार्यक्रम की सम्पूर्ण रूपरेखा की विस्तृत रूप से समीक्षा की गई और आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया.

मुख्यमंत्री ईचाक प्रखंड में आयोजित होने वाले जिला स्तरीय 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम में विभिन्न जनहितकारी योजनाओं के लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण किया जाना है.

बैठक में उपायुक्त ने सभी जिला स्तरीय पदाधिकारीयों एवं संबंधितों को कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये. उन्होंने निर्देश दिया कि इस कार्यक्रम में सभी 24×7 उपलब्ध रहकर तत्परता के साथ और पूरी लगन से कार्य करेंगे जिससे की यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सके. उन्होंने लाभुकों के बीच वितरित किए जाने वाले परिसंपत्तियों की जानकारी प्राप्त की तथा संबंधित अधिकारियों को जरूरी दिशा-निर्देश दिया. उन्होंने कहा कि अबतक आयोजित शिविर में प्राप्त हुए विभिन्न योजनाओं के आवेदनो को यथाशीघ्र निष्पादित करने का निर्देश दिया.

उपायुक्त ने कहा कि मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर यातायात व्यवस्था, सुरक्षा एवं विधि व्यवस्था, दण्डाधिकारी व पुलिस पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति, अप्रोच रोड और बैरिकेडिंग समेत अन्य जरूरी व्यवस्था, लाभुकों के बैठने,सभा मैदान का प्रबंधन समेत अन्य सभी महत्वपूर्ण तैयारियों की बारीकी से समीक्षा की और कार्यक्रम सुव्यवस्थित तरीके से सम्पन्न हो उसके लिए उचित दिशा निर्देश दिए.

बैठक में उप विकास आयुक्त प्रेरणा दीक्षित, प्रशिक्षु आईएएस सुलोचना मीणा, सिविल सर्जन, डीसीएलआर, सभी तकनीकी विभागों के पदाधिकारी व अन्य सभी संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे.

खास बातें
- कार्यक्रम स्थल पर सुरक्षा के व्यापक इंतजाम के निर्देश
- 24 घंटे कंट्रोल रूम को सक्रिय रखने को कहा गया

कई पंचायतों में लगा शिविर

ऑन द स्पॉट हुआ मामलों का निपटारा

संवाददाता। कोडरमा

आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत कोडरमा जिला के सतगावां प्रखंड के समलडीह, डोमचांच प्रखंड के बगरीडीह, कोडरमा प्रखंड के पथलडीहा एवं जयनगर प्रखंड के डंडाडीह पंचायत में शिविर का आयोजन किया गया.

सरकार आपके द्वारा कार्यक्रम में लगाये गये शिविर में काफी संख्या में आमजनों ने भाग लिया और अपनी अपनी समस्या से पदाधिकारियों को अवगत कराया. आमजनों के शिविर में लगाये गये स्टॉल में कृषि, समाज कल्याण, दाखिल खारिज, पेंशन योजना, मुख्यमंत्री पशुधन योजना, जाति/ आय/ आवासीय प्रमाणपत्र निर्गत करने को लेकर आवेदन दिया. वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी ने शिविर में आये आमजनों को सरकार की महत्वकांक्षी योजनाओं का लाभ लेने हेतु प्रेरित किया.

उन्होंने कहा कि आपलोगों को योजना का लाभ लेने से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होती है, तो उसके लिए आवेदन दें. आवेदनों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए योजना का लाभ दिया जायेगा. वहीं शिविर में कई मामलों पर ऑन दा स्पॉट निस्पादन किया गया. शिविर में आये वृद्ध महिलाओं को पेंशन योजना का लाभ दिया गया. ग्रामीणों के बीच जॉब कार्ड, कंबल और धोती साड़ी का वितरण किया गया. कार्यक्रम में सभी विभागों द्वारा विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई और आवेदन प्राप्त किये गये.

युवक की गोली मारकर हत्या, एक पुलिसकर्मी भी शहीद हुआ

संवाददाता। जमशेदपुर

दो गुटों की लड़ाई में एक की मौत हो गई जबकि इस मुठभेड़ में एक पुलिसकर्मी भी शहीद हो गए हैं. यह घटना जिले के मानगो थाना के जवाहरनगर रोड नंबर 17 के पास शुक्रवार की दोपहर की है. जहां सज्जाद उर्फ टांडा नाम के युवक पर गोलियां चलाई गई. इस दौरान सूचना पाकर पहुंचे टाइगर मोबाइल के जवान पर भी अपराधियों ने गोली चला दी. हालांकि, इस बीच स्थानीय लोगों ने एक अपराधी को दबोच लिया और तीन मौके से फरार होने में सफल रहे. घायलों को इलाज के लिए टीएमएच ले जाया गया, जहां सज्जाद को मृत घोषित कर दिया गया. मृतक सज्जाद का पूर्व से आपराधिक इतिहास रहा है.

मानगो में दिनदहाड़े बदमाशों संग मुठभेड़

खास बातें

- दो गुटों में हुई झड़प, मृतक का था आपराधिक इतिहास
- शहीद जवान मनोहरपुर के तरतरा गांव का रहनेवाला है

डाबर ने दो साल पूर्व की थी दानिश की हत्या

29 दिसंबर 2021 को सज्जाद के भाई डाबर ने जाकिर नगर रोड नंबर 14 में दानिश की गोली मरवाकर हत्या कर दी थी. इसके अलावा सोनारी में गैंगस्टर गणेश सिंह पर भी बमबारी करने के मामले में सज्जाद का नाम सामने आया था. आशंका जताई जा रही है कि दानिश का मौत का बदला लेने के लिए ही सज्जाद की हत्या कराई गई है. हालांकि पुलिस सभी बिंदुओं पर जांच कर रही है. सज्जाद के सिर पर गोली लगी है. वहीं जवान के सीने पर गोली लगी है: सज्जाद के सिर पर गोली लगी है. वहीं, जवान के सीने पर गोली लगी है. उसकी भी स्थिति गंभीर बताई जा रही है. सूचना पाकर सिटी एसपी टीएमएच पहुंचे और मामले की जानकारी ली. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, विशाल मेगा मार्ट के पास चारों अपराधी सज्जाद से उलझ गए. इसी बीच एक अपराधी ने अपने पिट्ठू बैग से पिस्टल निकाला और सज्जाद पर फायरिंग कर दी. गोली सज्जाद को लगी जिससे वह घायल हो गया. सज्जाद जान बचाकर गली में भागा तभी अपराधी भी उसके पीछे फायरिंग करते हुए भागे. इसकी जानकारी पास ही खड़े टाइगर मोबाइल के जवान को दी गई. टाइगर मोबाइल का जवान भी अपराधी के पीछे भागा. इसी बीच गोली जवान को भी लगी. एक गोली सज्जाद के सिर पर भी लगी जिससे वह जमीन पर गिर पड़ा. इसी बीच स्थानीय लोगों ने एक अपराधी को पकड़ लिया.

आओ जानें

पिछले 5 साल में पॉक्सो एक्ट के तहत कितने लोगों की हुई गिरफ्तारी

रांची	593	रामगढ़	157
खूंटी	138	कोडरमा	96
गुमला	238	गिरिडीह	341
लोहरदगा	250	धनबाद	186
सिमडेगा	131	बोकारो	253
चाईबासा	243	दुमका	255
जमशेदपुर	228	देवघर	243
सरायकेला	160	पाकुड़	136
गढ़वा	406	साहेबगंज	232
पलामू	354	गोड्डा	229
लातेहार	240	जामताड़ा	58
हजारीबाग	333	रेल जमशेदपुर	05
चतरा	211	रेल धनबाद	19

ब्रीफ खबरें

लातेहार में फुटपाथ पर मिला अधेड़ का शव

लातेहार। बरवाडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत स्थानीय बाजार पीपल पेड़ के समीप फुटपाथ पर एक व्यक्ति का शव बरामद हुआ है. उसके मुंह से खून का रिसाव हो रहा था. शव मिलने की सूचना पर एसडीपीओ दिलु लोहरा, थाना प्रभारी श्रीनिवास सिंह व सब-इंस्पेक्टर रवि गुप्ता मौके पर पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए लातेहार सदर अस्पताल भेज दिया. थाना प्रभारी श्रीनिवास सिंह ने उक्त व्यक्ति की कोई सूचना मिलने पर पुलिस को सूचित करने की अपील की है.

ट्रेलर की चपेट में आने से युवक घायल हुआ

निरसा। निरसा थाना अंतर्गत जीटी रोड कंचनडीह के समीप शुक्रवार को टेलर की चपेट में आने से एक बाइक सवार यमुना चौहान बुरी तरह घायल हो गया. आनन फानन स्थानीय लोगों द्वारा एंबुलेंस की माध्यम से इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया. बताया जाता है कि युवक मुगमा से निरसा की ओर जा रहा था. इसी दौरान कनचंडीह मोड़ के पास पीछे से आ रही एक ट्रेलर के पीछे से धक्का मार दिया जिससे बाइक डिवाइडर से जा टकराया. पुलिस घटना स्थल पर पहुंचकर क्षतिग्रस्त बाइक का जब्त कर थाना ले गयी.

साइबर ठगी करने वाले दो अपराधी गिरफ्तार

दुमका। रामगढ़ थाना क्षेत्र के अमडापहाड़ी डंगाल से पुलिस ने दो साइबर अपराधियों को भारी रकम के साथ धर दबोचा. शुक्रवार को एसपी पीतांबर सिंह खेरवार ने प्रेसवार्ता में बताया कि साइबर अपराधी गिरोह के दो सदस्य को पुलिस 4,95,500 रुपये के साथ गिरफ्तार करने में सफल रही. गिरफ्तार अपराधियों में बिशेश्वर मंडल एवं आकाश मंडल है. इनके पास से पुलिस ने कई सीम, मोबाइल,एटीम कार्ड, फर्जी ट्रांजेक्शन एवं अपराधियों के निशानदेही पर साइबर अपराधी सरगना घनश्याम के घर से की फर्जी सीम, एटीम कार्ड आदि बरामद किए गए हैं

पुलिस के साथ मारपीट मामले में किया सरेंडर

रांची। पुलिस पदाधिकारी के साथ मारपीट करने और उपद्रव करने के आरोपी साजिद ने रांची सिविल कोर्ट में सरेंडर कर दिया है. जिसके बाद कोर्ट ने उसे न्यायिक हिरासत में होटवार जेल भेज दिया. साजिद पर डेली मार्केट थाना में एक जुलूस के दौरान थाना में पदस्थापित पुलिसकर्मियों के साथ मारपीट करने और पथराव करने का आरोप है. इस संबंध में डेली मार्केट थाना में कांड संख्या 24/2018 दर्ज की गई है. इसे केस के सूचक डेली मार्केट थाना में तत्कालीन सब-इंस्पेक्टरअनिल कुमार गुप्ता हैं. साजिद ने रांची सिविल कोर्ट के सीजीएम की कोर्ट में सरेंडर किया.

नाबालिग से दुष्कर्म का आरोपी दोषी करार

धनबाद। मालिक से दुष्कर्म करने के आरोपी टुंडी थाना क्षेत्र के बुढ़िया ठाको ग्राम निवासी वीरेंद्र मरांडी को पोक्सो के विशेष न्यायाधीश प्रभाकर सिंह की अदालत ने दोषी करार दिया है. अदालत ने सजा के बिंदु पर सुनवाई के लिए 11 दिसंबर की तारीख निर्धारित की है. प्राथमिकी पीड़िता के शिकायत पर टुंडी थाने में दर्ज की गई थी. प्राथमिकी के मुताबिक 15 दिसंबर 2022 को सुबह 8:00 बजे जब पीड़िता शौच करने के लिए अपने घर के पीछे स्थित झाड़ी की ओर गई थी उसी वक्त पहले से घात लगाए बैठे वीरेंद्र ने उसे जबरन पकड़ लिया और उसके साथ दुराचार किया था.

बोकारो के उकरीद मोड़ के पास हुआ हादसा, ग्रामीणों ने की सड़क जाम

ट्रक ने सेवानिवृत्त शिक्षक को रौंदा, पत्नी की हालत नाजुक

संवाददाता। बोकारो

बोकारो जिले के उकरीद मोड़ के समीप शुक्रवार सुबह सड़क हादसा हो गया. यहां मेन रोड में विपरीत दिशा से आ रहे ट्रक ने एक बाइक को टक्कर मार दी. जिससे बाइक चालक की घटनास्थल पर ही मौत हो गयी. वहीं बाइक पर बैठी महिला गंभीर रूप से घायल हो गयी. मृतक की पहचान कसमार थाना क्षेत्र के हिसिम निवासी सेवानिवृत्त सरकारी शिक्षक नागेश्वर महतो (63 वर्षीय) के रूप में हुई है. इधर, घटना के बाद ट्रक चालक गाड़ी छोड़कर फरार हो गया. बोकारो पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और मामले की जांच में जुट गई है. घटना की सूचना के बाद भाजपा नेता आनंद महतो, ग्रामीण व मृतक के परिजन घटनास्थल पर पहुंचकर शव के साथ सड़क जाम कर मुआवजे की मांग करने लगे.

ट्रक की चपेट में आने से बाइक चालक की हुई मौत : जानकारी के अनुसार, नागेश्वर महतो शुक्रवार सुबह पत्नी के साथ बाइक से जैनामोड़ से बोकारो जा रहे थे. इसी बीच उकरीद मोड़ के समीप मेन रोड में बाइक ट्रक की चपेट में आ गया. इस हादसे में ट्रक का चक्का नागेश्वर महतो के कमर के ऊपर चढ़ गया. जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गयी. वहीं उनकी पत्नी भी गिरकर घायल हो गयी. घटनास्थल पर उपस्थित लोगों ने महिला को तुरंत सदर अस्पताल भेजा, जहां उसका इलाज चल रहा है.

इधर, पुलिस की पेट्रोलिंग गाड़ी को रौंदने की कोशिश की

एक एएसआई समेत चार पुलिसकर्मी घायल

पलामू। पलामू जिले के सदर थाना क्षेत्र के जोरकट से दुबियाखाड़ के बीच गश्त कर रही नेशनल हाईवे 75 पर पुलिस की पेट्रोलिंग गाड़ी को रौंदने की कोशिश की गई. इस घटना में एक एएसआई समेत चार पुलिसकर्मी घायल हो गए हैं. पुलिस ने पूरे मामले में कार्रवाई करते हुए आरोपी ड्राइवर को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है. दरअसल, एक बड़े ट्रक का चेसिस पुलिस गश्ती वाहन से टकरा गया,टक्कर मारने के बाद ड्राइवर चेचिस लेकर भागने लगा. इसी क्रम में पुलिस की एक और गश्ती गाड़ी सामने से गुजर रही थी. गश्ती में शामिल पुलिस अधिकारी और जवानों ने चेसिस को रोकने का प्रयास किया. जिसके बाद ड्राइवर ने चेसिस से पुलिस कर्मियों को कुचलने का प्रयास किया. इस घटना में एएसआई सुबोध कुमार, सदर थाने में तैनात श्रीवर और दो अन्य पुलिसकर्मी घायल हो गये. घायल पुलिस अधिकारियों और कर्मियों का इलाज मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में किया गया है. पुलिस अधिकारियों और जवानों की हालत खतरे से बाहर है. गिरफ्तार आरोपी ड्राइवर जमशेदपुर का रहने वाला है. वह एक बड़े ट्रक की चेसिस लेकर जमशेदपुर से मेरठ जा रहा था.

पलामू : अवैध हथियार बनाने वाले तीन धराये

पलामू। हथियार बनाने वाले तीन अपराधियों को पलामू पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है. तीनों अपराधियों के पास से हथियार समेत भारी मात्रा में अन्य सामग्री जब्त की गई है. गिरफ्तार अपराधियों का नेटवर्क नकली सोना की तस्करी से भी जुड़ा है. गिरफ्तार अपराधी देसी तरीके से हथियार बनाते थे और नकली सोने के बिस्कुट का लालच देकर लूट समेत अन्य आपराधिक घटनाओं को अंजाम देते थे. पुलिस गिरफ्तार अपराधियों से पूछताछ कर रही है. जिसके बाद कई बड़े खुलासे होने की उम्मीद है. दरअसल, पलामू पुलिस को सूचना मिली थी कि मेदिनीनगर और उसके आसपास के इलाके में सोना और हथियार की तस्करी की जा रही है. इस सूचना पर पलामू पुलिस ने एक टीम गठित की और अभियान शुरू किया था. अभियान के क्रम में शुरुआत में दो अपराधी पकड़े गए थे. बाद में दोनों की निशानदेही पर एक और अपराधी पकड़ा गया.

बेर तोड़ने के क्रम में खंता में गिरा 10 साल का बच्चा, मौत

संवाददाता। गिरिडीह

सीसीएल कोलियरी क्षेत्र में बनियाडीह पहाड़ी के समीप बैर तोड़ने गए 10 साल के बच्चे करण भुइयां की अवैध कोयला खंता (मुहाना) में गिरने से मौत हो गई. घटना शुक्रवार सुबह करीब दस बजे की है. कोयला तस्करों ने अवैध खनन के लिए वहां मुहाना बनाया था. करण भुइयां पेशरा बहियार का रहने वाला था. सूचना मिलते ही सीसीएल के जीएम बशाक चौधरी, पीओ और मुफ्फसिल थाना प्रभारी कमलेश पासवान घटनास्थल पहुंचे और पूरे मामले की जानकारी ली. बताया गया कि करण भुइयां अपने दोस्तों के साथ बैर तोड़ने गया था. वह अवैध खंता के समीप पेड़ से बैर तोड़ने लगा. इसी क्रम में पैर फिसलने से गहरे खंता में गिर गया. घटना के बाद दोस्तों ने इसकी जानकारी परिजनों को दी. सूचना मिलते ही गांव में कोहराम मच गया. घटनास्थल पर लोगों की भीड़ जुट गई और सभी बच्चे को बाहर निकालने के प्रयास में जुट गए. तब तक बच्चे की मौत हो चुकी थी. काफी मशक्कत के बाद खंता से शव निकाला गया. पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया.

पति गया पंच बुलाने, पत्नी ने लगाई फांसी

संवाददाता। बेरमो

गोमिया थाना क्षेत्र के तुलबुल कमल टोला निवासी संजय किस्कू की पत्नी मनीषा देवी (23) ने बुधवार की सुबह घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली. घटना की जानकारी मिलते ही गोमिया पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई है.

थाना प्रभारी राजेश रंजन ने बताया कि संजय किस्कू ने अपनी पत्नी की गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया था. वह पिछले 10-15 दिनों से घर से लापता थी. गुरुवार की रात पुलिस ने उसे बरामद कर संजय किस्कू को सौंप दिया था. इसके बाद दोनों पति-पत्नी घर चले गए थे. जानकारी के अनुसार, शुक्रवार की सुबह संजय ने पत्नी के घर से बार-बार भाग जाने के मुद्दे पर पंचायत कराने की बात कह गांव के लोगों को बुलाने गया था. जब वह वापस घर लौटा, तो देखा कि दरवाजा अंदर से बंद है. आवाज देने पर भी अंदर से कोई उत्तर नहीं मिला, तब ग्रामीणों की मौजूदगी में दरवाजा तोड़ा गया. कमरे में मनीषा फंदे पर लटकी हुई थी. उसे नीचे उतारा गया और घटना की जानकारी पुलिस को दी. साथ ही मनीषा के माता-पिता को भी सूचना दी गई.

खास बातें

- गोमिया के तुलबुल कमल टोला की घटना
- विवाहिता 10-15 दिनों से घर से गायब थी, हो रही थी तलाश

बोकारो : पिंड्राजोरा पुलिस ने बरामद किया युवक का शव

संवाददाता। बोकारो

बोकारो जिले के पिंड्राजोरा थाना क्षेत्र के बमनिया पथ स्थित बांधगोड़ा पुनर्वास क्षेत्र के हरला मध्य विद्यालय के पास शुक्रवार को पुलिस ने खून से लथपथ एक युवक का शव बरामद किया है. शव की पहचान उसी गांव के रजवार कुल्ही के वंशी रजवार के मंझले पुत्र विनोद रजवार (35 वर्षीय) के रूप में की गयी है. जानकारी के अनुसार युवक का शव कुछ ग्रामीणों ने देखा तो पुलिस को इसकी सूचना दी. सूचना के बाद पुलिस पहुंची और

शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया. पुलिस अधिकारियों के अनुसार प्रथम दृष्टया शव को देखने से प्रतीत होता है कि किसी अज्ञात वाहन के कुचलने से युवक की मौत हुई है. इस संबंध में पुलिस ने मृतक के भाई का आवेदन के आधार पर यूडी केस दर्ज कर मामले का अनुसंधान शुरू कर दिया है. अज्ञात वाहन को पकड़ने के लिए पुलिस सड़क किनारे लगे सीसीटीवी कैमरा के फुटेज को भी खंगाल रही है. बताया जाता है कि मृतक विनोद रजवार तीन भाई है. वह अविवाहित था और माता-पिता मर जाने के बाद इधर-उधर घूमकर ही समय काटता था. इस दौरान वह शराब के नशे में भी अक्सर धुत्त रहता था. घर से निकलने के तीन चार दिन बाद घर लौटता था. गुरुवार रात को भी वह दो तीन दिन बाद घर लौटा था. शुक्रवार को जब वह शौच के लिए घर से निकला था, इसी बीच में अज्ञात वाहन ने कुचल दिया.

पानी भरे गड्ढे से युवक का शव बरामद

रांची। लोअर बाजार थाना क्षेत्र के बहू बाजार स्थित वाईएमसीए के बगल से शुक्रवार को एक व्यक्ति का शव बरामद हुआ है. शव की पहचान मनोज टोप्पो के रूप में हुई है. वह धूमसा टोली चुटिया का रहने वाला था. पानी भरे गड्ढे में शव मिलने की सूचना के बाद लोअर बाजार थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पानी से बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. पुलिस आगे की जांच में जुटी है. पुलिस ने आसपास के लोगों से उस व्यक्ति के बारे में जानकारी जुटाने की कोशिश की.

एंबुलेंस में पुलिस ने जब्त की 10 लाख की अवैध शराब, 3 गिरफ्तार

संवाददाता। लातेहार

मनिका पुलिस ने रांची-मेदिनीनगर राष्ट्रीय उच्च पथ में मटलौंग मोड़ के पास एक एंबुलेंस में भारी मात्रा में अवैध अंग्रेजी शराब जब्त किया है. पुलिस ने मौके पर तीन लोगों को गिरफ्तार किया है. थाना प्रभारी राणा भानु प्रताप सिंह ने बताया कि पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर शाम गश्ती दल के द्वारा मटलोंग मोड़ के पास वाहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था. इसी दौरान लातेहार की ओर से एक एंबुलेंस वाहन आता दिखाई दिया. जब एंबुलेंस चालक ने पुलिस को देखा तो तेज गति से एंबुलेंस को लातेहार की ओर मोड़ कर भागने लगा.

गश्त दल के सदस्यों ने पीछा कर उसे एंबुलेंस को दुमहान पुल के पास पकड़ा. एंबुलेंस की जांच करने पर एंबुलेंस के फर्श व छत पर अलग से बनाये गये बॉक्स में भारी संख्या में अवैध अंग्रेजी शराब बरामद किया गया. इसकी अनुमानित मूल्य तकरीबन 10 लाख है. पुलिस ने एंबुलेंस में सवार तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया. इनमें मो अफसर, मो आजाद अंसारी उर्फ फेकुआ और मो हाशिम अंसारी का नाम शामिल है. तीनों कांके रोड, भिठा बस्ती, पोस्ट गांधीनगर व थाना गोंडा जिला रांची के निवासी है.

खास बातें

- पुलिस ने मटलोंग मोड़ के पास चलाया चेकिंग अभियान
- पुलिस को देखते ही एंबुलेंस लातेहार की ओर भागने लगा

जब्त शराब : पुलिस ने एंबुलेंस से श्री एक्स रम 750 एमएल बोतल के 20 पेटी, 500 बोतल बिना पेटी के, मैकडॉवेल नंबर वन के 375 एमएल का कुल 450 बोतल बरामद किया गया है. छापेमारी दल में थाना प्रभारी राणा भानु प्रताप सिंह, पुअनि राजकुमार तिगा, मिश्रा मांझी, मनोज कुमार दुबे व धर्मेंद्र नाथ राय समेत सशस्त्र बल के जवान शामिल थे.

'प्रतिबिंब' ऐप साइबर ठगों के खिलाफ बना हथियार

228 हुए गिरफ्तार, 595 मोबाइल जब्त

सौरभ सिंह। रांची

साइबर अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए प्रतिबिंब ऐप कारगर साबित हो रहा है. ऐप लॉन्च होने के एक महीने के अंदर राज्य के अलग-अलग जिलों से 228 साइबर ठग सलाखों के पीछे पहुंच गये हैं. इतना ही नहीं इनके पास से 595 मोबाइल फोन, 901 सिमकार्ड बरामद हो चुके हैं. इसके अलावा साइबर अपराधियों के खिलाफ 55 एफआईआर अलग जिलों में दर्ज हुई हैं. अगर जिलावार आंकड़ों पर नजर डालें तो सबसे अधिक 103 साइबर अपराधी देवघर जिले से गिरफ्तार हुए हैं.

07 नवंबर को प्रतिबिंब ऐप हुआ था लॉन्च : झारखंड सीआइडी ने पिछले महीने सात नवंबर को प्रतिबिंब ऐप लॉन्च किया गया था. इसके बाद से ही पुलिस इसके माध्यम से साइबर क्रिमिनल्स पर शिकंजा कस रही है. साइबर अपराध को रोकने के लिए सीआईडी झारखंड का ऐप 'प्रतिबिंब' पूरे देश के लिए मॉडल बनेगा.केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधीन आने वाली संस्था आई 4 सी की पहल पर झारखंड सीआईडी ने 'प्रतिबिंब' के इस्तेमाल की अनुमति दूसरे राज्यों को भी दी है. इन राज्यों की पुलिस को इसका लॉगिन व आईडी दिया गया है.

किस जिले से कितने अपराधी हुए गिरफ्तार

- देवघर : 103
- धनबाद : 08
- गिरिडीह : 41
- हजारीबाग : 19
- जमशेदपुर : 04
- जामताड़ा : 39
- पाकुड : 05
- गोड्डा : 02
- गढ़वा : 01
- कोडरमा : 06
- कुल : 228

दुस्साहस चोरों ने घर के अलमारी में रखे लाखों के जेवरात और बर्तनों की चोरी कर ली

लॉ कॉलेज के समीप बालाजी गली से 7 लाख की चोरी

संवाददाता। धनबाद

लॉ कॉलेज के समीप स्थित बालाजी कॉलोनी गली नंबर 6 में रहने वाले आर्मी जवान शशि कुमार के घर गुरुवार देर रात 7 लाख से अधिक रुपए की चोरी हो गई. मामला शुक्रवार की सुबह प्रकाश में आया. घर के लोग तेंदुआ अपने पुराने घर गए हुए थे. जिस घर में चोरी हुई उस घर में घर के कोई भी सदस्य रात में मौजूद नहीं थे. जिसका फायदा उठाते हुए चोरों ने घर के दरवाजे को तोड़कर घर के अलमारी में रखे लाखों के जेवरात और बर्तनों की चोरी कर ली.

आर्मी जवान शशि कुमार ने बताया

वहीं, पूरे मामले की जानकारी देते हुए आर्मी जवान शशि कुमार ने बताया कि घर पर शादी का माहौल है जिस कारण घर के सभी लोग नए घर पर मौजूद नहीं थे. जिसका फायदा चोरों ने उठाया साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि ऐसी घटना लगातार क्षेत्र में पिछले कई दिनों से देखने को मिल रही है. जवान असम में पोस्टिंग है. वहीं मामले को सूचना सदर थाने को दी गई पुलिस जांच में जुट गई है.

अपराधियों ने की दो लाख की छिनतई

धनबाद। सदर थाना क्षेत्र के तेलीपाड़ा आदर्श नगर के पास एक महिला को बरगला कर सुबह के 10 बजे लगभग अपराधियों ने दो लाख की छिनतई की घटना को अंजाम दिया. वहीं, भुक्तभोगी महिला प्रेमलता साह ने बताया की दो लोग थे. एक पहले आया और जो पता पूछ रहा था. उसके बाद दूसरा आकर मेरे दिमाग को डायवर्ट कर दिया. इसी बीच उन्होंने अकेला देख मेरे गले का सोने का चेन, मंगलसूत्र तथा अंगूठी और झोले में रखा समान लेकर भाग निकले. झोला में राशन कार्ड, दो बोड़ा और मोबाइल था. ट्रैक करने के बाद मोबाइल आईएसएम के पास मिल गया. महिला का कहना है की मेरा दिमाग को डायवर्ट कर दिया था. महिला प्रेमलता हाइस वाइफ है और सुबह टेलर के पास कपड़ा लाने जा रही थी. वहीं महिला ने बताया की पर्स में 100 का एक नोट था और 10 का टीम सिक्का था. महिला थाने में शिकायत करने आई थी और बार बार यही बोल रही थी की दिमाग को डायवर्ट कर लिया था. महिला का कहना हैं की लगभग 2 लाख के जेवरात थे. महिला थाने में शिकायत दर्ज करवाने पहुंची.

अग्रवाल विद्यालय की नौवीं का छात्र दो दिनों से लापता

- परिजन काफी परेशान, थाने से लगाई बेटे को सकुशल खोज निकालने की गुहार

संवाददाता। तिसरी (गिरिडीह)

तिसरी के पांडेय मोहल्ला निवासी राजू दयाल का 15 वर्षीय पुत्र सागर कुमार पिछले दो दिनों से लापता है. सागर अग्रवाल प्लस टू विद्यालय तिसरी में नौवीं कक्षा का छात्र है. परिजनों ने सागर की काफी खोजबीन की, लेकिन उसका कहीं भी पता नहीं चल पा रहा है. बताया गया कि सागर कुमार गुरुवार सुबह घर से निकला था, लेकिन जब शाम तक घर वापस नहीं आया तब परिजनों की बेचैनी बढ़ गई. पिता राजू दयाल गुरुवार देर रात तक तिसरी व अन्य गांवों में सागर की खोजबीन की, किंतु सागर का कहीं भी पता नहीं चला. उसके माता-पिता काफी चिंतित हैं. थक हार कर राजू दयाल ने तिसरी थाना में आवेदन देकर सागर को सकुशल ढूंढ निकालने की गुहार लगाई है.

केंद्रीय टीम जल्द सौंपेगी रिपोर्ट, हाथियों को बचाने के लिए दिए हैं कई सुझाव

झारखंड में 45 प्रतिशत एलिफैंट कॉरिडोर हो चुके हैं डिस्टर्ब, लगातार हो रही हाथियों की मौत

अमित सिंह। रांची

झरखंड में करीब 560 हाथी रह गये हैं. वर्ष 2023 की पिछली गणना में हाथियों की संख्या 688 थी. प्रदेश में लगातार हाथियों की संख्या कम हो रही है, जबकि देश के जंगली हाथियों की कुल संख्या के 11 प्रतिशत हाथी झारखंड में हैं. संख्या कम होने के बाद भी हाथियों का झुंड जंगल से बाहर निकल रहा है. हाथी और मुनष्य के बीच टकराव बढ़ रहे हैं. हाथी रेल से टकराकर और बिजली के करंट से भी मर रहे हैं. केंद्रीय गृह मंत्रालय की टीम ने हाथियों के मरने की घटना को गंभीर बताया है. टीम ने हाथियों की आश्रयस्थली को क्षति होने का मुख्य कारण खनन क्षेत्र में बढोत्तरी, सड़क एवं रेल लाइन का विस्तार बताया है. वहीं हाथियों के कॉरिडोर में आबादी की बसावट को सबसे बड़ा कारण बताया है. टीम ने पाया है कि झारखंड में 45 प्रतिशत एलिफैंट कॉरिडोर डिस्टर्ब हो चुके हैं, जिस वजह से हाथी जंगल के बाहर निकलकर आबादी वाले क्षेत्र में आ जा रहे हैं.

जांच टीम में कौन-कौन थे शामिल : टीम में वन्य जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो के संयुक्त निदेशक एचवी गिरीशा, बोर्ड के सदस्य एन. लक्ष्मीनारायण, रांची के वन संरक्षक पीआर नायडू और झारखंड बिजली विभाग के महाप्रबंधक मंतोषमनी सिंह, जमशेदपुर की डीएफओ ममता प्रियदर्शी आदि शामिल थे.

मंत्रालय हाथियों की मौत पर गंभीर

झारखंड में पूर्वी सिंहभूम जिले में 20 दिनों के दौरान 7 हाथियों की मौत करंट लगने से हुई है. इसमें पिछले दिनों करंट लगने से एक साथ पांच हथियों की मौत हो गई थी. हाथियों के मौत की घटना पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने संज्ञान लिया. मंत्रालय ने हथियों की मौत के कारणों का पता लगाने के लिए एक जांच टीम गठित किया था. टीम ने चाकुलिया, मुसाबनी सहित कई वन क्षेत्रों का दौरा किया. हाथियों की मौत की वजहों के साथ-साथ यह भी पता लगाया है कि इन घटनाओं के लिए कौन-कौन जिम्मेवार है. आगे इस तरह की घटनाएं कैसे रोकी जा सकती हैं, टीम ने इसकेबारे में भी पता लगाया है. टीम जल्द ही अपनी रिपोर्ट मंत्रालय को सौपेंगी. टीम ने जांच में पाया है कि अगर जल्द उपाय नहीं किए गए, तो एलिफैंट कॉरिडोर क्लीयर नहीं किया गया, तो ऐसी घटनाएं होते रहेंगी. वहीं जंगल से निकल कर हाथी आबादी वाले क्षेत्र में भोजन के लिए आएंगे.

प्रदेश में 17 एलिफैंट कॉरिडोर चिह्नित

झारखंड के भीतर और राज्यों से जुड़े 17 एलिफेंट कॉरिडोर मान्य किए गए हैं. कॉरिडोर जगह-जगह खंडित हो गए हैं. जिस वजह से हाथी भटक कर भोजन का तलाश में गांव और आबादी वाले क्षेत्र में आ रहे हैं. झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और दक्षिण पश्चिम बंगाल का 21 हजार वर्ग किलोमीटर का इलाका हाथियों का आवास है. मानव-हाथी संघर्ष के चलते देशभर में जितने लोगों की जान जाती है, उनमें से 45 फीसदी इसी इलाके से हैं. टीम ने कहा है कि कॉरिडोर ऐसे हों, जहां मानवीय गतिविधियां न्यूनतम हों. देश के 22 राज्यों में 27 हाथी कॉरिडोर अधिसूचित हैं.

मुख्य कॉरिडोर

सिल्ली-अनगड़ा, भरनो-बेरो-कारा, दलमा-आसनबनी, दलमा-रूगाई, अंजादबेरा-बिचाबुरू कॉरिडोर, भागाबिल्ला-रत्नसाई कॉरिडोर, जामपानी-भागालबिला कॉरडोर, सियालजोर-धोबाधोबिन कॉरिडोर, लेपांग-डुमरिया कॉरिडोर, अंकुआ-अंबिका कॉरिडोर, रायबेरा-पुलबाबुरू कॉरिडोर, डालापानी-सकुलारा कॉरिडोर, दलापानी-काकराझोर अंतरराज्यीय कॉरिडोर, डुमरिया-नयाग्राम कॉरिडोर और डुमरिया-कुंडलुका और मुरकंजिया कॉरिडोर.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा

मेष सप्तम चंद्रमा शुक्र का योग है. किये गये परिश्रम सार्थक होने में विलंब होगा. वहीं परीक्षा-प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करेंगे. पारिवारिक जीवन सुखमय होगा. खर्चों की अधिकता रहेगी. किया गया कार्य लाभ देगा.

वृषभ उदर विकार से बचना चाहिए. बहुत जरूरी है तो ही ऋण लें. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. काम-काज के लिए अच्छा रहेगा. परिवार के साथ अच्छा समय व्यतीत होगा. मन में कुछ नकारात्मक विचार आ सकते हैं.

मिथुन माता के स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है. घरेलू विवाद कोशिश करने से सुलझ सकता है. भाग्योदय लेट संभव है. पारिवारिक सुख अच्छा मिलेगा. मिथ्या आरोप लगने के कारण क्रोध बढ़ सकता है.

कर्क समय सामान्य है. किसी महिला से विवाद हो सकता है. सोच विचार कर कार्य करें. काम काज सामान्य रहेगा. मन प्रसन्न रहेगा. नवीन मित्रता हो सकती है. परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य में कमी देखने को मिल सकती है.

सिंह भाई के साथ कहीं यात्रा का योग है. परिवार के सदस्यों की तरफ से सुख और सहयोग मिलेगा. आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बना रहेगा. शुभफलों की प्रधानता रहेगी. अपनों से विवाद से दूर रहें.

कन्या रुखे व्यवहार से बनी बनाई बात बिगड़ सकती है. क्रोध पर नियंत्रण रखें. काम काज सामान्य रहेगा. परीक्षा एवं प्रतियोगिता में आशाजनक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं. किसी से मन-मुटाव हो सकता है.

तुला काम काज सामान्य रहेगा. आज आपका मन किसी भी काम में पूरी तरह से नहीं लग पाएगा. आपके लिए निराशाजनक हालात पैदा हो सकते हैं.परिवार या मित्र से मतभेद हो उत्पन्न हो सकते है. विवाद से बचें.

वृश्चिक खर्च में वृद्धि का योग है. पर कामकाज में सफलता मिलेगी. दूसरों के साथ अच्छे संबंध बने रहेंगे. स्वास्थ्य को लेकर चिंताएं बन सकती है. वाहन के प्रति सावधानी रखने की आवश्यकता है. अन्न का दान करें.

धनु पिता से लाभ का योग है. आय के लिए किया गया प्रयास सफल होगा. आर्थिक स्थिति अच्छी होगी. वाहन चलाते समय सावधानी बरतें. खर्चे में बढ़ोतरी होगी. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. शिवलिंग पर दूध और जल अर्पण करें.

मकर सरकारी कार्य में गति मिलेगी. कोई बड़ी बाधा दूर होगी. कामकाज में सफलता मिलेगी. शिक्षा-प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. परिवार के लोगों के साथ अच्छा तालमेल बना रहेगा. शिवलिंग पर दूध अर्पण करें.

कुंभ समय बहुत ही उत्तम है. जीवन साथी की भावनाओं की कद्र करें. शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी. स्वभाव में गंभीरता एवं एकाग्रता बनी रहेगी. परिवार की तरफ से मन प्रसन्न रहेगा. आलस का त्याग करें. काली वस्तु का दान करें.

मीन कोई मानसिक हानि हो सकता है. करीबियों की भावनाओं की कद्र करें. आपके मन में एक नया उत्साह और जोश दिखाई देगा. आपके कार्य और प्रभाव से कामकाज में लाभ होगा. स्वास्थ्य का ध्यान रखें. पीली वस्तु का दान करें.

एक्सआईपीटी में लगाया गया कैंपस ड्राइव

रांची। जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलीटेक्निक एंड टेक्नोलॉजी (एक्सआईपीटी) में कैंपस ड्राइव का आयोजन किया गया. इस कैंपस ड्राइव में महाराष्ट्र के लक्ष्मी अग्नि कॉम्पोनेन्ट और फोर्जिंग प्राइवेट लिमिटेड आई हुई थी. इसमें झारखंड के अलग-अलग पोलिटेक्निक कॉलेजों ने भाग लिया. एक्सआईपीटी के लास्ट इयर के मेकैनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों ने इसमें भाग लिया.

जुटेंगे बंगभाषी : विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलनरत हैं राज्यभर के बंगभाषी

झारखंड बांग्ला भाषी उन्नयन समिति 11 को राजभवन के समक्ष देगी धरना

खास बातें

- पूर्वी सिंहभूम जिले से लगभग 600 लोग रांची जाएंगे
- धरना को लेकर जिलास्तर पर चल रही है जोरदार तैयारी

संवाददाता। जमशेदपुर

झारखंड बंगला भाषी उन्नयन समिति के बैनर तले बंग समुदाय के विभिन्न मांगों के समर्थन में राज्यभर के लोग 11 दिसंबर को रांची राजभवन के समक्ष धरना देंगे. इसके लिए जिलास्तर पर जोरदार तैयारी चल रही है. उक्त जानकारी शुक्रवार को साकची स्थित द बंगाल क्लब में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में समिति के प्रदेश अध्यक्ष अचिंतम गुप्ता (अपु दा) व प्रदेश उपाध्यक्ष अपर्णा गुहा ने दी. उन्होंने बताया कि बंग समुदाय ने पूर्व में सरकार से रेलवे स्टेशनों का नाम बंगला में भी लिखने, स्कूलों में बंगला पुस्तक व शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा सभी स्कूलों में बंगला भाषा की पढ़ाई शुरू करने, बोर्ड निगम आदि में बंगभाषियों को उचित प्रतिनिधित्व देने, बंगला एकेडमी का गठन करने आदि की मांग की थी. यही नहीं कई बार प्रशासन व सरकार स्तर पर भी आवाज बुलंद की गई. संबंधित जन प्रतिनिधियों को ज्ञापन भी सौंपा गया, इसके बावजूद इस ओर कोई पहल नहीं की गई. इसलिए समाज में काफी आक्रोश है और राज्यभर के बंगभाषी आगामी 11 दिसंबर को राजभवन में धरना के लिए जुटेंगे. पूर्वी सिंहभूम जिले से लगभग 600 लोग रांची जाएंगे.

बंगभाषियों से महाधरना में शामिल होने का आग्रह

उन्होंने बताया कि शहर व इसके आसपास रहनेवाले लोग सुबह 8 बजे साकची आमबगान मैदान में जुटेंगे और वहां से एकसाथ रांची मोरहाबादी मैदान के लिए रवाना होंगे. अन्य जिले के लोग भी मोरहाबादी मैदान में इकट्ठा होकर सुबह लगभग 11 बजे राजभवन के लिए पैदल मार्च शुरू करेंगे. इसके बाद राजभवन में विरोध जताते हुए संबंधित अधिकारी को अपनी मांगों से संबंधित लिखित मांग पत्र सौपेंगे. समिति के पदाधिकारियों ने अन्य बंग भाषियों से भी इस मुद्दे पर समर्थन देने व महाधरना में शामिल होने का आग्रह किया है. संवाददाता सम्मेलन में अचिंतम गुप्ता, अपर्णा गुहा के अलावा विश्वनाथ घोष, सामंतो कुमार, पार्थ सारथी सेन, देवाशीष नाहा, शुभम गोराई, राजेश राय भी मौजूद थे. इस मौके पर अपर्णा गुहा ने बताया कि ''बंग बंधु'' के सदस्य सुबह 7 बजे परसुडीह विवेकानंद क्लब में एकत्रित होंगे व साकची आमबगान मैदान के लिए रवाना होंगे. इसमें शामिल होनेवालों के लिए ड्रेस कोड तय किया गया है. महिलाएं एक तरह की साड़ी (सफेद-लाल) व पुरुष कुर्ता पैजामा में होंगे.

आओ जानें

झारखंड के जलप्रपात-दो

हुंडरू जलप्रपात : यह जलप्रपात रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड में स्वर्णरेखा नदी पर स्थित है इसकी ऊंचाई लगभग 74 मीटर है, जो झारखंड का सबसे ऊंचा जलप्रपात है और भारत का 10 वा सबसे ऊंचा जलप्रपात है. यहां वर्ष भर पर्यटकों का आना जाना लगा रहता है.

हेपाद जलप्रपात: यह जलप्रपात रांची जिले में रांची- बिसुनपुर मार्ग में घाघरा नदी पर स्थित है. इसकी जलधारा अधिक उचाई से नहीं गिरती, फिर भी इसके आस पास का हरा भरा दृश्य पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है.

घाघरी जलप्रपात : यह जलप्रपात गुमला जिले में

नेतरहाट पठार के निकट घाघरी नदी पर स्थित है. इसकी उचाई लगभग 43 मीटर है. इसकी जलधारा अधिक ऊंचाई से नहीं गिरती. फिर भी इसके आसपास का दृश्य पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है.

प्रेमाघाघ जलप्रपात : यह जलप्रपात गुमला जिले में स्थित है. जो रायडीह प्रखंड में स्थित है. इसकी जलधारा अधिकऊंचाई से नहीं गिरती फिर भी इसके आस पास का हरा भरा दृश्य पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है.

पारा थ्रो बॉल खिलाड़ियों ने की राज्यपाल से मुलाकात

रांची। भूटान को पारा थ्रो बाल प्रतियोगिता में हराकर लौटे भारतीय दल में शामिल झारखंड के खिलाड़ियों ने राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मुलाकात की. इस दौरान राज्यपाल ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए जीत के लिए बधाई दी. इस दौरान भारतीय टीम के कप्तान मुकेश कंचन, सनोज महतो और महिला टीम से महिमा उरांव, असुंता टोप्पो एवं पतरस तिर्की उपस्थित थे.

उषा मार्टिन विवि के छात्रों ने किया डीडबल्यूओ कार्यालय का घेराव

डीडबल्यूओ कार्यालय का घेराव करते उषा मार्टिन यूनिवर्सिटी के छात्र एवं छात्राएं.

संवाददाता। रांची

उषा मार्टिन यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं ने शुक्रवार को रांची जिला कल्याण पदाधिकारी (डीडब्ल्यूओ) संगीता शरण के कार्यालय का घेराव किया. 60 की संख्या में घेराव करने आये छात्रों का आरोप है कि बाकी यूनिवर्सिटी के छात्रों को छात्रवृत्ति दे दी गयी है. लेकिन उन्हें अभी तक छात्रवृत्ति नहीं मिली है. उन्होंने जिला कल्याण विभाग पर उषा मार्टिन यूनिवर्सिटी के छात्रों के साथ भेदभाव करने का आरोप लगाया. छात्रों का कहना है कि पिछले नौ माह से लगातार वो स्कॉलरशिप की मांग को लेकर जिला कल्याण विभाग के पदाधिकारियों के कार्यालय के चक्कर लगा रहे हैं. लेकिन अभी तक उनकी मांगों को लेकर सकारात्मक पहल नहीं की गयी.

विभाग से पैसा मिलने के बाद दी जाएगी छात्रवृत्ति : इस संबंध में जिला कल्याण पदाधिकारी संगीता शरण ने कहा कि सरकार के नियमानुसार, पहले सरकारी कॉलेज और विश्वविद्यालयों के छात्रों को ई-कल्याण छात्रवृत्ति देने का प्रावधान है. इसके बाद निजी विश्वविद्यालय के छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है. रांची जिला में ओबीसी छात्रों को 36 करोड़, एससी को 32,59,000 और एसटी को 13 करोड़ 47 लाख की छात्रवृत्ति की राशि उनके बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर दी गयी है. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कुछ छात्रों का अकाउंट आधार से लिंक नहीं है. इसलिए उनके अकाउंट में अभी तक पैसा ट्रांसफर नहीं हुआ है. संगीता शरण ने कहा कि ओबीसी छात्रों के लिए विभाग से और पैसा मांगे गये हैं. पैसा मिलते ही छात्रों के अकाउंट में भी छात्रवृत्ति की राशि ट्रांसफर कर दी जाएगी.

शहीदी सप्ताह होने की वजह से सादे तरीके से मनाया जाएगा गुरुपर्व

जमशेदपुर । पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में चंद्रकोना स्थित गुरुद्वारा नानकसर प्रबंधन ने सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (सीजीपीसी) के निवेदन का सम्मान करते हुए गुरु नानक देव जी के 554वें गुरुपर्व को बेहद सादे तरीके से मनाने का फैसला किया है. शुक्रवार को सीजीपीसी के प्रधान सरदार भगवान सिंह और महासचिव अमरजीत सिंह ने गुरुद्वारा नानकसर चंद्रकोना साहिब के प्रधान सरदार जितेन्द्रपाल सिंह से फोन पर संपर्क कर इससे सम्बंधित तर्क देते हुए निवेदन किया था. बताया था कि प्रत्येक वर्ष दिसम्बर माह में 21 से 28 तारीख तक चारों साहिबजादों का शहीदी दिवस मनाया जाता है. इस दौरान सिख समाज में किसी भी तरह की खुशी के कार्यक्रम आयोजित नहीं किये जाते हैं. इसलिए शहीदी दिहाड़े को ध्यान में रख कर गुरु साहिब के प्रकाश पर्व को सादे तरीके से मनाया जाये. सीजीपीसी की इस गुजारिश को गुरुद्वारा नानकसर चंद्रकोना साहिब के प्रधान सरदार जितेन्द्रपाल सिंह ने सहर्ष स्वीकार करते हुए कार्यक्रम में तबदीली के लिए तत्काल सहमति दे दी. जितेन्द्रपाल सिंह ने यकीन दिलाया कि नगर कीर्तन के दौरान किसी प्रकार की आतिशबाजी नहीं की जाएगी.

संत अन्ना नोविटिएट हाउस में मनाया गया निष्कलंक गर्भागमन पर्व

11 पुत्रियों ने धारण किया आजीवन व्रत

संवाददाता। रांची

रांची के सामलौंग स्थित संत अन्ना नोविटिएट हाउस में शुक्रवार को माता मरियम का निष्कलंक गर्भागमन पर्व मनाया गया. साथ ही इस पवित्र दिन पर में संत अन्ना की 11 धर्मपुत्रियों ने आजीवन व्रत धारण किया एवं सिस्टर बन गयीं. इस अवसर मुख्य अतिथि रांची धर्म प्रांत के महाधर्माध्यक्ष बिशप फेलिक्स टोप्पो थे. बिशप टोप्पो ने कहा कि यह सभी धर्म बहनें प्रभु की ओर से बुलाई गई हैं.आज के सुंदर दिन माता मरियम के गर्भागमन के पर्व पर येशु की बुलाहट ने इन्हें प्रेरित किया है. माता मरियम के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि माता मरियम के जीवन की तरह व्रत के प्रति ईमानदार रहें. धर्म संघीय जीवन से येशु ख्रीस्त की सच्ची सेविका बनें. मौके पर संत अन्ना की मदर जनरल लिली टोप्पनो ने सभी व्रत धारिणी बहनों को आशीर्वाद दिया एवं आजीवन प्रभु की सेवा में आगे बढ़ने की कामना की. इस मौके पर सभी 11 व्रत धारिणी पुत्रियों के माता पिता एवं परिजन शमिल हुए. इस अवसर पर रांची प्रोविंशियल मंजूला किंडो एवं समस्त संत अन्ना की धर्म बहनें उपस्थित रही. व्रत धारण करने वालों में सिस्टरों में सुनीता बेसरा, मनीषा तिर्की, शालीन कुजूर, बसंती चार्गाट, रीना मिंज, अनूप तिर्की, रानी प्रिया, एनालिमा मिंज, सोमानी बरवा, अर्चना तिर्की, अन्ना बरवा शामिल हैं.

संत अन्ना नोविटिएट हाउस में आजीवन व्रत धारण करती अन्ना पुत्रियां.

उर्सुलाइन की सात धर्म बहनों ने मन्नत उठायी

रांची। कैथोलिक कलीसिया ने शुक्रवार को माता मरियम के निष्कलंक गर्भागमन पर्व मनाया. कांके स्थित उर्सुलाइन प्रोविंशियलेट में आयोजित इस पर्व समारोह में उर्सुलाइन की सात धर्म बहनों ने सिस्टर बनकर आजीवन मन्नत धारण की. इस अवसर पर मुख्य अतिथि डालटनगंज के बिशप थियोडोर मास्करेन्हास ने समारोह में मिस्सा अनुष्ठान कर व्रत धारण कराया. बिशप मास्करेन्हास ने कहा कि आज से हमारी इन बहनों को एक नये रास्ते पर चलना है, क्योंकि प्रभु ने उन्हें नवीकृत किया है. संत पौलुस के अनुसार प्रभु हमें मां के गर्भ में आने के पहले ही चुन लेते हैं. उन्होंने ही हमें इस रास्ते पर बुलाया है. प्रथम मन्नत धारण करने वालों में सिस्टर एग्नेसिया सोरेन, सिस्टर लिली बुढ़, सिस्टर ज्योति जोजो, सिस्टर शिल्पा टोपनो, सिस्टर प्रीति लकड़ा, सिस्टर कंचन कुजूर व सिस्टर मोनिका बिलुंग शामिल हैं.

चिकित्सा घुटने के असहनीय दर्द से परेशान मरीज का हुआ सफल इलाज

राज्य में पहली बार मेडिका में यूनिकॉन्डाइलर सर्जरी

संवाददाता। रांची

57 वर्षीय मुख्तार अंसारी घुटने के असहनीय दर्द से काफी परेशान थे. उनको चलने फिरने में काफी परेशानी हो रही थी. उन्होंने मेडिका के हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ राकेश अग्रवाल से दिखाने का निर्णय किया. डॉ राकेश ने एक्सरे जांच में पाया कि मरीज के घुटने का अंदरूनी हिस्सा घिस गया है. फिर डॉ. राकेश ने यूनिकॉन्डाइलर विधि द्वारा सर्जरी का विकल्प चुना, क्योंकि यूनिकॉन्डाइल एक ही सिद्धांत पर काम करता है. केवल क्षतिग्रस्त हिस्से को बदला जाता है. डॉ. राकेश ने घुटने के केवल उस हिस्से का आंशिक रिप्लेसमेंट किया, जो खराब था. मरीज अब पूरी तरह दर्द रहित जीवन का आनंद ले रहे हैं.

सर्जरी के बाद डॉक्टर, पारा मेडिकल कर्मी तथा परिजन के साथ मुख्तार अंसारी

डॉ. राकेश ने बताया कि इस तरह की सर्जरी झारखंड में पहली बार मेडिका अस्पताल में हुई है.आम तौर पर ओस्टियो आर्थराइटिस बढ़ने पर पूरे घुटने की सर्जरी की जाती है, लेकिन अब ऐसा नहीं है. डॉ. राकेश के मुताबिक यूनिकॉन्डाइलर में केवल अस्वस्थ हिस्से का ही इलाज होता है. घुटना 3 कम्पार्टमेंट में बना होता है- मेडियल कम्पार्टमेंट, लाटरल कम्पार्टमेंट और पाटेलौफेमोरल कम्पार्टमेंट. यूनिकोनडलर नी रिप्लेसमेंट सर्जरी ओस्टियो आर्थराइटिस को ठीक करता है, जो घुटने के अंदर कम्पार्टमेंट में होती है. इस सर्जरी के जरिए घुटने के स्वस्थ हिस्से को बचाकर रखा जाता है और घुटने के अस्वस्थ हिस्से का ही इलाज किया जाता है. इस प्रोसिजर में हड्डियों का विभाजन कम से कम किया जाता है इससे दर्द कम होता है और मरीज जल्दी ही रिकवरी कर आसानी से चल-फिर सकता है. अगर घुटने के सिर्फ एक कम्पार्टमेंट में ओस्टियो आर्थराइटिस है तो डॉ.राकेश के अनुसार ऑर्थोपेडिक सर्जरी कराया जाना चाहिए, लेकिन ये ध्यान रखना होगा कि टोटल नी ट्रांसप्लांट के बजाय पार्शल नी ट्रांसप्लांट ही करवाएं. यानी सिर्फ घुटने के खराब हिस्से की ही सर्जरी हो.

उपलब्धि झारखंड की प्रतिभा ने लंदन में छोड़ी छाप, लहराया परचम

आदिवासी छात्र को लंदन विवि से मिला डिस्टिंक्शन

संवाददाता। रांची

झारखंड ने लंदन में अपनी छाप छोड़ी है. राज्य के आदिवासी छात्र अजय हेंब्रम ने लंदन यूनिवर्सिटी से डिस्टिंक्शन प्राप्त करते हुए डिग्री हासिल की है. इसके लिए अजय ने राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को थैंक्यू भी कहा है. अजय पूर्वी सिंहभूम के भाटिन गांव के रहने वाले हैं. उन्होंने कहा कि इसका श्रेय मुख्यमंत्री और मंत्री चंपई सोरेन को जाता है, जिन्होंने युवाओं को वैश्विक मंच पर सफलता का परचम लहराने का अवसर मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना के जरिए दिया.

सीएम ने ट्वीट कर बढ़ाया हौसला : मुख्यमंत्री ने ट्वीट कर कहा कि आदरणीय बाबा दिशोम गुरु शिबू सोरेन कहा करते हैं कि गरीब और वंचित समाज के युवाओं को शिक्षा के अवसर मिलते हैं तो सिर्फ वो ही नहीं, उनका घर, गांव और समाज भी आगे बढ़ता है. आप सदैव अपनी मेहनत और लगन से सफलता की बुलंदियों को छूते रहें. मुख्यमंत्री ने अजय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उसे बधाई और शुभकामनाएं दी. मुख्यमंत्री ने कहा झारखंड के युवाओं के साथ उनका यह भाई हमेशा खड़ा है और रहेगा.

लंदन विश्वविद्यालय परिसर में अपने सहपाठियों के साथ छात्र अजय हेंब्रम.

50 युवा विदेश में प्राप्त कर रहे उच्च शिक्षा

मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना के तहत अब तक राज्य के 50 युवा ब्रिटेन के विभिन्न यूनिवर्सिटी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं, या कर रहें हैं. जिन्होंने पढ़ाई पूरी कर ली है उनमें से कुछ विदेश में ही नौकरी कर रहे हैं और कुछ देश में ही उच्च संस्थानों में नौकरी कर रहे हैं. इनमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े और अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र-छात्राएं शामिल हैं. इन सभी को राज्य सरकार शत-प्रतिशत छात्रवृत्ति प्रदान कर रही है.

किरीबुरु

भींगकर अपना काम करने को मजबूर हुए मजदूर

तूफान मिचौंग की वजह से हुई भारी वर्षा के बीच भी किरीबुरु-मेघाहातुबुरु के मजदूर वर्षा में भींगकर प्रतिदिन अपना काम करने को मजबूर हुए. [illegible]

पानी में भींगकर कचरा उठाते मजदूर.

चक्रवाती तूफान मिचौंग अब थम गया है. लेकिन पिछले दो दिन की बारिश ने राज्य की फसलों को काफी नुकसान पहुंचाया है. बारिश और तेज हवा से धान की फसल को ज्यादा बर्बादी हुई है. आमतौर पर दिसंबर के महीने में यहां धनकटनी होती है. कई जिलों में धान की कटाई शुरू भी हो गई है. इस बीच चक्रवाती तूफान से होने वाली बारिश से खेत में काटकर रखे धान भींग गए हैं. किसानों का कहना है कि धान के भींगने से अब इससे चावल के दाने ठीक नहीं निकलेंगे. आंधी-पानी से हम किसानों का काफी नुकसान हुआ है. उस नुकसान की भरपाई के लिए किसानों ने मुआवजे की मांग की है. कइयों का कहना है कि कर्ज लेकर धान की फसल लगाई थी. अब समझ में नहीं आ रहा है कि इसकी भरपाई कैसे होगी. इस बेमौसम बारिश से सब्जियों की खड़ी फसल को भी खासा नुकसान पहुंचा है. दूसरी ओर दो दिन की लगातार बारिश के बाद बादल छंटते ही ठंड का तीखापन और बढ़ गया है. आंधी-पानी के दौरान बाजार भी प्रभावित रहे. सब्जी विक्रेताओं का कहना है कि ग्राहकों के नहीं आने से सब्जियां खराब हो गई और काफी नुकसान उठाना पड़ा है. समझ में नहीं आ रहा है कि इसकी भरपाई कैसे होगी. शुभम संदेश की टीम ने झारखंड के विभिन्न जिलों में चक्रवाती तूफान मिचौंग के असर की जानकारी हासिल की है. पेश है रिपोर्ट.

आंधी-पानी से हम किसानों की फसलें हुई बर्बाद

नुकसान का मुआवजा दे सरकार

रांची

धान और सब्जियों को बारिश से नुकसान

चक्रवाती तूफान से हुई बेमौसम बारिश से रांची और आसपास के क्षेत्रों में धान और सब्जी की फसल को काफी नुकसान पहुंचा है. ग्रामीण इलाकों में इस समय धान की कटाई चल रही है. खेतों में बहुत सारा धान काटकर पड़ा है. जो बारिश से भींग गए हैं. उसे सूखने में समय लगेगा. ग्रामीण कहते हैं कि इस बारिश से आधा धान बर्बाद हो गया. जिन खेतों में पानी नहीं था वहां तो धान की बाली पहले ही सूख गई थी. जिन खेतों में पानी है वहां हवा के कारण धान खेतों में गए हैं. उन्हें सूखने में समय लगेगा. अगर सूख भी गए तो आधे से अधिक खराब हो जाएंगे.

मेहनत पर पानी फिर गया : कैलाश

[illegible]

डर सता रहा है : दसवा उरांव

[illegible]

पाले से कहीं आलू की फसल भी खराब न हो जाए

[illegible]

चक्रवाती तूफान मिचौंग से धान की फसल को खासा नुकसान | सब्जियों की फसल भी बर्बाद आलू में पाले की आशंका | दो दिन की बारिश से सब्जी विक्रेताओं को भी नुकसान

आदित्यपुर

चक्रवाती तूफान की वजह से हुई बारिश ने किसानों के लाखों के फसल किये बर्बाद, किसान मांग रहे मुआवजा

चक्रवाती तूफान मिचौंग ने गम्हरिया प्रखंड के किसानों को भारी नुकसान पहुंचाया है. खेतों में कटाई के बाद पड़ी फसल बारिश से बर्बाद होने लगी है. प्रखंड के किसान और खेतिहर मजदूर सरकार से मुआवजे की मांग कर रहे हैं.

जमशेदपुर

बारिश से लोग हुए बेहाल, नुकसान के कारण गरीबों की हालत हुई खराब

चक्रवात मिचौंग ने दक्षिण भारत में काफी तबाही मचाई. इसका असर झारखंड भर के कई जिलों में दिखाई दिया. दो दिनों तक लगातार हो रही बारिश के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया था. पूर्वी सिंहभूम जिले में भी इसका असर रहा. लगातार बारिश होने से रोज कमाने खाने वाले परेशान रहे. ओडिशा के गारूमहिसानी से सब्जियां लाकर टाटानगर स्टेशन के पास फुटपाथ पर सब्जी बेचने वाली मां-बेटी गुरुबारी और माया ने बताया कि बारिश के कारण उनकी सब्जियां दो दिनों तक नहीं बिकी. इस कारण उनके घर चूल्हा तक नहीं जला. उन्हें मुश्किल से इधर-उधर मांग कर गुजारा करना पड़ा. उन्होंने बताया कि सब्जियां बेच कर वे लोग अपना गुजर बसर करती है. बारिश में ग्राहक भी नहीं आये और जो पूंजी लगाकर माल खरीदा था वह भी बर्बाद हो गया. वहीं, जमशेदपुर के किताडीह निवासी मनोज ने बताया कि वह भी फुटपाथ पर सब्जी बेचता है. बारिश के कारण उसकी काफी सब्जियां सड़ गईं. काफी मुश्किल से कर्ज लेकर हाल ही में उसने अपना व्यवसाय शुरू किया था, लेकिन दो दिनों की बारिश ने कमर तोड़ कर रख दी. इधर, बारिश बंद होने के बाद आसमान से बादल छंट गए हैं, न्यूनतम तापमान में और गिरावट के साथ कंपकंपी भी बढ़ गई है. इससे लोगों की मुश्किलें बढ़ गई है.

घाटशिला

बर्बाद हुए फसलों की क्षतिपूर्ति के अधिकारी को सौंपा गया ज्ञापन

किसान संघर्ष समन्वय समिति घाटशिला की ओर से शुक्रवार को घाटशिला के अनुमंडल पदाधिकारी सत्यवीर रजक को चक्रवात तूफान से बर्बाद हुई फसलों की क्षतिपूर्ति देने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा. इस संबंध में समिति के संयोजक दुलाल चंद्र हांसदा ने बताया कि चक्रवाती तूफान से बर्बाद हुई किसानों की फसलों की क्षतिपूर्ति देने के संबंध में अनुमंडल पदाधिकारी सत्यवीर रजक को ज्ञापन सौंपा गया. ज्ञापन के माध्यम से मांग की गई है कि चक्रवाती तूफान मिचौंग से बर्बाद हुए किसानों की फसलों की क्षतिपूर्ति प्रति एकड़ 20 हजार रुपए की दर से की जाए. साथ ही चक्रवाती तूफान को राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा घोषित किया जाए. ज्ञापन सौंपने वालों में मुख्य रूप से ग्राम सभा अध्यक्ष कलाझोर चुंका हेंब्रम, ठाकुरदास सोरेन, बाबूलाल हांसदा, काला सरकार, सिदो राम मुर्मू, शांखिलाल मुर्मू, सुपाई मुर्मू सहित अन्य किसान शामिल थे.

चाईबासा

वर्षा से धान की फसलों के खराब होने की संभावना बढ़ी

मिचौंग तूफान के कारण हुई अत्यधिक वर्षा से धान की फसलों के खराब होने की संभावना ज्यादा बढ़ गई है. खेतों में वर्षा का पानी जमा होने के कारण काटकर सूखने के लिए छोड़ दिए गए धान की फसलों के खराब होने की संभावना ज्यादा बढ़ गई है. कृषि विभाग की मानें तो अगर यह स्थिति एक-दो दिन तक और बनी रही तो धान की फसलों की सूखने की संभावना कम हो जाएगी. इस वर्षा के कारण उसमें आद्रता ज्यादा आ जाएगी. धान का काला पड़ना शुरू हो जाएगा. शुक्रवार को धूप तो निकला पर उस धूप छांव होने के कारण फसलों के सूखने की संभावना कम दिख रही है. ऐसे में कृषकों के माथे पर बल पड़ गया है कि कहीं फसल खराब न हो जाए. बड़ी बात यह है कि यदि धान की फसल समुचित तरीके से नहीं सूखती है तो उनमें अंकुरण की संभावना भी बढ़ जाएगी. ऐसे में कृषकों की पहली प्राथमिकता भीगे हुए धान के फसलों को सुखाना है.

धनबाद

कोयलांचल में दो दिन की बारिश से सब्जी की फसल बर्बाद, बाजार में कीमत भी बढ़ी

पिछले दो दिनों से हो रही बारिश से शुक्रवार को कोयलांचल के लोगों को राहत मिला. रोजमर्रा का कामकाज पटरी पर लौट आया. लेकिन इस बारिश से किसान सबसे ज्यादा प्रभावित रहे. धान की काटी गई फसल भींग गए. पालक, टमाटर, गोभी आदि की फसल खराब हो गई. बाजार में सब्जियों का भी टोटा हो गया है. जो सब्जियां नजर आ रही है, वो भी महंगी हो गई है. 50 से 60 के नीचे कोई सब्जी नहीं है. सब्जियों की आवक कम होने से बजार में शुक्रवार को सब्जी की कई दुकानें बंद रही. व्यापारियों की माने तो दूसरे राज्यों से आवक बढ़ने के बाद ही कीमतों में नरमी आयेगी.

तूफान से बेमौसम बरसात ने सबकों नुकसान ही पहुंचाया है: शक्ति महतो

धनबाद के परघाबाद निवासी शक्ति महतो ने बताया कि हमलोग छोटे किसान है. सब्जी की फसल ही उगाते है. इसे शहर लाकर खुद से बेचने का काम करते है. इसी से परिवार का भरण पोषण करते है. बेमौसम बरसात के कारण पालक, धनिया, मूली और गोभी की फसल खराब हो गई. छह कट्ठा में इन फसलों को लगाया था, सब में पानी भर गया. थोड़ा बहुत बचा है, उसे ही शहर बेचने आया हूं. फसल खराब होने से मेहनत तो बर्बाद हुआ ही, परिवार पर भी संकट आ गया है.

धान की फसल भींग गई है,खराब होने की आशंका : सुरेश महतो

गोविंदपुर प्रखंड के तिलैया पंचायत के किसान सुरेश महतो ने बताया कि सब्जी का नुकसान तो इस बारिश से हुआ ही है, धान की फसल का भी नुकसान हुआ है. फसल को काट कर घर के पास रखा था. सब भींग गया. इसमें से कुछ काम आ जायेगा, बाकी बर्बाद हो जाएगा. बारिश ने दोहरी मार दी है. हमलोग खेती पर ही आश्रित हैं, फसल नुकसान होने से आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा. सरकार से कुछ मुआवजा जाए तभी राहत मिलेगी.

बारिश में न देहाड़ी मिली न ही सब्जी की फसल ही बची : टिपन महतो

तिलैया पंचायत के एक और किसान टिपन महतो ने बताया कि धनबाद में किसानों को खेती से फायदा कम नुकसान ही ज्यादा होता है. अब तो कई लोग खेती छोड़ कर दिहाड़ी मजदूरी करने लगा है. हम खुद करते है. लेकिन बारिश में न देहाड़ी मिला और न ही सब्जी की फसल बची. दोहरा नुकसान उठाना पड़ा है. परिवार चलाना मुश्किल हो गया है. अब तो लगता है खेती को पूरी तरह छोड़ कर बाहर ही चला जाऊं. घर परिवार भी मना कर रहे हैं, खेती मत करो, लेकिन मजबूरी है, खेत को खाली नहीं छोड़ सकते. हमलोग के यहां बटाईदार भी तो नहीं मिलता है.

बोकारो

बेमौसम बारिश से किसानों की कमर टूटी

आलू की फसल पर भी पले की आफत : मनोहर मुंडा

तीन दिनों के चक्रवाती तूफान मिचौंग से आई बेमौसम बारिश व कनकनी से लोगों की परेशानी बढ़ गई है. खासकर बोकारो जिले के जरीडीह, कसमार, पेटरवार, गोमिया, बेरमो, नावाडीह, चंद्रपुरा, चास, चंदनकियारी प्रखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में हजारों किसानों पर इस बारिश ने कहर ढाया है. फिलहाल ज्यादातर किसानों के खेत में धान की फसलें पककर पूरी तरह तैयार थी, लेकिन बारिश ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया. कसमार प्रखंड के धधकिया निवासी किसान मनोहर मुंडा ने बताया कि इस बारिश से उनके खेत में पड़ी धान की फसल भींगकर बर्बाद हो गयी. बारिश खत्म होने के बाद जब फसल खेत से उठाएंगे तो आधे से अधिक धान के बीज खेत में ही टूटकर बर्बाद हो जाएंगे. इसके अलावा उनके खेत में तैयार हो रही आलू की फसल पर भी पाला की बीमारी का खतरा है. इससे पैदावार कम होगी. वहीं जरीडीह प्रखंड के बाराडीह के किसान संजय महतो ने बताया कि उनके खेत में धान की फसल तैयार होने के बाद कटाई भी हो चुकी थी. एक दो दिन के अंदर धान झाड़ने के लिए मशीन का इंतजाम किए थे, लेकिन अब फसल सूखने में एक सप्ताह का समय लग जायेगा. साथ ही खेत में फसल बर्बाद भी हो गयी है. कसमार प्रखंड के चंडीपुर के किसान शंकर महतो ने बताया कि उनके खेत में फिलहाल बैंगन, आलू, टमाटर, गाजर, गोभी की फसल लगी है, जो इस बारिश में नुकसान कर सकता है. धान की खेती की तो किस्मत ही खराब है. पहले सुखाड़ से तीन चार साल फसल चौपट हुई और इस साल बेमौसम बारिश ने किसानों की कमर तोड़ दी.

बारिश से वैवाहिक कार्यक्रमों में बाध पड़ी

चक्रवाती तूफान मिचौंग के कारण लातेहार में पिछले पांच दिसंबर की मध्य रात्रि से ही बारिश हो रही थी. छह व सात दिसंबर को दिन रात लगातार बारिश होती रही. हालांकि आठ दिसंबर को बारिश तो नहीं हो रही थी, लेकिन धूप की आंखमिचौली जारी थी. पूर्वाह्न 11 बजे के बाद धूप निकली, लेकिन फिर गायब हो गयी. अपराह्न एक बजे के बाद धूप खिल गयी. हालांकि विगत तीन दिनों तक हुई लगातार बारिश के कारण आम जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया. खास कर जिन लोगों के यहां वैवाहिक कार्यक्रम थे, उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा. हालांकि इस बारिश से अभी तक हीं जानमाल की क्षति की सूचना नहीं है, ग्रामीण क्षेत्रों और जिला मुख्यालय में काम करने आने वाले मजदूरों की संख्या काफी कम देखी गयी.

लातेहार

धान की फसल को हुई आंशिक नुकसान: पंचम

चक्रवाती तूफान मिचौंग के कारण लगातार तीन दिनों तक हुई बारिश के कारण किसान परेशान दिखे. [illegible]

तैयार फसल हो गई बर्बाद : सोखेन हेम्ब्रम

गम्हरिया प्रखंड के राष्ट्रीय अवार्डी किसान सोखेन हेम्ब्रम कहते हैं कि चक्रवाती तूफान मिचौंग के कारण 3 दिन तक हुई बारिश से हम किसानों को भारी क्षति हुई है. हमारे कई किसानों की तैयार धान की फसल बर्बाद हो गई है. मेरी धान की फसल के साथ सब्जियों की नर्सरी को भी क्षति हुई है. चूंकि हमलोगों ने इस तरह के मौसम की उम्मीद नहीं की थी. इससे ठंड और कंपकंपी भी बढ़ गयी है. खेतों में रोज कमाने खाने वाले खेतिहर मजदूरों की स्थिति खराब हुई है. सरकार को किसानों और खेतिहर मजदूरों को कुछ मुआवजे की घोषणा करनी चाहिए.

सैंकड़ों किसानों की क्षति पहुंची है : चामू हेंब्रम

गम्हरिया प्रखंड के युवा किसान चामू हेंब्रम ने बताया कि उनकी करीब डेढ़ बीघे में लगी धान की कटाई हो गई थी. सुखने के लिए धान खेतों में पड़े थे, जो इस चक्रवाती तूफान में बारिश की वजह से खराब हो गई. उनके पास उसे समेटने के लिए समय नहीं मिल सका. उसने नगदी फसल के रूप में पालक, टमाटर, गोभी की नर्सरी लगाई थी. वह भी बर्बाद हो गई है. इस बेमौसम के बारिश की वजह से हमारे प्रखंड के सैंकड़ों किसानों को क्षति पहुंची है. कम से कम हमारा एक लाख रुपये की क्षति हुई है. सरकार को इसके लिए मुआवजा देना चाहिए.

फसल बर्बादी की क्षतिपूर्ति दे सरकार : दारा प्रसाद सिंह

गिरिडीह

चक्रवाती तूफ़ान मिचोंग के कारण पिछले दो दिनों तक हुई बारिश से किसानों को बड़ा नुकसान हुआ है. दो दिनों तक हुई लगातार बारिश के कारण फसल को नुकसान हुआ है. कई किसान धान की फसल को काटकर खेत में छोड़ दिए थे. इससे धान को काफी नुकसान हुआ है. गांडेय प्रखंड के बदगुंदा निवासी किसान दारा प्रसाद सिंह ने कहा कि लगातार बारिश के कारण किसान को काफी नुकसान हुआ है. इसकी छतिपूर्ति के लिए जिला प्रशासन को आवश्यक कदम उठाना चाहिए. इधर किसान गुलाब वर्मा ने बताया कि उनके गांव बेलडीह में सैकड़ो एकड़ जमीन पर किसानों ने आलू और धान की खेती की है. चक्रवाती तूफ़ान में हुई बारिश के कारण काफी नुकसान हुआ है. आलू की फसल को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है. उन्होंने कहा कि इस चक्रवाती तूफ़ान मिचॉंग ने किसानों की कमर तोड़कर रख दी है.

तूफान का किसानों पर व्यापक असर

मनोहरपुर

चक्रवाती तूफान मिचौंग से बेमौसम बारिश से आम दिहाड़ी मजदूर व किसानों की दिनचर्या पर व्यापक असर पड़ा है .वहीं लगातार बारिश से सर्द मौसम को और भी ठंड कर दिया है .इसका असर प्रखंड के रोज़ कमा खाने वाले दिहाड़ी मज़दूरों के अलावा विशेषकर किसानों को भारी पड़ा है .लगातार बारिश से रोज दिहाड़ी करने वाले मजदूर काम पर नहीं निकल पाए .जिससे उन्हें आर्थिक क्षति पहुंची है .वहीं बेमौसम बारिश से किसानों के खेत,खलिहानों में धान का फसल व खरीफ फ़सलों को भारी क्षति पहुंची है .जिससे किसानों के माथे पर चिंता बढ़ा दी है .किसान राजेश महतो ने कहा कि इस आपदा ने हम मध्यम व छोटे किसान भाइयों को आर्थिक रूप से बरबाद कर दिया है .वहीं फसलों की क्षतिपूर्ती मुआवजे के लिए किसान भाइयों ने सरकार से गुहार लगाई है .

रोज कमाने खाने वालों पर मौसम की बेरुखी की मार ज्यादा

हजारीबाग

बारिश के कारण सबसे अधिक परेशानी मजदूरों को हुई, जो हर रोज मजदूरी कर अपना घर का पालन पोषण करते हैं. पिछले तीन दिनों से काम नहीं हो रहा है. शुक्रवार को मौसम साफ होने के बावजूद भी काम नहीं मिला .सीमेंट बालू और भवन निर्माण संबंधित अन्य काम में ब्रेक लग गया है .बताया जाता है कि जहां काम चल रहा था वहां पानी जमा है .ऐसे में दो से तीन दिन और काम नहीं हो पाएगा. दैनिक मजदूर नंदू राम का कहना है कि वे लोग हर दिन मजदूरी करते हैं. 400 रुपया मिलते हैं. पिछले चार दिनों से काम नहीं मिला है .आने वाले और दो दिन भी काम नहीं मिलेगा. ऐसे में हर रोज कमाने खाने वाले लोगों को परेशानी हो रही है. कारू महतो का कहना है कि मौसम की बेरुखी का मार सबसे अधिक गरीब लोगों पर पड़ता है. खेत में थोड़ी सब्जी लगाए थे ताकि बेचकर पैसा कमा सके. वह सब्जी भी खराब हो चुकी है. धान भी खराब हो गया .पिछले 4 दिनों से काम भी नहीं मिल रहा है .आने वाले 2 दिनों तक काम नहीं मिलेगा .ऐसे में 6 दिनों की कमाई नहीं होने पर उसका असर रसोई पर पड़ रहा है.

खलिहान के धान हो गए बर्बाद : महेंद्र नारायण सिंह

चक्रवर्ती तूफान मिचौंग किसानों पर कहर ढाकर चला गया .धान की खड़ी फसलों को तो इस बारिश से खास नुकसान नहीं होने वाला है, पर खेतों और खलिहानों में पड़े धान के बोझे बर्बाद हो रहे हैं .प्रखंड के चलंगा गांव के किसान महेंद्र नारायण सिंह कहते हैं कि बारिश से कटे धान के चावल काले हो जाएंगे .साथ ही धान अंकुरित होकर किसी काम के नहीं रहेंगे. विष्णुगढ़ के किसान खोसलाल राम का कहना है कि बारिश ने तैयार खलिहानों को खराब कर दिया है. अब इसपर दौनी नहीं की जा सकती है. बारिश थोड़ी रुकी है, पर दौनी के लिए अब फिर से खलिहान तैयार करना पड़ेगा.

आलू की फसल पर पड़ सकता है असर : कृषि वैज्ञानिक

हजारीबाग जिले के इचक, कटकमसांडी कटकमदाग में बारिश की वजह से किसानों को भारी नुकसान हुआ है. इसमें आलू, धान को काफी क्षति हुई है .जो किसान धान काटकर खलिहान में रखे थे, अब वह धान खराब हो चुके हैं .कई लोगों तो धान काट भी नहीं पाए थे .इधर कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार मौसम का असर खेती पर भी पड़ने की संभावना है .कृषि वैज्ञानिक सीमा सिन्हा ने कहा कि इस मौसम में किसानों को सतर्क रहने की जरूरत है .आलू की फसल पर इसका बुरा असर पढ़ने की संभावना है. कुहासे के कारण आलू की फसल बर्बाद हो सकती है. उसे पाला मार सकता है. इससे बचाव के लिए आलू लगे खेतों के आसपास धुआं करें ताकि कुहासा से फसल को बचाया जा सके .वहीं किसान अगर धान काट लिए हैं तो उन्हें भी नुकसान हो सकता है.

जमशेदपुर

मनोहरपुर

सियासत में नयी जाति

आमतौर पर चुनावों में जाति समूहों का ही महत्व हावी रहा है. सभी दलों की राजनीति और रणनीति इसी को ध्यान में रख कर निर्मित होती रहती है. हाल ही में संपन्न हुए पांच राज्यों के विधान सभा चुनाव का पूरा समीकरण इसी के आसपास गढ़ा गया. बिहार में जबसे जाति जनगणना हुई है और उसके आधार पर पचहत्तर प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान विधान सभा से किया गया है और कांग्रेस की ओर से जाति जनगणना के सवाल को केंद्रीय बनाने की बात कही गयी है. जाति का सवाल सभी राजनीतिक दलों के लिए महत्वपूर्ण सियासी सवाल हो गया है. पांच राज्यों में से तीन हिंदी भाषी राज्यों में कांग्रेस की पराजय के बाद विश्लेषकों ने कहा कि जाति जनगणना के सवाल को हिंदी भाषी राज्यों ने तवज्जो नहीं दिया. जाति के बजाय सांप्रदायिक ध्रुवीकरण प्रभावी साबित हुआ. इस बीच प्रधानमंत्री ने चुनाव परिणामों के बाद एक नयी बहस की शुरुआत की है. नरेंद्र मोदी, जो अब तक खुद को पिछड़ी जाति के होने का दावा करते हुए चुनावों को आकर्षित करने का प्रयास करते रहे हैं, उन्होंने एकदम वर्गीय धारणा पर बात शुरू कर दी है. भारत में वर्ग राजनीति के लिए वामपंथी ही जाने जाते रहे हैं. दक्षिणपंथी धारा की राजनीति की मुख्य आलोचना यही रही है कि वामपंथी भारत की राजनीति, संस्कृति और समाज को नहीं समझते हैं, इसीलिए वे भारतीय विशेषताओं की उपेक्षा कर वर्गीय अवधारणा पर भारतीय समाज को समझने-परखने का प्रयास करते रहे हैं. आज भारत की राजनीति में वामपंथ हाशिए पर है, लेकिन प्रधानमंत्री जब देश में जाति की वर्ग आधारित व्याख्या पेश कर रहे हों तो इस परिघटना के प्रभावों को किस तरह समझा जाए, क्योंकि आने वाले दिनों में लोकसभा चुनाव के पहले प्रधानमंत्री की अवधारणा का खास महत्व है. प्रधानमंत्री ने कहा है कि विकसित भारत का संकल्प चार अमृत स्तंभों पर मजबूती के साथ टिका है. मेरे लिए देश की सबसे यही बड़ी चार जातियां गरीब, युवा, महिलाएं और किसान जाति हैं. इन चार जातियों का उत्थान ही भारत को विकसित बनाएगा. तो क्या माना जाए कि अब सत्तापक्ष जिस जाति इंजीनियरिंग के सहारे परवान चढ़ा है, उसने अपना नजरिया बदल दिया है. तो क्या विभिन्न जाति समूहों की भागीदारी की आकांक्षा महत्वहीन बन जाएगी. प्रधानमंत्री के बयान का एक अर्थ तो यह भी लगाया जा रहा है कि जाति जनगणना का प्रश्न भाजपा के एजेंडा से बाहर ही रहेगा, लेकिन जिन नयी जातियों की बात प्रधानमंत्री ने की है, क्या उन्हें आर्थिक असमानता के वर्तमान दौर में आर्थिक न्याय मिल सकेगा. भारत में मुख्य सवाल तमाम इधर उधर की बात के बावजूद सामाजिक और आर्थिक न्याय का है. विकसित भारत तभी संभव है, जब इसे जमीन पर उतारा जाएगा. विकसित राष्ट्र संपत्ति के एकाधिकार से नहीं, सबको संपन्नता का हिस्सा देने से ही संभव होता है. इतिहास यह गवाही देता है.

> नरेंद्र मोदी, जो अब तक खुद को पिछड़ी जाति के होने का दावा करते हुए चुनावों को आकर्षित करने का प्रयास करते रहे हैं, उन्होंने एकदम वर्गीय धारणा पर बात शुरू कर दी है. भारत में वर्ग राजनीति के लिए वामपंथी ही जाने जाते रहे हैं.

सुभाषित

मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि गर्वो दुर्वचनं मुखे।
हठी चैव विषादी च परोक्तं नैव मन्यते॥

मूर्खों को पहचानना मुश्किल नहीं है, क्योंकि उनकी पांच निशानियां होती हैं. वे अहंकारी होते हैं. वे हमेशा एकोहम् द्वितीयो नास्ति वाली भावना रखते हैं. उनके मुंह में हमेशा बुरे शब्द होते हैं. वे जिद्दी होते हैं, हमेशा बुरी सी शक्ल बनाए रहते हैं और दूसरे की बात कभी नहीं मानते.

बेलगाम होते अपराधी, टपोरी

राजधानी रांची में प्रायः हर दिन हत्या या अन्य वारदात को अंजाम दिया जाता है. चेन स्नैचिंग की तो बाढ़ सी आयी हुई है. यह तब है, जब न तो पुलिसकर्मियों की कमी है, न ही साधन-सुविधाओं का अभाव है. कानून-व्यवस्था को लेकर भाजपा आए दिन सवाल उठाती रहती है. वह जितने कड़े शब्दों का इस्तेमाल करती है, उसको नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. लेकिन आपराधिक घटनाओं में कमी आती नहीं दिखती. जेल में दो तरह के बंदी रहते हैं. एक तो सजायाफ्ता, दूसरे वे, जिनका केस विचाराधीन होता है.

• देश-काल

श्याम किशोर चौबे

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान और तेलंगाना के विधानसभा चुनाव परिणाम पर चरम दिलचस्पी के टाइम जब सभी अपनी नजरें टीवी/मोबाइल स्क्रीन पर गड़ाए हुए थे, प्रायः उसी समय धनबाद सेंट्रल जेल में गैंगस्टर अमन सिंह को गोलियों से छलनी किया जा रहा था. जेल अस्पताल में उसको करीब से ताबड़तोड़ नौ गोलियां मारी गई. तीन दिसंबर की दोपहर लगभग तीन बजे की यह घटना बेलगाम अपराध की गवाही देती है. उसी समय के आसपास रिम्स-रांची से एक लंगड़ा टपोरी मो. शाकिब उर्फ देवा चंपत हो गया. वह चेन स्नैचर है. 24 नवंबर को उसको तब गिरफ्तार किया गया था, जब पुलिस से बचने के लिए भागते समय उसका पैर टूट गया था. इसी टूटे पैर का इलाज कराने के लिए उसको रिम्स में दाखिल कराया गया था. खबर यही मिली कि सुरक्षाकर्मियों को चकमा देकर उसकी बीवी और एक टपोरी दोस्त गोद में उसको उठाकर चलते बने. सात-आठ महीनों में रिम्स से आधा दर्जन और दो साल में दर्जन भर अपराधी कैदियों के फरार हो जाने का इतिहास है. दूसरी ओर जेल में हत्या की घटनाओं का भी अपना इतिहास है. घाघीडीह जेल में कुख्यात अखिलेश सिंह गिरोह के सदस्यों संग सजायाफ्ता कैदियों की 25 जून 2019 को हुई भिड़ंत में टेल्को मनीफीट निवासी मनोज सिंह की हत्या कर दी गई थी. 20 मार्च 2009 को घाघीडीह जेल में अखिलेश सिंह गिरोह के ही गौतम सिंह ने परमजीत सिंह की हत्या कर दी थी. उसके दस साल पहले 1999 में रांची की पुरानी जेल में गैंगस्टर अनिल शर्मा और उसके गिरोह के लोगों ने भोमा सिंह की हत्या कर दी थी. राजधानी रांची में प्रायः हर दिन हत्या या अन्य वारदात को अंजाम दिया जाता है. चेन स्नैचिंग की तो बाढ़ सी आयी हुई है. यह तब है, जब न तो पुलिसकर्मियों की कमी है, न ही साधन-सुविधाओं का अभाव है. कानून-व्यवस्था को लेकर भाजपा आए दिन सवाल उठाती रहती है. वह जितने कड़े शब्दों का इस्तेमाल करती है, उसको नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. लेकिन आपराधिक घटनाओं में कमी आती नहीं दिखती. जेल में दो तरह के बंदी रहते हैं. एक तो सजायाफ्ता, दूसरे वे, जिनका केस विचाराधीन होता है. जेल में किसी को भी इसलिए डाला जाता है, ताकि समाज में वह किसी अन्य को नुकसान न पहुंचा सके और खुद भी सुरक्षित रहे. जेल से अधिक सुरक्षित कौन सी जगह हो सकती है? बंदियों से जेल में मुलाकात के कड़े नियम-कायदे हैं. कड़ी जांच-पड़ताल के बाद ही जेल के अंदर कोई सामग्री ले जाई या भिजवाई जा सकती है. प्रशासनिक पदाधिकारी समय-समय पर जेल के अंदर जाकर निरीक्षण करते रहते हैं. जैसी कि खबरें आई हैं, तीन दिसंबर की घटना के हफ्ता भर पहले धनबाद जेल का निरीक्षण डीसी और एसएसपी ने किया था. अमन सिंह की हत्या के बाद जब उसी जेल की बारीकी से जांच की गई तो दो पिस्तौल, छह मोबाइल फोन और 18 हजार कैश भी बरामद हुए. जेल में बीड़ी तक ले जाने पर पाबंदी है, लेकिन दो पिस्तौलें, छह मोबाइल फोन और बड़ी रकम पहुंच जाना हंसी-ठट्ठा तो है नहीं.

अमन सिंह सामान्य अपराधी कतई नहीं था. वह शार्प शूटर था. यूपी के अंबेदकर नगर जिला निवासी अमन को यूपी एसटीएफ ने मई 2017 में मिर्जापुर से गिरफ्तार कर धनबाद पुलिस को सौंपा था. इस गैंगस्टर पर धनबाद के मेयर नीरज सिंह की 22 मार्च 2017 की रात एके-47 से हत्या कर देने का आरोप था. उस समय नीरज के अलावा उनकी गाड़ी में सवार अन्य चार लोगों को भी भून डाला गया था. उनकी बेवा पूर्णिमा नीरज सिंह फिलहाल कांग्रेस विधायक हैं. अमन एक दिन पहले 02 दिसंबर को रंगदारी के एक केस में अदालत द्वारा बरी किया गया था. इससे पहले वह दस मुकदमों में बरी किया जा चुका था. अपनी सक्षम पुलिस मजबूत साक्ष्य पेश नहीं कर पायी थी. अकेले धनबाद जिले में उस पर तीन दर्जन केस दर्ज हैं. वह जेल से ही क्राइम ऑपरेट किया करता था. उस पर एक जेल संतरी पर फायरिंग का भी आरोप था. उसने नाजायज उगाही को धंधा बना लिया था. दिलचस्प बात यह कि कभी उसका खासमखास रहे आशीष सिंह ने उसकी हत्या करवाने का कुबूलनामा ऑडियो रिकार्डिंग की मार्फत तीन दिसम्बर को ही जारी किया था. आशीष फरारी में चल रहा है. बाइक चोरी के आरोप में नौ दिन पहले गिरफ्तार फर्जी पता-ठिकाना वाले सुंदर महतो से अमन हत्याकांड पर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पूछताछ की जा रही है. उस पर केस भी दर्ज किया गया है. मुख्यालय ने जेल आईजी के नेतृत्व में त्रिसदस्यीय जांच दल बनाया है, जबकि धनबाद के डीसी ने अलग से जांच दल गठित किया है और मुख्य जिला एवं सत्र न्यायाधीश से न्यायिक जांच कराने का अनुरोध किया है. तीन तरह की जांच से असल मकसद भटक तो नहीं जाएगा? धनबाद के जेलर मो. मुस्तकीम को निलंबित कर दिया गया है, जबकि जेल सुपरिंटेंडेंट के तबादले की अनुशंसा की गई है. सात कक्षपाल निलंबित किये गये हैं.

इस घटना पर स्वतः संज्ञान लेकर झारखंड हाईकोर्ट ने किसी बड़े षडयंत्र की आशंका जाहिर की है. शीर्ष अदालत ने सरकार से पूछा है कि क्या वह एसआईटी जांच कराने की मंशा रखती है? घपले-घोटालों में ईडी द्वारा गिरफ्तार लोगों को अतिरिक्त सुविधाएं मुहैया कराने के आरोप में रांची के जेलर और सुपरिंटेंडेन्ट हाल ही बदले गये थे. इसके बावजूद धनबाद में इतना बड़ा कांड हो गया. क्या वहां का जेल प्रशासन मुतमइन था कि वह घेरे में कतई नहीं आएगा?

• बोधि-वृक्ष | डॉ. एसके पाण्डेय

भगवान की तलाश

सदग्रंथ, सुसंत और भक्त कहते हैं कि भगवान सर्वव्यापी हैं. घट-घट वासी हैं. कण-कण में भगवान हैं. फिर भी भगवान नहीं मिलते. क्यों? जैसे ग्रंथों में अपार ज्ञान का भंडार भरा है और ग्रंथ सब जगह उपलब्ध भी हैं. फिर भी वह ज्ञान सहज प्राप्त नहीं है. न ही ज्ञान ग्रंथ (जिसमें ज्ञान भरा है) के अवलोकन से और न ही स्पर्श से प्राप्त होता है. और तो और, ज्ञान ग्रंथों को पढ़ डालने से भी प्राप्त नहीं होता. ठीक ऐसे ही कण-कण में भगवान हैं और न ही दिखते हैं और न ही प्राप्त होते हैं. जैसे ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए साधना, ध्यान, चिंतन-मनन, प्रेम और विश्वास चाहिए. ठीक ऐसे ही कण-कण रूपी ग्रंथ में बसे ज्ञान रूपी भगवान को प्राप्त करने के लिए ध्यान, चिंतन-मनन, प्रेम और विश्वास चाहिए. मालूम हो सबको ज्ञान प्राप्त नहीं होता. ठीक ऐसे ही सबको भगवान प्राप्त नहीं होते. यह भी ध्यान देने योग्य है कि ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त कर लेना तो आसान है लेकिन कण-कण में बसे भगवान को प्राप्त करना आसान नहीं है. लोग भगवान को खोजते हैं. भगवान को जानना, पाना अथवा देखना चाहते हैं और भगवान स्वयं भक्त को खोजते रहते हैं. लोग भगवान को तलाशते हैं और भगवान लोगों को. सच्चे भक्त की तलाश उन्हें हमेशा रहती है. सच्चे भक्त को भगवान को तलाशने की आवश्यकता ही नहीं रहती. भगवान स्वयं आकर मिलते हैं. कोई कितना ही बड़ा, संत, ज्ञानी अथवा विद्वान क्यों न हो, यदि उसमें भक्ति नहीं है, तो उसे भगवान कदापि नहीं मिलेंगे. वहीं दूसरी ओर कोई कितना भी छोटा अथवा मूर्ख ही क्यों न हो, यदि उसमें भक्ति है, तो उसे भगवान मिल जायेंगे. सारा संसार भगवान को प्रिय है. लेकिन भक्त सबसे प्रिय है. भगवान केवल सच्चे भक्त को मिलते हैं. और किसी को नहीं. भगवान को यहां-वहां, चाहे जहां तलाशो, पूजा-पाठ करो, प्रवचन करो अथवा सुनों अर्थात चाहे जो साधन अथवा साधना करो भगवान मिलने वाले नहीं. भगवान प्रेम और भक्ति से ही द्रवित होते हैं. भगवान को ढकोसला और बनावट बिल्कुल रास नहीं आती, रास आती है तो सरलता, मन की निर्मलता. भगवन तो मिलना चाहते हैं, प्रकट होना चाहते हैं. इसके लिए वे बेताब रहते हैं. लेकिन मिलें तो किससे? किसके सामने प्रकट हों ? उन्हें योग्य अधिकारी चाहिए? अनाधिकारी को कुछ भी देना पाप-अधर्म होता है. भगवान अनघ और धर्म स्वरूप-धर्म धुरंधर हैं, तो वे पाप या अधर्म कैसे करें?"

विपक्ष के लिए ज्यादा जरूरी है एकजुटता

• सियासत

राजेंद्र शर्मा

आम चुनाव से ठीक पहले के विधानसभाई चुनावों के चक्र में प्रभावशाली जीत के बाद, भाजपा ने इन चुनावों को सिर्फ सेमीफाइनल ही नहीं, उससे आगे बढ़कर एक प्रकार से फाइनल भी कहना शुरू कर दिया है. मतगणना के ही दिन, 3 अक्टूबर को देर शाम, नई-दिल्ली में भाजपा के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित विजय सभा में अपने संबोधन में खुद प्रधानमंत्री ने जिस तरह तीन राज्यों की जीत को, 2024 के चुनाव की (जीत की) गारंटी बताया है, इसी का इशारा करता है. आने वाले दिनों में बार-बार चुनाव के इस चक्र की जीत को, 2024 के चुनाव में मोदी की शानदार जीत का संकेतक साबित करने की कोशिश नहीं की जा रही हो, तभी हैरानी की बात होगी. बहरहाल, इस संदर्भ में, संक्षेप में यह याद दिला देना उपयोगी रहेगा कि इस चक्र के नतीजे और उसमें भी खासतौर पर हिंदी पट्टी के तीन राज्यों-राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के नतीजे, ठीक-ठीक क्या कहते हैं और क्या नहीं कहते हैं. यह निर्विवाद है कि इस चुनाव में तीनों हिंदीभाषी राज्यों में भाजपा को जोरदार जीत हासिल हुई है और आम तौर पर विपक्ष को और खासतौर पर कांग्रेस को तगड़ा झटका लगा है. भाजपा ने 2018 के चुनाव के इसी चक्र के नतीजों को पूरी तरह से पलटते हुए, इन तीनों राज्यों में दोबारा सत्ता पर कब्जा ही नहीं कर लिया है, उस मध्य प्रदेश में भी उसने शानदार जीत दर्ज कराई है, जहां 2018 की हार के करीब डेढ़ साल बाद, दलबदल के जरिए उसने फिर से सत्ता हासिल कर ली थी और इस तरह इस बार चुनाव के समय उसकी ही सरकार थी. इस तरह, भाजपा ने इन तीन राज्यों में अपनी राज्य सरकारों की संख्या एक से बढ़ाकर तीन ही नहीं कर ली है, उसने सारे पूर्वानुमानों को झुठलाते हुए मध्य प्रदेश में अपनी सीटों की संख्या में, 2018 के मुकाबले 54 की बढ़ोतरी कर, 163 सीटें हासिल कर ली हैं और छत्तीसगढ़ में अपनी सीटों में 39 की बढ़ोतरी कर, कुल 54 सीटों पर कब्जा कर लिया है. राजस्थान में भी, बहुत अप्रत्याशित नहीं होते हुए भी, उसने अपनी सीटों में 42 की बढ़ोतरी कर, कुल 115 सीटों पर जीत दर्ज कराई है, जिसे प्रभावशाली बहुमत तो जरूर कहा जाएगा.लेकिन, इतना ही नहीं है. छत्तीसगढ़ तथा मध्य प्रदेश में मत फीसद में भारी बढ़ोतरी और राजस्थान में भी कुछ बढ़ोतरी का 2024 के चुनाव के लिए एक स्पष्ट संकेत है जो किसी को भी नहीं भूलना चाहिए. भाजपा हिंदीभाषी क्षेत्र में अब भी अपना वोट बढ़ा पा रही है. और मोटे तौर पर उसका वोट 45 फीसद से करीब तक पहुंच गया है. दूसरी ओर, इस चुनाव में आमतौर पर विपक्ष के और खासतौर पर कांग्रेस के हाथों से दो राज्यों-राजस्थान और छत्तीसगढ़-की सत्ता चली गई है. यह धक्का इसलिए और भी बड़ा है कि इसके बाद कांग्रेस के पास बिहार में महागठबंधन सरकार में हिस्सेदारी के अलावा, हिंदीभाषी क्षेत्र में सिर्फ हिमाचल की सरकार रह गई है. इसी प्रकार, मध्य प्रदेश में कांग्रेस पिछले चुनाव के मुकाबले 48 सीटें गंवाकर मात्र 66 सीटों पर आ गई है, जबकि छत्तीसगढ़ में 33 सीटें गंवाकर 35 पर और राजस्थान में 31 सीटें गंवाकर, 70 पर ही सिमट गई है. धक्का बेशक बड़ा है. इन चुनावों में भाजपा की जीत और कांग्रेस व विपक्ष की हार की गंभीरता को कम नहीं करते हुए भी, इन नतीजों से एक बात आसानी से समझी जा सकती है. इन राज्यों के नतीजों के संदर्भ से, 2024 के आम चुनाव के नतीजे की गारंटी कोई नहीं कर सकता है. बेशक, इस चुनाव में भाजपा का पलड़ा भारी रहा है और पर्याप्त भारी रहा है, लेकिन यह भी सच है कि तीनों राज्यों में उसके सामने मुकाबले के लिए एक अच्छी-खासी ताकत थी. और यह ताकत, जो 2018 से 2023 के बीच के पांच सालों में लगभग जस की तस बनी रही है, अगले चुनाव तक भी आसानी से इधर-उधर होने नहीं जा रही है. यहीं इंडिया मंच महत्वपूर्ण हो जाता है. लेकिन, उसे इन चुनावों से कुछ जरूरी सबक सीखने होंगे. सबसे जरूरी सबक तो यही है कि भाजपाविरोधी ताकतों की एकजुटता किसी भी कीमत पर कायम होनी ही चाहिए. इन विधानसभाई चुनावों से नकारात्मक सबक लेने ही होंगे. बेशक, यह कसरत भी दिलचस्प हो सकती है कि इंडिया के संभावित सहयोगियों के वोट का एक साथ पड़ना, इस चुनाव में भी भाजपा को कितनी सीटें भेंट करने से बचा सकता था. ऐसी सीटों की संख्या अच्छी-खासी होगी.

> इन राज्यों के नतीजों के संदर्भ से, 2024 के आम चुनाव के नतीजे की गारंटी कोई नहीं कर सकता है. बेशक, इस चुनाव में भाजपा का पलड़ा भारी रहा है और पर्याप्त भारी रहा है, लेकिन यह भी सच है कि तीनों राज्यों में उसके सामने मुकाबले के लिए एक अच्छी-खासी ताकत थी. और यह ताकत, जो 2018 से 2023 के बीच के पांच सालों में लगभग जस की तस बनी रही है.

धड़ों में बंटी दुनिया किस तरह पाएगी निजात

• देशांतर

सुनीता नारायण

जब आप सोचते हैं कि अब इससे बुरा तो कुछ नहीं हो सकता, ठीक उसी समय हालात और भी बिगड़ जाते हैं. पिछले साल, यूक्रेन-रूस युद्ध छिड़ने के बाद, मैंने लिखा था कि यह संघर्ष और ऐसे तमाम युद्ध हमें बांटने पर तुले हैं, जबकि हमें जलवायु परिवर्तन के प्रलयंकारी खतरे से निपटने के लिए एक साथ आने की जरूरत थी. मुद्दे की बात यह है कि जलवायु संकट के लिए प्रत्येक देश को एकसाथ कार्रवाई करने की आवश्यकता है, चाहे वह औद्योगिक रूप से अमीर देश हों, जिनका ऐतिहासिक उत्सर्जन अभी भी वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों के भंडार के रूप में मौजूद है और वैश्विक तापमान को बढ़ने के लिए "मजबूर" कर रहा है या बाकी दुनिया जो विकसित होने और उत्सर्जन शुरू करने के इंतजार में है. यह हमारे साझे भविष्य और साझे विनाश का मामला है. दुबई में संयुक्त राष्ट्र का जलवायु सम्मेलन (सीओपी28) में भूराजनीतिक परिदृश्य तेजी से अस्थिर होता जा रहा है. सबसे पहले, वह भयानक और क्रूर युद्ध है, जो इजराइल-फिलिस्तीन के लोगों के खिलाफ लड़ रहा है. याद रखें, यह विजुअल मीडिया और इंटरकनेक्टिविटी का युग है. जब गाजा पर बमबारी की तस्वीरें घरों में प्रसारित की जाती हैं, तो जनाक्रोश बढ़ता है और हमारी दुनिया को टुकड़ों में बांट देता है. आप पक्ष ले सकते हैं, लेकिन आप दुनिया को एक साथ नहीं चला सकते. इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष जैसे मुद्दों को सुलझाने में संयुक्त राष्ट्र असहाय महसूस कर रहा है. इसकी सभी एजेंसियों के साथ-साथ महासचिव ने भी युद्ध विराम का आह्वान किया है. फिर भी, संयुक्त राष्ट्र के कर्मचारी हर दिन गोलीबारी में मारे जा रहे हैं. इसके निर्देशों की अनदेखी की जा रही है या उन्हें सीधे-सीधे खारिज कर दिया जा रहा है. फिर, जब जलवायु परिवर्तन या किसी अन्य संकट की बात आएगी तो यह वैश्विक चेतना का बहुपक्षीय गढ़ कैसे अपनी भूमिका निभा पाएगा? इसे कमजोर और अक्षम कर दिया गया है. यह सब ऐसे युग में हो रहा है, जब लोकतंत्र को अभूतपूर्व चुनौतियां मिल रही हैं. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का वाहक, सोशल मीडिया-झूठ और नफरत फैलाने का एक हथियार बन गया है. जैसे-जैसे हिंसा और दुर्घटनाएं बढ़ती हैं, उसी अनुपात में तनाव बढ़ता है और सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता भी बढ़ जाती है. इसके बाद यह सरकारों को चाहे वे सत्तावादी हों या नहीं उच्च तकनीक निगरानी का उपयोग करके लोकतंत्र के मूल्यों के खिलाफ जाने की छूट मिल जाती है. अब हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के एक नए अज्ञात युग की ओर बढ़ रहे हैं. हम नहीं जानते कि हमारा भविष्य कैसा होने वाला है. लेकिन सच पूछें तो हमें तकनीक से परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है. यह तकनीक हमारे खंडित और विभाजित समाज के हाथों में क्या करेगी यह चिंता का विषय है. लॉस एंड डैमेज फंड पर निर्णय लेने के लिए बनी ट्रांजिशनल कमेटी (यह जलवायु परिवर्तन संबंधित चरम मौसम की घटनाओं से लगातार प्रभावित देशों और समुदायों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है) की आखिरी मीटिंग का उदाहरण लीजिए. दुनिया का सबसे बड़ा ऐतिहासिक उत्सर्जक अमेरिका यह कहते हुए अंतिम समझौते से मुकर गया कि फंड को "स्वैच्छिक" प्रकृति का बनाए जाने की आवश्यकता है. ऐसे में उन देशों का क्या होगा, जिन्हें इन आपदाओं से हुए नुकसान की भरपाई के लिए रियायती और अनुदान आधारित वित्त की आवश्यकता है? आज हम जानते हैं कि जलवायु वित्त ऐसे देशों पर केवल कर्ज का बोझ बढ़ा रहा है, उन्हें गरीबी और असुरक्षा के दुश्चक्र में फंसा रहा है. यह निधि प्रदूषक के दायित्व के रूप में देशों को "भुगतान" करने की आवश्यकता पर आधारित होनी थी. अब, अमेरिका की चली तो यह निराश समुदायों को खैरात बांटने की एक और पेशकश बनकर रह जाएगी. हम यह नहीं होने दे सकते. 2030 तक, यह प्रति व्यक्ति उत्सर्जन और कार्बन बजट में हिस्सेदारी के मामले में अमेरिका के बराबर हो जाएगा (यदि अमेरिका कटौती के अपने लक्ष्यों को पूरा करता है). चीन लो-कार्बन ट्रांजिशन के लिए आवश्यक प्रमुख खनिजों और प्रौद्योगिकियों के मामले में सबसे आगे है, जो इसे ई-कारों से लेकर सौर पैनलों तक सब कुछ के निर्माण के मामले में दुनिया के बाकी हिस्सों से बेहतर बनाता है. यह कई देशों के लिए प्रमुख फाइनेंसर भी है और विकास को फिर से शुरू करने या ऋण जोखिम को कम करने के मामले में महत्वपूर्ण है.

> जब गाजा पर बमबारी की तस्वीरें घरों में प्रसारित की जाती हैं, तो जनाक्रोश बढ़ता है और हमारी दुनिया को टुकड़ों में बांट देता है. आप पक्ष ले सकते हैं, लेकिन आप दुनिया को एक साथ नहीं चला सकते. इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष जैसे मुद्दों को सुलझाने में संयुक्त राष्ट्र असहाय महसूस कर रहा है.

मीडिया में अन्यत्र

सतत सामाजिक संकट

भारत ग्लोबल साउथ (दुनिया के विकासशील देश) के नेतृत्व या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के साथ जहां विश्व स्तर पर अपने कद को बड़ा करना चाहता है, वहीं राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े बताते हैं कि महिला सुरक्षा के मोर्चे पर हालात बेहद खराब हैं. एनसीआरबी के रिकॉर्ड के मुताबिक 2021 की तुलना में 2022 में महिलाओं पर अपराध में चार फीसदी का इजाफा हुआ है.यह बढ़ोतरी मामूली लग सकती है लेकिन इसी अवधि में संज्ञेय अपराधों में आई 4.5 फीसदी की कमी के बरअक्स देखें तो यह अच्छी खासी वृद्धि है. वर्ष 2022 में कुल 4,45,256 मामले दर्ज किए गए, यानी हर घंटे 51 प्राथमिकी दर्ज की गईं. इसके बावजूद यह चौंकाने वाला आंकड़ा शायद काफी हद तक सीमित तस्वीर पेश करता है और केवल उन्हीं अपराधों के बारे में बताता है जिन्हें दर्ज किया गया. यह बात हम सभी जानते हैं कि महिलाएं अपने विरुद्ध होने वाले अपराधों की जानकारी देने के लिए सामने नहीं आतीं. इसकी कई वजह हैं जिनमें सामाजिक शोषण से लेकर व्यक्तिगत खतरा, हठधर्मिता और पुलिस तथा न्यायपालिका की उदासीनता तक शामिल हैं. ऐसे में कहा जा सकता है कि संकट कहीं अधिक गंभीर है.महिलाओं के लिए असुरक्षित माहौल ही उन्हें श्रम शक्ति में शामिल होने से रोकता है. यह बात भी देश की कमजोर श्रम शक्ति भागीदारी दर के लिए जिम्मेदार है. एनसीआरबी के आंकड़े बताते हैं कि समस्या की शुरुआत भारतीय परिवारों में ही होती है जहां पति या रिश्तेदारों की क्रूरता 31.4 फीसदी मामलों की प्राथमिक वजह है. हालांकि यह विशिष्ट अपराध के मामले में दहेज विरोधी कानूनों को सख्त बनाने की तत्काल आवश्यकता है, लेकिन इसके साथ ही यह महिलाओं को वस्तु समझने के सामाजिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण को भी दर्शाता है. लब्बोलुआब यह है कि ऐसे रवैये में पुरुष नौकरी या करियर के मामले में परिवार की महिलाओं की वित्तीय या सामाजिक स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति नहीं रखते. यह पुरुषवादी मानसिकता कई स्तरों पर प्रभाव उत्पन्न कर सकती है. यह स्वतः ही कार्यस्थल तक पहुंच जाता है और महिला कर्मचारियों के करियर को प्रभावित करता है. **(बिजनेस सटैंडर्ड)**

शब्द चर्चा

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

गीत/गजल

फिल्म रानी रूपमती का यह गाना-लौट के आ जा मेरे मीत, तुझे मेरे गीत बुलाते हैं या फिल्म गीत का यह गाना-आ जा तुझको पुकारे मेरे गीत रे ओ मेरे मीत रे ओ मेरे मितवा, यह प्रमाणित करने के लिए काफी हैं कि हिंदी फिल्मों के गीतकारों को गीत लिखने के साथ ही 'गीत' शब्द से भी बहुत प्यार रहा है. सर्वविदित है कि हिंदी फिल्मों में गीतों के साथ गजलों के प्रयोग भी जमकर हुए हैं. तो क्या गीत और गजल दोनों एक ही हैं? वर्धा हिंदी शब्दकोश के अनुसार गीत संस्कृत मूल का तत्सम संज्ञा पुल्लिंग शब्द है. इसका मतलब है गाना, सस्वर गाया जानेवाला छंद, गान, वह पद्यात्मक रचना, जिसे गाया जा सके, बड़ाई, प्रशंसा. विशेषण के रूप में गीत का मतलब है गाया हुआ, किसी की गुणगान, कथित. इससे बना शब्द है गीतकार, जिसका मतलब है गीत की रचना करनेवाला. गीतप्रिया का अर्थ है कार्तिकेय भगवान की माता, गीतों की अनुरागिनी स्त्री. गीत से बने शब्द गीता का अर्थ है श्रीमद्भगवद्गीता नामक ग्रंथ. गजल फारसी मूल का संज्ञा स्त्रीलिंग शब्द है. इसका मतलब है उर्दू, हिंदी या फारसी में मुख्यतः प्रेम विषयक काव्य, जिसमें पांच से ग्यारह शेर होते हैं और सभी शेर एक ही रदीफ और काफिया में होते हैं. गजल का मतलब प्रेमिका से वार्तालाप, पद्य या मुक्तक काव्य का रूप, जिसमें प्रतीकात्मक और गीतात्मकता के साथ अनुभूति की तीव्रता होती है. अब गीत और गजल में अंतर पर एक नजर डालते हैं. हर गजल को बतौर गीत गाया जा सकता है, लेकिन हर गीत को गजल नहीं बनाया जा सकता. गीत छंद युक्त या छंद मुक्त कुछ भी हो सकता है, पर ग़ज़ल हज़ारों छंदों में से कुछ खास किस्म के छंदों को ही कहा जाता है. ग़ज़ल के छंद को उर्दू में बहर कहते हैं, जिसमें मतला (पहला शेर), रदीफ, क़ाफ़िया (तुक) और एक खास लघु गुरु क्रम होता है.

वीवीआईपी कल्चर ओवरलोड से देश पंचर

• तीर-तुक्का

सूर्यदीप कुशवाहा

भाई! शुभ मुहूर्त चालू आहे. हर जगह शादी-ब्याह, फंक्शन और उद्घाटन समारोह में दो ही वर्ग दिखता है-एक आम आदमी और दूसरा वीवीआईपी. इनका रहना निहायत जरूरी है. आम आदमी पहले से ही मौजूद रहता है, क्योंकि वह खाली है, जबकि वीवीआईपी का इंतजार किसे नहीं होता है. दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं. आम की भीड़ में वीवीआईपी चमकता है. वह इतराता है. इनके बिना वह फ्यूज बल्ब की तरह होता है. आम आदमी चुप ही रहता क्योंकि वह बोलना भी चाहे तो क्या बोले. अभी उसमें बूझने की शक्ति पूरी तरह से गायब है. अलबत्ता, देश में वीवीआईपी ही फर्राटे से बोल रहे हैं. झाड़ रहे हैं, वह भी बिना लगाम लगाए बे-रोक-टोक. यह अजीब-सी संस्कृति है, जो धड़ल्ले से अपनायी जा रही है. देश फटेहाल दिखे, लेकिन क्या मजाल वीवीआईपी का सूट-बूट फटेहाल दिख जाए. इनकी लक्ज़रीयस लाइफ देख गरीबी आत्महत्या करने की सोचती है. बस आम आदमी के गले पड़कर वेंटीलेटर पर जिंदा है. उसे वीवीआईपी कल्चर को झेलना मुश्किल है. ऐसा लगता है कि जमाना इसी का दीवाना हो. वीवीआईपी बंगले में रह-रहकर यहां से वहां, वहां से यहां ही करता है. इसके सिवाय उसे कोई काम नहीं है. आम आदमी चाहता है कि सुबह -सुबह भगवान से पहले वीवीआईपी का दर्शन हो जाए. फोटो फ्रेम में सज जाए. उसका लाइक कमेंट से पोस्ट पट जाए. अक्सर ऐसे पोस्ट देखे जा सकते हैं. ये बेकार की बातें नहीं हैं. फिलहाल, शुभ लगन चल रहा है. यहां दोनों का भरत-मिलाप होना नियति है. वीवीआईपी आम आदमी का चेहरा नहीं देख पाता है, क्योंकि उसकी आंखों पर ब्रांडेड चश्मा चढ़ा है. वीवीआईपी गाता है. खींच मेरी फोटो. तस्वीर मोबाइल से लिया गया है. कभी-कभी वीवीआईपी खीझ जाता है. किसी चीज की अति बुरी होती है, जिसके कारण झापड़.या धक्का का थक्का जमा देता है. यह खबर बन जाता है. जबकि देश की भीषण समस्याओं की खबरें बनने का इंतजार कर रही हैं. लेकिन मीडिया पहुंच ही नहीं पाती है. आम आदमी बेचारा है, क्योंकि उसके पास कोई चारा नहीं है. वह लाव -लश्कर के साथ घूमता है, आम आदमी डर जाता. वह रुक जाता तो बेचारा कांपने लगता. वीवीआईपी समारोह में अपनी अकड़ को पकड़ कर रखता है. पुलिस की जीप आगे-पीछे चलती है. हाल और चाल माशाअल्लाह है. आम होना कितना दर्दनाक है, जबकि वीवीआईपी होना खतरनाक है. देश में इस कल्चर का क्रेज शर्मनाक हद पार कर रहा है. आम आदमी अपनी नाक बचाने में ही लगा हुआ है.

फिर नजर आया आलिया का ग्लैम अवतार

सऊदी अरब के जेद्दा में रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के समापन समारोह के रेड कार्पेट पर आलिया भट्ट की मौजूदगी इन दिनों सोशल मीडिया पर घूम रही है. रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के 'इन-कन्वर्सेशन' साइडबार सेक्शन (सात दिसंबर) में आलिया न्यूड रंग की ऑफ-शोल्डर शिमरी ड्रेस में शामिल हुईं जिसके साथ डेवी मेकअप और लहराते बाल भी थे. आलिया की ये तस्वीरें और वीडियो उनके ऑनलाइन फैन पेज पर शेयर किए गए हैं और अब ताबड़तोड़ इंटरनेट पर वायरल हो रहे.

डियर जिंदगी से गंगूबाई काठियावाड़ी तक

रेड कार्पेट पर आलिया ने कहा कि वह इस इवेंट का हिस्सा बनकर गर्वित और सम्मानित महसूस कर रही हैं. कार्यक्रम के दौरान आलिया ने डियर जिंदगी के सेट पर शाहरुख खान के साथ अपने पहले शॉट की यादों को याद करने के अलावा, अपने करियर और रणबीर कपूर के साथ अपने मैरिड लाइफ के बारे में भी बात की.

हिट रहा यह डायलॉग

आलिया भट्ट ने रेड सी इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में गंगूबाई काठियावाड़ी का एक फेमस डायलॉग बोलकर दर्शकों का दिल जीत लिया. बता दें कि 2022 में रिलीज़ हुई क्राइम ड्रामा गंगूबाई काठियावाड़ी में उनकी खास फिल्मों में एक है. संजय लीला भंसाली निर्देशित इस फिल्म को खूब प्रशंसा मिली और इसमें अदाकारी के लिए आलिया भट्ट को भी सराहा गया था. आलिया ने जब फिल्म का एक संवाद सुनाया, दर्शकों ने जोरदार तालियां बजा कर इसका स्वागत किया.

आलिया भट्ट के वर्कफ्रंट की बात करें तो आखिरी बार एक्ट्रेस करण जौहर की फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में नजर आई थीं. रिपोर्ट्स की मानें तो अब एक्ट्रेस फिल्म जिगरा के लिए शूट कर रही हैं. कहा जा रहा है कि इस फिल्म में आलिया भट्ट का एक्शन अवतार नजर आने वाला है. हालांकि जिगरा को लेकर फिलहाल मेकर्स की तरफ से कोई कंफर्मेशन नहीं आया है.

विक्की के संग कुछ है जो अनकहा है

मेघना गुलजार इन दिनों फिल्म सैम बहादुर के लिए चर्चा में हैं. 'तलवार', और 'राजी' जैसी चर्चित और हिट फिल्मों की संवेदनशील निर्देशक के रूप में पहचान बनाने वाली मेघना गुलजार इसी हफ्ते (13 दिसंबर) अपना जन्मदिन मनाएंगी. आइए, इस मौके पर एक साक्षत्कार के जरिए उनके विचार और जिंदगी के अलग-अलग पहलुओं से वाफिक हों-

अपनी देशभक्ति को परिभाषित कीजिए

देशभक्ति को लेकर मेरा नजरिया अंदरूनी है. मेरी नजर में देशभक्ति एक तरफा नहीं होती. आपको जब अपने देश पर गर्व है, तो आप देशभक्त हैं. वहीं यह भी कहना चाहिए कि आपके देश को आप पर गर्व है.

▪ विक्की कौशल के साथ 'राजी' के बाद सैम बहादुर फिल्म की. आप दोनों के साथ पर कुछ कहिए.

बतौर एक्टर विक्की हमेशा मेरी पसंद रहे हैं. सैम बहादुर फिल्म के दौरान मैंने महसूस किया कि हम दोनों के बीच एक अनकहा-सा बॉन्ड है. बेशक अपनी निजी जिंदगी में हम बमुश्किल मिलजुल पाते हैं. सैम बहादुर शुरू होते ही हम दोनों ने महसूस किया कि हम दोनों एक दूसरे के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं. एक दूसरे के साथ काम करना हमारी जरुरत है.

▪ सैम मानेकशॉ जैसे किरदार के हीरोइज्म को दिखाना कितना चुनौतीपूर्ण था?

स्टीरियो टाइप किरदारों से हमेशा मुझे परहेज रहा है. हालांकि हिंदी फिल्मों में हम पारसी हो या सरदार या फिर मुस्लिम किरदार, सभी को एक स्टीरियो टाइप में देखते आए हैं. लेकिन 'राजी' में भी मैंने वहां के किरदारों को भी टिपिकल गेटअप नहीं दर्शाया. सैम बहादुर की बात करें तो मानेक शॉ स्वयं भी एक स्टीरियोटाइप पारसी नहीं थे. कई प्रांतों से उनका नाता था. कई संस्कृति में रचा बसा उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्लस पॉइंट साबित हुआ. हमें उन्हें एक टिपिकल सांचे में ढालने की जरूरत ही नहीं पड़ी.

▪ महिला सशक्तिकरण की दिशा में क्या किया जाना शेष है?

अपनी बात करूं तो जिस सामाजिक, आर्थिक शैक्षिक बैकग्राउंड से आती हूं, मुझे कभी लैंगिक असमानता का सामना नहीं करना पड़ा. न घर पर और न कार्यस्थल पर.
चूंकि मेरे करियर की शुरुआत फिलहाल जैसी सरोगेसी पर आधारित फिल्म से हुई, तो मुझपर महिला प्रधान निर्देशक का टैग लगा. पर यह भी तलवार फिल्म के आते ही हट गया. बेशक गांवों में आज भी महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं. बेटे-बेटियों की पढ़ाई-लिखाई में फर्क होता, लड़कियों को आर्थिक मौके कम मिलते हैं. कई परंपराएं उन्हें पीछे ढकेलती हैं, पर कानून बनाना इसका उपाय नहीं. हमारी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि हम अपनी जिंदगी में नई सोच को शामिल करें.

▪ सैम बहादुर में आपके पिता का गीत है बढ़ते चलो... पिता के बारे में कुछ कहिए.

उनके सामने आज भी छोटी सी बच्ची ही हूं. खूब जिद करती हूं और बेटी होने का भरपूर फायदा उठाती हूं. जहां तक फिल्मों की बात है, इसको लेकर हमदोनों की सोच बिल्कुल अलग है. बावजूद इसके, चूंकि हमने कई फिल्में साथ कर ली है, तो अब उनसे गीत लिखवाने में कोई दिक्कत नहीं होती.

▪ मम्मी राखी के बारे में बताएं.

अगर मैं चाहूं कि मम्मी को अपनी किसी निर्माणाधीन फिल्म का कोई सीन, कोई गाना या ट्रेलर दिखाउं तो यह मेरे बस की बात नहीं. वे मेरे काम को तभी देखती हैं जब वह पूरी तरह कंप्लीट हो जाए. दो टूक कहती हैं, बस एक दर्शक की तरह तुम्हारी फिल्म मुझे देखनी है.

तृप्ति से कम नहीं रहा इनका जलवा

इन दिनों तृप्ति डिमरी चर्चा में हैं. दरअसल रणबीर कपूर के साथ एनिमल फिल्म में दिए गए उनके बोल्ड सीन जहां इंटरनेट पर वायरल हो रहे, वहीं तृप्ति का नाम भी सुर्खियों आ गया है. तृप्ति और एनिमल के बहाने आइए कुछ ऐसा अभिनेत्रियों की चर्चा करें जो ऐसे ही बोल्ड सीन को लेकर चर्चा में आई थीं.

राधिका आप्टे

राधिका आप्टे ने फिल्म 'पार्चड' में जमकर बोल्ड सीन दिए थे और ये सीन भी इंटरनेट पर तेजी से वायरल हुए थे. राधिका इन बोल्ड दृश्यों के लिए खूब ट्रोल भी हुई थीं.

सनी लियोनी

सनी लियोनी की चर्चा के बिना इस सूची को पूरा नहीं किया जा सकता. सनी लियोनी ने फिल्म 'जिस्म 2' में कई बोल्ड सीन दिए थे. इस फिल्म के बाद ही उसकी पहचान ही ऐसी बन गई.

उदिता गोस्वामी

'जहर' फिल्म में उदिता गोस्वामी ने ताबड़तोड़ बोल्ड सीन दिए थे. कहा जाता था कि उदिता ने इमरान हासमी के साथ बोल्ड सीन की सभी हदें इस फिल्म में तार कर दी थी.

बोल्ड सीन की बात होती है तो आज भी 'राम तेरी गंगा मैली' फिल्म याद आ जाती है. इसमें सफेद साड़ी में उस जामने में मंदाकिनी ने जबर्दस्त बोल्ड सीन दिए थे.

मंदाकिनी

नंदना सेन

नंदना सेन ने फिल्म 'रंग रसिया' में बोल्ड सीन दिया था. सोशल मीडिया पर इसको लेकर विवाद भी हुआ था. वर्ष 2014 में आई इस फिल्म की आज भी चर्चा होती है.

पूनम पांडे

पूनम पांडे ने अपनी डेब्यू फिल्म 'नशा' में ही बोल्ड सीन दिए थे. वर्ष 2013 में आई फिल्म नशा' एक ऐसे लड़के की कहानी थी जो अपने से ज्यादा उम्र की लड़की से प्यार कर बैठता है.

मानवीय अच्छाई की कथा कहती 'गोष्ठा एका पैठणीची'

हस्ताक्षर

विनोद अनुपम
वरिष्ठ फिल्म स्तंभकार

'गोष्ठा एका पैठणीची' यानी एक पैठणी साड़ी की कहानी, एक जूरी के साथ देखते हुए जो पहली प्रतिक्रिया मिली थी, बकवास, ऐसा भी होता है, इतने भले लोग, लगता है किसी और दुनिया की कथा है. वाकई आज के समय में यह किसी और दुनिया की कथा लग सकती है, लेकिन सवाल है इसमें गलती किसकी है, जिसने एक सही दुनिया की परिकल्पना की है उसकी, या फिर जिसने ऐसी दुनिया बना रखी है. कोई यदि हमें हमारी अच्छाई याद दिलाना चाह रहा तो वह गलत कैसे हो सकता है. शायद यह भी एक बडी वजह रही होगी कि 'गोष्ठा एका पैठणीची' सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म के रुप में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के लिए चुनी जाती है.

वास्तव में पैठणी साडी महाराष्ट्र के सौंदर्य संस्कृति और गरिमा के प्रतीक के रुप में जानी जाती है. इसकी परंपरा सैकड़ों वर्ष प्राचीन मानी जाती है. कहते हैं पेशवाओं ने इसके कारीगरों को औरंगाबाद के पास येओला शहर में बसाया था. कारीगरों को प्राकृतिक रंगों,रेशम के धागों और सोने की जरी से एक एक पैठणी साड़ी बनने में साल भर से अधिक का समय लग जाता है. चूंकि सारा काम हाथ से ही होना है, एक बार में एक डिजाइन की दो तीन पैठणी साडियां ही बनती है, जिसकी कीमत अमूमन लाख रुपए से उपर ही होती. फिल्मकार पैठणी बनने की पूरी प्रक्रिया अपनी कहानी में गूंथने से संकोच नहीं करते. क्या कांट्रास्ट की पैठणी की कहानी उस स्त्री से शुरु होती जो पैठणी पहन ही नहीं सकती.
कहानी इंद्रयाणी की है, जो घर में ही साड़ियों पर फाल लगाने का काम करती है, पति सुजीत की फूलों की दुकान है, लेकिन किसी दुर्घटना के कारण वह चलने से लाचार है. इंद्रयाणी के हाथों उसके एक अमीर पड़ोसी की पैठणी साड़ी खराब हो जाती है. वह पैठणी साड़ी खराब होने की बात कह पडोसी के सामने अपने विश्वास को खोना नहीं चाहती, लेकिन दूसरी ओर इतनी मंहगी और इसी तरह की साड़ी ले पाना उसके लिए आसान भी नहीं. यही पैठणी साड़ी ढूंढने की प्यारी सी कहानी है 'गोष्ठा एका पैठणीची', जिसके बीच पैठणी के रेशे रेशे को हम जानते जाते हैं, एक नारी के

आत्मसम्मान को भी, उसके संघर्ष की ताकत को भी, उसके प्यार और संवेदना को भी, सबसे बढ कर समाज में सुरक्षित अच्छाइयों को भी.
युवा फिल्मकार शांतनु गणेश रोडे इस फिल्म में एक ऐसी दुनिया रचते हैं, जहां कोई बुरा है ही नहीं. इस फिल्म को देखते हुए हिंदी के दर्शकों को सहज ही 'राजश्री' की 'विवाह' और 'हम आपके हैं कौन' जैसी फिल्में याद आएंगी, जहां परिस्थितियां गलत होती हैं, व्यक्ति नहीं. इंद्रयाणी शहर शहर घूम रही उसी तरह की पैठणी साड़ी को ढूंढने, अकेले. अनजान शहर, अनजान लोग, रात में बस स्टैंड में सन्नाटे के बीच अकेले देख बुरा देखने के आदि हो चुके मन में ख्याल आता है, कुछ बुरा होगा. लेकिन दिखता है, इंद्रयाणी, जो कर्ज लेकर पैठणी साड़ी खरीदने निकली है, अपनी गर्म चादर ठंड से कंपकंपाते एक बूढे भिखारी के शरीर पर डाल देती है.
वास्तव में अच्छाइयां ही अब विस्मित करती हैं. इंद्रयाणी को तमाम कोशिशों के बाद भी उसी तरह की पैठणी साड़ी नहीं मिल पाती. अंत में वह तय करती है कि अपनी अमीर ग्राहक से मिल कर माफी मांग लेगी. लेकिन वह अमीर पड़ोसी भी कुछ ऐसा करती है कि इंद्रयाणी को अपनी गलती के लिए शर्मिंदा होना नहीं पड़ता. वास्तव में अमीर होने का मतलब बुरा होना ही नहीं होता, जैसा नैरेटिव सिनेमा ने गढा है.
'गोष्ठा एका पैठणीची' जैसी फिल्में आश्वस्त करती हैं कि हम अभी भी अच्छाई सोच सकते हैं, अच्छाई पसंद करते हैं. इस फिल्म के बारे में जानना इसलिए भी जरुरी है कि हम विचार कर सकें, जब मराठी में ऐसी फिल्में बन सकती हैं तो हमारी भाषा में क्यों नहीं?

संयोजन : चेतना झा, डिजाइनिंग - खुशबू कुमारी

ब्रीफ खबरें

ट्रक ने छह लोगों को रौंदा, तीन की मौत

सीवान । जिले में अनियंत्रित ट्रक ने शुक्रवार की शाम बाइक सवार सहित करीब आधा दर्जन लोगों को कुचल दिया. इस हादसे में तीन लोगों की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई. वहीं, तीन लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं. एक घायल को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है. ट्रक चालक ट्रक छोड़कर मौके से फरार हो गया. घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी का माहौल हो गया है. घटना सीवान जिले के नगर थाना क्षेत्र स्थित आंदर ढाला ओवरब्रिज के समीप की है. मृतकों की पहचान जिले के विमलेश सिंह, अभिषेक कुमार और रितेश शर्मा के रूप में हुई है.

तिरुपति रवाना हुआ लालू का परिवार

पटना । राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव, उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, मंत्री तेज प्रताप यादव, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी सहित लालू यादव के परिवार के कई सदस्य शुक्रवार को तिरुपति बालाजी के लिए रवाना हुए हैं. 9 दिसंबर को उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव की शादी की सालगिरह है और इस उपलक्ष्य में पूरा परिवार बालाजी के दर्शन करने तिरुपति गया है. कल पूरा परिवार साथ में बालाजी भगवान की पूजा-अर्चना करेगा. पटना एयरपोर्ट पर लालू प्रसाद यादव ने किसी भी तरह के राजनीतिक सवाल का जवाब नहीं दिया.

दानापुर में बीसीए के छात्र ने की खुदकुशी

पटना । रूपसपुर थाना क्षेत्र के कालीकेत नगर स्थित एक निजी हॉस्टल में 22 वर्षीय छात्र ने आत्महत्या कर ली. मृतक आरा भोजपुर का रहने वाला शिवम कुमार बताया जा रहा है. सूचना के बाद पहुंची रुपसपुर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर परिजनों को घटना की जानकारी दी. फिलहाल आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चल सका है. मिली जानकारी के अनुसार शिवम कालीकेत नगर स्थित हाईटेक नामक हॉस्टल में रहकर बीसीए की पढ़ाई कर रहा था. शिवम ने देर शाम हॉस्टल में आत्महत्या कर ली. पुलिस मामले की छानबीन शुरू कर दी है.

अपराधियों ने कार रुकवा कर किया टारगेट, आक्रोशितों का हंगामा

वैशाली में राजद नेता मैनेजर सहनी की गोली मारकर हत्या

संवाददाता । वैशाली

वैशाली जिले के पातेपुर प्रखंड के नवसृजित थाना महिसौर के अजीतपुर चांद पंचायत के उप मुखिया पति व राजद नेता मैनेजर सहनी की गोली मारकर हत्या कर दी गई है. बाइक सवार बदमाशों ने मरूई चौक के पास उनको गोली मार दी. घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने महुआ ताजपुर रोड बहुआरा के निकट शव को सड़क पर रखकर जाम कर दिया है और हंगामा करने लगे. जानकारी के अनुसार मैनेजर सहनी अपनी कार से मूसापुर की तरफ जा रहे थे. इसी दौरान मरूई चौक पर एक बाइक पर सवार दो बदमाशों ने उनकी कार रुकवाई और उनसे बातचीत करने लगे. फिर देखते ही देखते उनको गोली मारकर फरार हो गए. फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है.

स्थानीय लोगों ने किया सड़क जाम : स्थानीय लोगों ने गोली चलने की आवाज सुनी और भागे-भागे मौके पर पहुंचे. स्थानीय राजद नेता को स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. मृतक राजद मत्स्यजीवी प्रकोष्ठ में पदाधिकारी बताए जाते हैं. वहीं, घटना के बाद लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया. सड़क जाम कर दिया गया है. स्थानीय लोगों का कहना है कि पैसे के लेनदेन को लेकर विवाद था. इसी को लेकर उनको जान से मारने की धमकी भी मिली थी. गुरुवार देर शाम मैनेजर सहनी कार से चौक की तरफ निकले थे, जहां से लौटने के क्रम में उन्हें आवाज देकर अपराधियों ने रोका था. अपराधी भी कार से ही बताए जा रहे हैं. पहले उनसे बातचीत की और फिर ताबड़तोड़ आधे दर्जन से ज्यादा राउंड गोलियां चल दी. चार से पांच गोलियां मैनेजर सहनी को लगी थी.

प्रेमिका से मिलने गए प्रेमी को पीट-पीटकर मार डाला

बगहा । बगहा में एक प्रेमी युगल की संदिग्ध परिस्थिति में मौत हो गई. घर के अंदर से दोनों का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई है. वहीं स्थानीय लोगों का कहना है कि हत्या कर दोनों के शव को फंदे से लटका दिया गया है. प्रेमी युगल की मौत पर सस्पेंस बना हुआ है. सूचना का बाद मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुटी है. घटना रामनगर थाना क्षेत्र की है, जहां एक साथ दो शव मिलने से इलाके में दहशत है, पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है. साथ ही आगे की कार्रवाई में जुटी है. मृतक प्रेमी के परिजनों का आरोप है कि इन दोनों की हत्या की गई है, जबकि प्रेमिका के परिजनों का कहना है कि इन दोनों ने आत्महत्या कर ली है. सूचना के बाद बगहा एसपी किरण कुमार गोरख जाधव भी दलबल के साथ मौके पर पहुंचे और मामले की जानकारी ली. बताया जाता है कि दोनों के बीच तकरीबन दो साल से प्रेम-प्रसंग चल रहा था. प्रेमिका शादीशुदा थी और उसका पति बाहर मजदूरी करता है. इसी बीच गुरुवार को देर रात प्रेमिका के घर प्रेमी मिलने पहुंचा था, लेकिन सुबह-सुबह दोनों का शव घर में फंदे से लटका हुआ मिला. फिलहाल रामनगर पुलिस तमाम बिंदुओं पर मामले की जांच कर रही है और हत्या और आत्महत्या की गुत्थी सुलझाने में जुट गई है.

सड़क हादसे में दो लोगों की दर्दनाक मौत

बेगूसराय । बेगूसराय में दो अलग-अलग सड़क हादसों में दो लोगों की दर्दनाक मौत हो गयी. पुलिस दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले के छानबीन में जुट गयी है. पहली घटना साहेबपुर कमाल थाना क्षेत्र के वार्ड संख्या 3 की है. जहां सड़क पार कर रही महिला को ट्रक ने रौंद डाला. जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गयी. महिला की पहचान बाबूराही गांव निवासी बुदाई यादव की पत्नी दरेस देवी (65 वर्षीय) के रूप में हुई है.

जानकारी के अनुसार, दरेस देवी बेगूसराय से इलाज कराकर घर लौट रही थी. इसी दौरान कुरहा बाजार जाने के लिए एनएच पार कर रही थी. इसी दौरान दरेस देवी को ट्रक ने रौंद डाला. दूसरी घटना बलिया थाना अंतर्गत वार्ड संख्या 2 की है. यहां दो बाइक की जोरदार भिड़ंत हो गयी. जिसमें सदानंदपुर गांव निवासी महेंद्र दास की मौके पर ही मौत हो गयी. बताया जाता है कि महेंद्र दास बड़ी बलिया स्थित हाईस्कूल से घर जा रहे थे.

शॉर्ट सर्किट से लगी आग 7 गाड़ी जलकर राख

गया । गया में चार पहिया वाहनों के गैरेज में भीषण आग लग गई. आग लगने की घटना में सात वाहन धू-धूकर जल गए. यह घटना विष्णुपद थाना अंतर्गत खटकाचक में स्थित एनआर ऑटोमोबाइल शोरूम में हुई. आग लगने से लाखों का नुकसान हुआ है. वहीं, गैरेज में रखा एक सिलेंडर भी विस्फोट कर गया. सिलेंडर के विस्फोट की आवाज से लोग सहम गए. शोरूम के मालिक अमानुल्लाह ने बताया कि बड़ी मुश्किल से इस गैरेज को लोन लेकर खोला था. सब कुछ जलकर खाक हो गया है. आग लगने के दौरान सिलेंडर में जोरदार विस्फोट हुआ. हालांकि विस्फोट से किसी को क्षति नहीं हुई है. दरअसल एनआर ऑटो मोबाइल में गुरुवार देर रात को आग लग गई. शुक्रवार को इतनी भीषण थी, कि देखते-देखते गैरेज में रखे कई वाहन चपेट में आ गए. एक के बाद एक सात वाहन पूरी तरह से जल गए. वहीं एक वाहन आंशिक रूप से जला है. कुल सात वाहनों के जलने की घटना की जानकारी के बाद मकान गैरेज मालिक अमानुल्लाह उर्फ छोटू कुमार काफी सदमे में हैं. उन्होंने प्रशासन से मुआवजे की मांग की है.

आओ जानें

दीघा-सोनपुर रेल-सह-सड़क पुल

- दीघा-सोनपुर रेल-सह-सड़क पुल अथवा जे पी सेतु (लोकनायक जय प्रकाश नारायण सेतु), गंगा पर बना पुल है जो पटना और सोनपुर को जोड़ता है.
- इसकी लंबाई 4,556 मीटर है, 4,556 मीटर (14,948 फीट) लंबाई का यह पुल भारत में असम में बोगीबील ब्रिज के बाद दूसरा सबसे लंबा रेल-सह-सड़क पुल है.
- दीघा-गांधी मैदान सड़क से दीघा सड़क सेतु की दूरी 1.7 किलोमीटर है, दीघा सह संपर्क पथ छह लेन का है.
- दीघा सड़क सेतु के 2.56 कि॰मी॰ लंबे सोनपुर एप्रोच के लिए जमीन मालिकों की आपसी सहमति से उनकी जमीन का 99 साल के लिए अनवरत लीज पर एग्रीमेंट किया है
- 2.56 कि॰मी॰ सोनपुर एप्रोच में सारण जिला के गंगाजल, चौसिया, भरपुरा और सुलतानपुर गांव की जमीन है.

10 को पटना में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक

एक मंच पर दिखेंगे अमित शाह और नीतीश कुमार!

- झारखंड का विकास मॉडल पेश कर सकते हैं हेमंत सोरेन

ज्ञानवर्द्धन मिश्र । पटना

पांच राज्यों में हुए विधान सभा चुनाव में इंडिया को मिली करारी पराजय व बिहार में नित्य घट रहे नये राजनीतिक घटनाक्रम के बीच 10 दिसंबर को पटना में होनेवाली पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह एक मंच पर दिखेंगे. हालांकि ऐसा होता भी है, तो यह महज औपचारिकता हो सकती है, लेकिन राजनीति में इसके अलग मतलब भी निकाले जा सकते हैं. वहीं, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन बैठक में विकास का अपना झारखंड मॉडल भी पेश कर सकते हैं.

नीतीश पिछले कई मौकों पर केंद्रित गृह मंत्री के साथ मंच साझा करने से बचते रहे हैं. गौरतलब है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 9 अगस्त 2022 को एनडीए से अलग हुए थे. इसके बाद से नीतीश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह से आमने-सामने कभी नहीं हुए. दिल्ली में कई बार सरकारी बैठक हुई. नीति आयोग की बैठक में भी नीतीश कुमार शामिल नहीं हुए, लेकिन जी-20 शिखर सम्मेलन के मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा दिये गये रात्रि भोज में नीतीश कुमार शामिल हुए थे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी मुलाकात भी हुई थी. वहीं, पिछले साल दिसंबर में कोलकाता में आयोजित पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की 25वीं बैठक, जिसकी अध्यक्षता भी केंद्रीय गृह मंत्री ने की थी, उस बैठक से भी नीतीश कुमार दूर रहे थे. उनकी जगह उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव बतौर प्रतिनिधि गए थे. चूंकि इस बार यह बैठक पटना में हो रही है, इसलिए अमित शाह व अन्य मुख्यमंत्रियों के साथ नीतीश कुमार के बैठक में शामिल होने की मजबूरी भी है. बैठक में नीतीश के अलावा तीन अन्य राज्यों झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्रियों के शामिल होने की संभावना है. झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन से केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह की इसी सप्ताह रांची में मुलाकात हुई थी.

इधर, भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने मुख्यमंत्री पर तंज कसते हुए कहा यह अच्छी बात है कि मुख्यमंत्री ने उस बैठक में शामिल होने की बात कही है. लेकिन, वे बैठक में स्वस्थ और स्वच्छ मन से शामिल हों. किसी पूर्वाग्रह को लेकर बैठक में शामिल न हों. वे बिहार के विकास की बात करें.

गौरतलब है कि पटना में सात साल के बाद पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक हो रही है. पूर्वी क्षेत्रीय परिषद में शामिल चार राज्यों में पांच बार इसकी बैठक पटना में हुई है.

ट्रेन से कटकर पिता ने अपने दो पुत्रों के साथ की खुदकुशी

गोपालगंज । जिले में शुक्रवार को ट्रेन के आगे परिवार का सामूहिक आत्महत्या के मामले से हड़कंप मच गया है. मिली जानकारी के अनुसार युवती की मौत से आहत होकर एक ही परिवार के तीन लोगों ने ट्रेन के आगे कूदकर सामूहिक रूप से आत्महत्या कर ली है. मामला बरौली थाना क्षेत्र के चंदन टोला का है. ट्रेन से कटकर मरनेवालों में पिता और दो पुत्र शामिल है. मृतकों की पहचान रामसूरत महतो और इनके पुत्र सचिन कुमार और दीपक कुमार के रूप में हुई है. घटना की सूचना मिलने पर बरौली थाने की पुलिस और रेल पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच में जुट गई है.

दो दिन पहले लड़की की मौत हो गई थी : बताया जा रहा है कि रामसूरत चौहान के घर में सुभावती कुमारी नाम की लड़की की बीमारी से दो दिन पहले मौत हो गई. मौत के बाद रामसूरत ने घर में उसके शव को छोड़ दिया. युवती की बीमारी से पूरा परिवार परेशान था. शुक्रवार को रामसूरत अपने दोनों बेटे के साथ ट्रेन से कटकर जान दे दी.

सीवान के शिक्षा पदा. के आवास पर छापेमारी

14 लाख रुपये कैश बरामद

संवाददाता । सीवान

जिला शिक्षा पदाधिकारी के आवास पर निगरानी विभाग ने छापेमारी की है. जिला शिक्षा पदाधिकारी मिथिलेश कुमार सिंह के आवास पर निगरानी विभाग की जांच चल रही है. आय से अधिक संपत्ति मामले को लेकर टीम जांच कर रही है. महादेवा स्थित शिक्षा पदाधिकारी के आवास पर टीम जांच कर रही है. शिक्षा पदाधिकारी आवास के दूसरे तल्ले पर निगरानी की टीम पहुंची है. टीम उनके कमरे में दस्तावेज को खंगाल रही है. वहीं, निगरानी के डीएसपी अभय कुमार ने बताया कि जिला शिक्षा पदाधिकारी मिथिलेश कुमार के ऑफिस और आवास से मिलाकर 14 लाख रुपये बरामद हुए हैं. अभी भी छापेमारी जारी है. विशेष निगरानी इकाई के द्वारा जिला शिक्षा पदाधिकारी के आवास पर आय से अधिक संपत्ति मामले बड़ी कार्रवाई की गई है. वहीं, सीवान में छापेमारी के क्रम में भारी मात्रा कैश बरामद किए गए हैं. बताया जा रहा है कि मिथलेश कुमार जिला शिक्षा पदाधिकारी हैं. वहीं, बिहार के तीन जगहों पर छापेमारी की जा रही है.

कारोबार

सेबी प्रमुख ने अफसोस जताया

नयी दिल्ली । भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की चेयरपर्सन माधवी पुरी बुच ने शुक्रवार को कहा कि बाजार नियामक को इस बात का गहरा अफसोस है कि सैट के निर्देश के बावजूद किर्लोस्कर इंडस्ट्रीज लिमिटेड (केआईएल) में किर्लोस्कर परिवार को शेयरों को मुक्त नहीं किया गया. बुच ने यहां भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) वैश्विक आर्थिक नीति मंच के मौके पर यह बात कही. उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि खातों से (डीफ्रीज) रोक हटाने में देरी के मामले में जो हुआ, वह अस्वीकार्य था.

डेटा केंद्रों के लिए एएमडी ने पेश किए नए समाधान

कैलिफोर्निया । सेमीकंडक्टर चिप विनिर्माता एएमडी के नए उत्पाद इंस्टिंक्ट एमआई300 सीरीज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक्सेलेरेटर को डेटा सेंटर संचालकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है. एएमडी ने इसी हफ्ते कई नए उत्पाद पेश किए हैं जिनमें डेटा केंद्रों के एआई एक्सेलेरेटर उत्पाद एएमडी इंस्टिंक्ट एमआई300 सीरीज, विशाल भाषा मॉडल का समर्थन करने वाले आरओसीएम 6 ओपन सॉफ्टवेयर और राइजन एआई के साथ राइजन 8040 सीरीज प्रोसेसर शामिल हैं.

भारत उठाएगा यूरोपीय संघ के कार्बन कर का मुद्दा

नयी दिल्ली । भारत कुछ आयातित वस्तुओं पर कार्बन कर लगाने की यूरोपीय संघ (ईयू) की योजना का मुद्दे उसके साथ उठाएगा और जरूरत पड़ने पर इसका विरोध भी करेगा. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को यह बात कही. सीबीएएम या कार्बन कर (एक तरह का आयात शुल्क) एक जनवरी, 2026 से लागू होगा. हालांकि, इस साल एक अक्टूबर से इस्पात, सीमेंट, उर्वरक, एल्युमीनियम और हाइड्रोकार्बन उत्पादों सहित सात कार्बन-सघन क्षेत्रों की घरेलू कंपनियों को ईयू के साथ कार्बन उत्सर्जन के संबंध में ब्योरे को साझा करना होगा.

गूगल के एक्शन से पहले ये ऐप 1.20 करोड़ बार डाउनलोड किए जा चुके थे

गूगल ने प्ले स्टोर से हटाए 17 ऐप्स

भाषा । नयी दिल्ली

ऐप्स रिमूव

- साइबर सिक्योरिटी फर्म ईएसईटी की है रिपोर्ट
- साइबर रिपोर्ट में 18 ऐप की पहचान की गई थी

गूगल विश्व में लाखों लोगों को अपनी सुविधाओं को पहुंचाने के लिए जाता है. कंपनी की कोशिश अपने ग्राहकों को बेहतर सुविधा देने की होती है. इसके साथ ही सुरक्षा को लेकर भी गंभीर रहती है. इसके लिए कंपनी अपने यूजर्स की सुरक्षा के लिए प्रयासरत रहती है. इसी के तहत कंपनी ने अपने प्ले स्टोर से 17 ऐप्स को हटा दिया है. ये ऐप यूजर्स के साथ फ्रॉड कर रहे थे. इनमें स्पाय मेलवेयर पाया गया है. साइबर सिक्योरिटी फर्म ईएसईटी की एक रिसर्च रिपोर्ट में पता चला कि धोखाधड़ी करने वाले कई इंस्टेंट लोन ऐप एंड्रॉयड यूजर्स को टारगेट कर रहे हैं. रिपोर्ट में 18 ऐप की पहचान की गई थी. इनमें से गूगल ने 17 ऐप को हटा दिया है, जबकि एक ऐप के डेवलपर्स ने अपनी पॉलिसी को गूगल के नॉर्म्स के अनुसार बदल लिया है. इस कारण उसे प्ले स्टोर से नहीं हटाया गया. हालांकि गूगल के एक्शन से पहले ये ऐप 1.20 करोड़ बार डाउनलोड किए जा चुके थे.

ये ऐप अब थर्ड पार्टी सोर्स जैसे- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और एसएमएस के जरिए टेक्स्ट मैसेज भेजकर लोगों के साथ ठगी कर रहे हैं. ये ऐप भारत सहित मैक्सिको, इंडोनेशिया, थाईलैंड, वियतनाम, पाकिस्तान, कोलंबिया, पेरू, फिलीपींस, मिस्र, केन्या, नाइजीरिया और सिंगापुर में ऑपरेट किए जाते हैं. रिपोर्ट के अनुसार, इंस्टेंट लोन देने के नाम पर ये ऐप कई तरह की परमिशन जैसे- कॉल लॉग्स, स्टोरेज, मीडिया फाइल्स, कॉन्टेक्ट लिस्ट और लोकेशन डेटा को बायपास करते हैं. इसके अलावा यूजर का पर्सनल डेटा हासिल करने के लिए एड्रेस, बैंक अकाउंट और फोटो जैसी डिटेल भी शेयर करने को कहते हैं. बताया जाता है कि ये गूगल के प्ले-स्टोर की पॉलिसी को भी चकमा दे रहे थे. इन ऐप से लोगों को तुरंत लोन मिलता है, लेकिन इसके लिए काफी ज्यादा ब्याज वसूला जाता और लोन चुकाने के लिए टाइम भी कम दिया जाता है. यूजर की सारी डिटेल्स मिलने के बाद ऐप लोन चुकाने के लिए ब्लैकमेल करना शुरू कर देते हैं. ईएसईटी रिसर्चर लुकास स्टेफनको ने कहा कि ये लोन लोन ऐप्स के जरिए लोगों को ब्लैकमेल और मौत की धमकी भी देते थे. इससे कंपनी की साख पर भी असर पड़ रहा था. यही नहीं यूजर द्वारा लोन के लिए अप्लाई नहीं करने या लोन सेंक्शन नहीं होने के बाद भी ऐप के जरिए ये ऐप लोन चुकाने के लिए ब्लैकमेल करते हैं.

100 से ज्यादा वेबसाइट को ब्लॉक कर दिया

जानकारी के अनुसार यूनियन मिनिस्ट्री ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी ने 100 से ज्यादा वेबसाइट को ब्लॉक कर दिया है. ये वेबसाइट्स आर्गनाइज्ड इन्वेस्टमेंट और टास्क-बेस्ड पार्ट-टाइम जॉब फ्रॉड में शामिल थीं. नेशनल साइबर क्राइम थ्रेट एनालिटिक्स यूनिट ने पिछले हफ्ते इन पोर्टल्स की पहचान की थी जिसके बाद ये कार्रवाई की गई है. आधिकारिक बयान में बताया गया कि इन वेबसाइट्स को विदेशों से ऑपरेट किया जा रहा था. बड़े पैमाने पर की गई आर्थिक धोखाधड़ी से कमाए पैसों को कार्ड नेटवर्क, क्रिप्टोकरेंसी, फॉरेन एटीएम विड्रॉल और इंटरनेशनल फिनटेक कंपनियों का इस्तेमाल कर भारत से बाहर ले जाया गया.

कीमतों पर काबू के लिए गेहूं भंडारण सीमा घटाई

नयी दिल्ली । सरकार ने गेहूं की जमाखोरी रोकने और कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए, शुक्रवार को तत्काल प्रभाव से थोक विक्रेताओं, खुदरा विक्रेताओं, बड़े खुदरा विक्रेताओं और प्रसंस्करण कर्मों के लिए, गेहूं का भंडार (स्टॉक) रखने के मानदंडों को सख्त कर दिया. केंद्रीय खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा ने यहां संवाददाताओं से कहा कि व्यापारियों एवं थोक विक्रेताओं के लिए, गेहूं भंडारण की सीमा 2,000 टन से घटाकर 1,000 टन कर दी गई है. उन्होंने कहा कि प्रत्येक खुदरा विक्रेता के लिए भंडारण सीमा 10 टन के बजाय पांच टन, बड़े खुदरा विक्रेताओं के प्रत्येक डिपो के लिए पांच टन और उनके सभी डिपो के लिए संयुक्त रूप से 1,000 टन होगी. उन्होंने कहा कि गेहूं का प्रसंस्करण करने वाली कंपनी वित्त वर्ष 2023-24 के बाकी महीनों के अनुपात में मासिक स्थापित क्षमता का 70 प्रतिशत रख सकती है. चोपड़ा ने कहा, गेहूं के कृत्रिम अभाव की स्थिति को रोकने और जमाखोरी पर लगाम लगाने के लिए ऐसा किया गया है. ये संशोधित स्टॉक सीमा तत्काल प्रभाव से लागू होगी. उन्होंने कहा कि व्यापारियों को अपना स्टॉक संशोधित सीमा तक कम करने के लिए 30 दिन का समय दिया जाएगा.

रांची में पी लेदर्स शोरूम का शुभारंभ, उमड़ी भीड़

वाणिज्य संवाददाता । रांची

रातू स्थित काठीटांड़ (रांची) में शुक्रवार को पी लेदर्स के शोरूम का शुभारंभ हो गया. समारोह के मुख्य अतिथि डीजी ऑडिट यूएस प्रसाद ने फीता काटकर इसका उद्घाटन किया. इस मौके पर काफी संख्या में रातू और आसपास के क्षेत्र लोग मौजूद थे. शोरूम के शुभारंभ के साथ बहुत से लोगों ने खरीदारी भी की. इस प्रतिष्ठान में चमड़े के जूते, चप्पल बैग सहित स्कूली बच्चों के सामान उपलब्ध है. मौके पर लोगों ने कहा कि जिस भव्यता के साथ यह शोरूम खुला है यह उससे इस क्षेत्र की शान भी बढ़ी है. अब लोगों को उच्च स्तरीय जूते, चप्पल के लिए बाहर जाना नहीं पड़ेगा. इस शोरूम में पुरुष और महिलाओं के लिए अलग अलग रेंज और डिजाइन के जूते, चप्पल और चमड़े के बैग उपलब्ध हैं. यह शोरूम काठीटांड़ स्थित संगम रेस्टूरेंट के आपोजिट में स्थित है. इस प्रतिष्ठान के मालिक सत्यनारायण तिवारी ने कहा कि मुझे भी खुशी है कि लोगों को एक स्तरीय सामान दे पाऊंगा.

नहीं हुआ बदलाव आरबीआई ने रेपो दर को 6.5 प्रतिशत पर कायम रखा

वृद्धि दर का अनुमान बढ़ाकर सात प्रतिशत किया

एजेंसी । मुंबई

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को उम्मीद के अनुरूप लगातार पांचवीं बार नीतिगत दर रेपो में कोई बदलाव नहीं किया और इसे 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखा. साथ ही अगले साल होने वाले आम चुनावों से पहले मुद्रास्फीति को लेकर अनिश्चित परिदृश्य के बीच चालू वित्त वर्ष 2023-24 के लिए आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान को 6.5 प्रतिशत से बढ़ाकर सात प्रतिशत कर दिया.

वहीं खुदरा मुद्रास्फीति के अनुमान को 5.4 प्रतिशत पर बरकरार रखा. रेपो वह ब्याज दर है, जिसपर वाणिज्यिक बैंक अपनी फौरी जरूरतों को पूरा करने के लिये केंद्रीय बैंक से कर्ज लेते हैं. आरबीआई मुद्रास्फीति को काबू में रखने के लिये इसका उपयोग करता है. रेपो दर को 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखने का मतलब है कि मकान, वाहन समेत विभिन्न कर्जों पर मासिक किस्त (ईएमआई) में कोई बदलाव नहीं होगा. मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बुधवार से शुरू हुई तीन दिन की बैठक में किये गये निर्णय की जानकारी देते हुए आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा, एमपीसी के सभी छह सदस्यों ने परिस्थितियों पर गौर करने के बाद आम सहमति से रेपो दर को 6.5 प्रतिशत पर कायम रखने का फैसला किया. वहीं छह सदस्यों में से पांच ने उदार रुख को वापस लेने के अपने रुख पर कायम रहने का समर्थन किया है. इसका मतलब है कि नीतिगत दर कुछ समय तक ऊंची बनी रह सकती है. दास ने कहा, वैश्विक चुनौतियों के बावजूद देश की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है और हमारी बुनियाद सुदृढ़ है.

वृद्धि का जिक्र करते हुए दास ने कहा, वृद्धि दर मजबूत बनी हुई है. जीएसटी संग्रह, पीएमआई (परचेजिंग मैनेजर इंडेक्स), आठ बुनियादी उद्योगों की वृद्धि जैसे महत्वपूर्ण आंकड़े मजबूत बने हुए हैं. इन सबको देखते हुए चालू वित्त वर्ष में जीडीपी वृद्धि दर सात प्रतिशत रहने का अनुमान है. उल्लेखनीय है कि जुलाई-सितंबर तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर 7.6 प्रतिशत रहने के बाद केंद्रीय बैंक ने अपने अनुमान में संशोधन किया है. इस वृद्धि के साथ भारत दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्था में सबसे तीव्र आर्थिक वृद्धि वाला देश बना हुआ है. आरबीआई ने पहले वृद्धि दर 2023-24 में 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया था. महंगाई के बारे में उन्होंने कहा कि मुख्य (कोर) मुद्रास्फीति में व्यापक स्तर पर नरमी है. हालांकि, निकट भविष्य में खाद्य मुद्रास्फीति के मोर्चे पर जोखिम है. इससे नवंबर और दिसंबर में मुद्रास्फीति ऊंची बनी रह सकती है. उन्होंने कहा, इसपर नजर रखने की जरूरत है. सभी पहलुओं पर गौर करते हुए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति के अनुमान को 2023-24 के लिए 5.4 प्रतिशत पर बरकरार रखा गया है.

दुबई में जब्त स्पाइसजेट के विमान को लौटाने का निर्देश

- न्यायाधीश ने आदेश के स्पाइस जेट को हुए नुकसान की जांच का भी निर्देश दिया है

एजेंसी । मुंबई

घरेलू एयरलाइन स्पाइसजेट ने शुक्रवार को कहा कि एक मुकदमे में दुबई में इसी साल अक्टूबर में जब्त किए गए उसके एक विमान को अब दुबई अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केंद्र (डीआईएफसी) अदालत ने आदेश पर मुक्त कर दिया गया है. स्पाइसजेट ने बयान में कहा, सात दिसंबर को डीआईएफसी अदालत की सुनवाई में स्पाइसजेट के पक्ष में आदेश दिया गया. एयरलाइन ने दावा किया, इसके अलावा, न्यायाधीश ने आदेश के परिणामस्वरूप स्पाइसजेट को हुए नुकसान की जांच का भी निर्देश दिया है. अदालत ने स्पाइसजेट द्वारा उठाए गए कानूनी खर्चों का भुगतान करने का भी आदेश दिया है. स्पाइसजेट के अनुसार, डीआईएफसी अदालत ने 30 अक्टूबर को भारतीय पंजीकरण, वीटी-एसएमएम वाले विमानों में लगे कुछ इंजनों के संबंध में फ्रीजिंग ऑर्डर (आदेश) जारी किया. स्पाइसजेट ने बयान में कहा, इस आदेश के चलते विमान को अल मक्तूम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, दुबई पर खड़ा कर दिया गया था और तबसे वहीं था.

एसएनएमएमसीएच में बढ़े 200 बेड, पर नहीं मिल रही बेहतर सुविधा

संवाददाता। धनबाद

शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के नए आपातकालीन भवन में बेड की संख्या 200 तो कर दी गई, लेकिन मरीजों को अव्यवस्था के बीच भर्ती किया जा रहा है. 200 बेड में मरीजों के लिए केवल 60 से 70 बेड ही इस्तमाल किए जा रहे हैं. इसकी वजह है कि अन्य बेड दूसरे तल पर रखे गए हैं और वहां मरीज को पहुंचाने का कोई साधन ही नहीं है. मरीज को ऊपर तक पहुंचाने के लिए केवल स्ट्रेचर का ही इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि लिफ्ट आज तक चालू ही नहीं की जा सकी है. नतीजा मरीज को ऊपर तक पहुंचाने के लिए 4 से 5 लोगों की आवश्यकता पड़ती है.

कभी भी मरीज हो सकते हैं चोटिल

काफी दिनों से इमरजेंसी का फॉल्स सिलिंग लटका हुआ था जो बीते गुरुवार को जमीन पर आ गिरा. गनीमत थी की वहां कोई मरीज या अस्पताल कर्मी मौजूद नहीं था. यही हाल पूरे इमरजेंसी का है. इमरजेंसी में लगे फॉल्स सिलिंग हर जगह से खराब होकर झूल रहे हैं. उसी के नीचे दिन रात 30 से 40 मरीज भर्ती रहते हैं. डॉक्टर और स्टाफ की भी ड्यूटी वहीं है. अगर पूरी फॉल्स सिलिंग गिर जाए तो निश्चित ही अप्रिय घटना घट सकती है .इसे लेकर अस्पताल प्रबंधन अनजान बना हुआ है.

दवाओं का भी टोटा

इमरजेंसी में आने वाले मरीजों के परिजनों से कई दवाइयां बाहर से खरीद कर मंगाई जा रही है. टेंडर के पेंच में मरीजों को दवा तक नसीब नहीं हो रही है. दूसरी ओर अस्पताल अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार का कहना है कि दिसंबर माह में टेंडर होने के बाद दवाओं की कमी दूर कर ली जाएगी. मतलब तब तक मरीज के परिजन महंगी दवा खरीदने में अपनी जेब ढीली करते रहेंगे.

पुरानी इमरजेंसी से एसएनसीयू की शिफ्टिंग नहीं

पुरानी इमरजेंसी भवन में आज भी एसएनसीयू संचालित है. कैथ लैब बिल्डिंग में इसे शिफ्ट नहीं किया गया है. इमरजेंसी में किसी मरीज को वेंटीलेटर की आवश्यकता हो तो उसे पुराने भवन में भेजना पड़ता है.

एनेस्थीसिया विभाग को किया जाएगा अपग्रेड

धनबाद। शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (एसएनएमएमसीएच) के एनेस्थीसिया विभाग को अपग्रेड किया जायेगा. यहां अपग्रेड ओटी के साथ रिकवरी रूम व अन्य निर्माण कार्य करने का निर्णय अस्पताल प्रबंधन ने लिया है. अगर एनेस्थीसिया विभाग को अपग्रेड किया जाता है तो पीजी की पढाई शुरू की जा सकती है. एसएनएमएमसीएच में कुल सात विषयों में पीजी की पढ़ाई शुरू करने की तैयारी है. इसमें एनेस्थीसिया भी शामिल है. इसे देखते हुए मुख्य रूप से एनेस्थीसिया विभाग में आधारभूत संरचना तैयार करने पर विचार विमर्श किया जा रहा है. मालूम हो कि पीजी की पढ़ाई शुरू करने को लेकर एनेस्थीसिया विभाग को अपग्रेड करने की जरूरत है. पीजी की पढ़ाई शुरू करने के लिए नेशनल मेडिकल कमिशन की अनुमति जरूरी है. पीजी के सात विषयों की पढ़ाई को लेकर एनएमसी की टीम से अब तक स्वीकृति नहीं मिली है. कॉलेज प्राचार्य डॉ ज्योति रंजन प्रसाद ने बताया कि पीजी की पढाई शुरू कराने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं.

आओ जानें

सामान्य ज्ञान

1. झारखंड में पहली जनगणना किस वर्ष हुई थी?- 1872
2. झारखंड में कितने प्रतिशत खनिज संचित हैं? - 73 %
3. झारखंड का पहला मुख्यमंत्री कौन था? - बाबूलाल मरांडी
4. झारखंड टूरिस्ट होम स्टे स्कीम की शुरुआत कब हुई थी? - 2009
5. झारखंड में कितने जिले हैं? - 24
6. झारखंड में कितने सदन हैं? - 1
7. झारखंड राज्य का आकर किसके समान है? - चतुर्भुज
8. झारखंड राज्य का राजकीय पशु कौन सा है? - हाथी
9. झारखंड राज्य का गठन कब हुआ? - 15 नवंबर 2000
10. झारखंड में मुख्यमंत्री ग्राम सेतु किस वर्ष शुरू की गई? - 2001

ब्रीफ खबरें

किड्स क्लाइंबिंग चैंपियनशिप शुरू

जमशेदपुर। जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स में टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन की ओर से तीन दिवसीय एशियन किड्स क्लाइंबिंग चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है.शुक्रवार को इसका शुभारंभ हुआ.इस चैंपियनशिप में कुल 11 देशों के 91 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे है,जिसमें से 31 प्रतिभागी भारत से हैं.वहीं 18 प्रतिभागी जमशेदपुर के हैं.जिन देशों के प्रतिभागी प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे,उनमें थाइलैंड के 10,साउथ कोरिया के 11,मलेशिया के1,सिंगापुर के 9, समेत अन्य देश के प्रतिभागी शामिल होंगे.

नई तकनीक से बढ़ेंगे रोजगार : निदेशक

धनबाद। सीएसआईआर-सिंफर के द्वारा एकीकृत कौशल पहल के तहत आयोजित पांच दिवसीय कौशल विकास सह उद्यमिता विकास कार्यक्रम का समापन शुक्रवार को हुआ. समापन समारोह को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो एके मिश्रा ने कहा कि नए उपकरणों व तकनीक के संपर्क में आने से रोजगार क्षमता बढ़ेगी, साथ ही नवाचार और उद्यमशीलता को प्रेरणा मिलेगी. कार्यक्रम के मार्गदर्शक दिलीप कुंभकार ने कहा कि हमें अपस्किलिंग और रिस्किलिंग को अपनाना जारी रखना चाहिए.

मलेरिया प्रभावित गांव पहुंची आयोग की टीम

गोड्डा। झारखंड राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की दो सदस्यीय टीम ने जिले के मलेरिया प्रभावित पहाड़िया गांव का दौरा किया. आयोग की टीम में शामिल रुचि कुजूर और डॉ आभा वीरेंद्र अकिंचन ने गोड्डा जिला अंतर्गत सुंदरपहाड़ी सुदूर जोलोबेरागो गांव पहुंचकर ग्रामीणों से मुलाकात की. वैसे परिवारों से भी जाकर मिले जिनके बच्चों की असमय मृत्यु मलेरिया के चपेट में आने से हुई थी. डॉ. आभा वीरेंद्र अकिंचन और रुचि कुजूर ने सुदूर दुर्गम पहाड़ के बीच अवस्थित भुक्तभोगी परिवार से भी जाकर मुलाकात की.

एसपी ने अहिल्यापुर थाना प्रभारी को किया निलंबित

गिरिडीह। साइबर अपराधियों को दबोचने और साइबर अपराध को लेकर कांड में बरती लापरवाही के मामले में गिरिडीह एसपी दीपक कुमार शर्मा ने अहिल्यापुर थाना प्रभारी संतोष मंडल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है. इसकी पुष्टि एसपी शर्मा ने देर शाम को किया. जानकारी के अनुसार सस्पेंड किए गए थाना प्रभारी संतोष मंडल को भी लगातार एसपी द्वारा इलाके के साइबर अपराधियों के खिलाफ अभियान चलाने का निर्देश दिया जा रहा था. जबकि साइबर अपराध से जुड़े कुछ मामलों के अनुसंधान में भी लापरवाही की गई.

बारिश के कारण फसल बर्बाद, मिले मुआवजा

सिमडेगा। मिचौंग सायक्लोन के चलते लगातार तीन दिनों की वर्षा से किसान बर्बादी के कगार पर है. सिमडेगा जिला में सबसे ज्यादा साइक्लोन का असर दिख रहा है. गुमला लोहरदगा भी इससे पीछे नहीं है. 90 से 95% धान की बर्बादी हो चुकी है. खालियान और खेतों पर वर्षा से धान गलने के कगार पर है. इस भयंकर आपदा से आशा और उम्मीद सरकार पर टिकी हुई है. इस क्षेत्र आजीविका का माध्यम किसानों की खेती है. किसानों को उचित मुआवजा समय पर नहीं दिया जाता है तो पलायन के लिए विवश होना पड़ेगा. सरकार इस पर जल्द से जल्द उचित कदम उठाए. इनका एकमात्र जीविका का साधन है.

गोड्डा में आयोजित सरकार आपके द्वारा कार्यक्रम में पहुंचे सीएम

हमारी सरकार आपके चेहरे की मुस्कान देखती है : हेमंत सोरेन

- आदिवासी रीति-रिवाज से किया गया सीएम का स्वागत
- मुख्यमंत्री ने कुछ लोगों से जन संवाद भी किया

संवाददाता। पथरगामा/गोड्डा

झारखंड सरकार की महत्वकांक्षी सरकार आपके द्वारा कार्यक्रम का आयोजन शुक्रवार को गोड्डा के पथरगामा प्रखंड मुख्यालय स्थित मूलर्स कोठी मैदान में किया गया. इस कार्यक्रम में सीएम हेमंत सोरेन पहुंचे. जहां आदिवासी रीति-रिवाज के के साथ उनका स्वागत किया गया. मुख्यमंत्री ने हेमंत सोरेन ने सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी. करोड़ों की परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करने के बाद सीएम ने करोड़ों रुपयों की परिसम्पत्तियों का भी वितरण किया. इस दौरान सीएम ने पिछली सरकार पर जमकर भड़ास निकाली. कहा हमने झारखंड के तमाम 60 वर्षीय बुजुर्गों को सर्वजन पेंशन योजना से आच्छादित कर दिया है. पहले हमारे बुजुर्गों को सरकारी दफ्तर का चक्कर लगाना पड़ता था, क्योंकि पिछली सरकार में सरकारी बाबू लोग माननीय की सेवा में लगे हुए थे. लेकिन हमारी सरकार में जनता की सेवा में लगे हुए हैं. अब हम एक दो बेटियों वालों को ही नहीं पांच-पांच बेटियों वालों को सावित्रीबाई फुले योजना का लाभ दे रहे हैं. छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरु जी क्रेडिट कार्ड दे रहे हैं. उन्होंने पथ निर्माण विभाग के द्वारा 300 किलोमीटर सड़क बनवाने तथा आरईओ विभाग से 500 किलोमीटर सड़क बनवाने की बात भी कही. सीएम ने कहा कि हमारी सरकार 8 लाख गरीबों को तीन कमरों वाला अबुआ आवास देने की योजना चालू कर रही है. मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना चालू कर रहे हैं.

अंत में केंद्र सरकार पर उंगली उठाते हुए कहा कि हम लोगों के बार-बार विनती करने के बावजूद केंद्र सरकार ने एक लाख 36 हजार करोड़ रुपए का कोयला क्षतिपूर्ति का बकाया नहीं दिया. अगर वह बकाया पैसा मिल गया होता तो झारखंड आज कहां से कहां पहुंच गया होता. मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार प्रचार-प्रसार को नहीं जनता के चेहरे पर आई मुस्कान को देखती है.

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने डीसी व एसपी को फटकार लगाई

संबोधन समाप्ति के बाद मुख्यमंत्री ने कुछ लोगों से जन संवाद भी किया और मंच पर मौजूद डीसी और एसपी को फटकार भी लगाई. मुख्यमंत्री ने आयोजन स्थल पर लगाए विभिन्न विभागों के स्टॉलों का भी निरीक्षण किया, इसके बाद वापस लौट गए. मुख्यमंत्री के अलावे आलमगीर आलम और सत्यानंद भोक्ता ने भी सरकार की उपलब्धि को बताया. कार्यक्रम में सीएम हेमंत सोरेन के साथ मंत्री आलमगीर आलम, सत्यानंद भोक्ता, राजमहल सांसद विजय कुमार हांसदा, पोड़ैयाहाट विधायक प्रदीप यादव, महागामा विधायक दीपिका पांडे सिंह आदि मौजूद थे. मुख्यमंत्री के आप्त सचिव विनय कुमार चौबे भी मौजूद थे.

पार्किंग के विरुद्ध ट्रैफिक प्रभारी ने की कार्रवाई

आदित्यपुर। मुख्य मार्ग पर वाहन पार्किंग करने के विरुद्ध सरायकेला खरसावां जिले के यातायात थाना प्रभारी राजेश कुमार सिंह ने सख्त दिखाई है. उनके निर्देश पर मुख्य मार्ग में नो पार्किंग में खड़ी वाहनों के विरुद्ध शुक्रवार को जुर्माना वसूलने की कार्रवाई ट्रैफिक पुलिस के जवानों ने की है.बता दें कि टाटा कांड्रा मुख्य मार्ग पर आदित्यपुर टोल रोड से लेकर कांड्रा टोल रोड तक प्रतिदिन बड़े वाहनों की कतार लगी रहती है जो दुर्घटना का कारण बनती है.आज इन नो पार्किंग में खड़ी वाहनों के विरुद्ध अभियान चलाया गया है.इस कड़ी में आज कांड्रा टोल के पास खड़ी आधुनिक कंपनी में माल लोडिंग के लिए लेकर आए 10 बड़े वाहनों के विरूद्ध कार्रवाई करते हुए उनके विरूद्ध फाइन काटा गया है.

प्रो. केके शर्मा के निधन पर शोक सभा, विधायक सरयू राय शामिल

जमशेदपुर। जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज के विवेकानंद सभागार में महाविद्यालय के जीव विज्ञान से सेवानिवृत डॉ केके शर्मा के निधन पर महाविद्यालय परिवार के द्वारा शोक सभा का आयोजन किया गया. सभा की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ अमर सिंह ने की. सभा में मुख्य रूप से जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय उपस्थित थे. सरयू राय ने कहा कि उनके द्वारा चलाये जो रहे नदी का जल प्रदूषण एवं पर्यावरण को बेहतर बनाने के कार्य में स्वर्गीय डॉ केके शर्मा ने काफी योगदान किया. आज हम नदी प्रदूषण को रोकने एवं पर्यावरण को बेहतर बनाने का संकल्प लें एवं संस्था के साथ आगे बढ़कर इस दिशा में कार्य करें.

कोर्ट की खबरें

जेल में बंद विकास सिंह ने मांगी अंतरिम जमानत

धनबाद। अवैध हथियार, प्रिंस खान और उसके शूटरों को सप्लाई करने के आरोप में जेल में बंद अंबिकापुरम निवासी विकास सिंह ने अवर न्यायाधीश राजीव त्रिपाठी की अदालत में अंतरिम जमानत की अर्जी दायर की है. विकास के अधिवक्ता आयुष सिन्हा ने बताया कि विकास सिंह की दादी द्रौपदी देवी का देहांत शुक्रवार को हो गया है. उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए अदालत से अंतरिम जमानत देने की गुहार लगाई गई है. जिस पर सोमवार को सुनवाई होगी. वहीं, दूसरी ओर गोविंदपुर थाने में विकास सिंह के विरुद्ध दर्ज किए गए अवैध हथियार सप्लाई करने के मामले में दायर जमानत अर्जी पर जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजय कुमार सिंह की अदालत में सुनवाई हुई. विकास के अधिवक्ता जयाकुमार एवं आयुष सिन्हा की दलील सुनने के बाद अदालत ने कांड दैनिकी तलब करते हुए सुनवाई के लिए 11 दिसंबर की तारीख निर्धारित की है.

जेल में फिर मिला फोन, एफआईआर दर्ज

धनबाद। यूपी के कुख्यात शूटर अमन सिंह की दिनदहाड़े धनबाद जेल के अस्पताल में गोली मार देने के बाद एक और जहां धनबाद जेल में सघन छापेमारी चला कर चप्पे-चप्पे को खंगाला दिया गया था. एसएसपी एवं उपायुक्त धनबाद ने दावा किया की छापेमारी में जेल के अंदर पुरुष वार्ड के शौचालय से पांच मोबाइल और महिला वार्ड से तीन मोबाइल फोन जब्त किए गए थे, जिसकी अलग-अलग प्राथमिक की दर्ज की गई थी. पूरे जेल परिसर को जहां सुरक्षा के लिहाज से सेल में तब्दील कर दिया गया. बावजूद इसके फिर धनबाद जेल से मोबाइल बरामद होना प्रशासन और जेल प्रशासन की कार्यशैली पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है. 7 दिसंबर 23 को एसडीएम धनबाद ने धनबाद जेल में औचक छापेमारी की थी. छापेमारी के दौरान वार्ड संख्या तीन से फिर एक मोबाइल जब्त हुआ. इस संबंध में एसडीओ के लिखित शिकायत पर धनबाद थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई.

रंजय हत्याकांड : हर्ष को सशरीर हाजिर होने का आदेश

धनबाद। विधायक संजीव के करीबी रंजय सिंह ऊर्फ रवि रंजन सिंह की हत्या के आरोप में जेल में बंद आरा बेरथ निवासी नंद कुमार सिंह उर्फ बबलू उर्फ रूना सिंह उर्फ मामा को जिला एवं सत्र न्यायाधीश अखिलेश कुमार की अदालत में रांची के होटवार जेल से वीसीएस के द्वारा पेश किया गया. वहीं जमानत पर मुक्त हर्ष सिंह हाजिर नहीं थे. अधिवक्ता आयूष श्रीवास्तव ने हर्ष सिंह की ओर से प्रतिनिधित्व का आवेदन दिया था. अदालत ने इस पर सख्ती दिखाते हुए हर्ष सिंह को सशरीर हाजिर होने का आदेश दिया है. वहीं अभियोजन को गवाह पेश करने का भी निर्देश दिया है. रूना सिंह ऊर्फ मामा ऊर्फ नंद किशोर सिंह 8 अगस्त से जेल में बंद है.

दुष्कर्म मामले में विधायक ढुल्लू नहीं हुए हाजिर

धनबाद। भाजपा की पूर्व महिला नेत्री के साथ दुष्कर्म की कोशिश के मामले में शुक्रवार को बाघमारा विधायक ढुल्लू महतो के विरुद्ध सुनवाई हुई. शुक्रवार को इस मामले में सहायक लोक अभियोजक समित प्रकाश ने गवाह पेश नहीं किया. धनबाद एमपी एमएलए के विशेष न्यायाधीश अखिलेश कुमार की अदालत ने अभियोजन को गवाह पेश करने का आदेश दिया है. जिला भाजपा की पूर्व महिला पदाधिकारी ने विधायक पर प्राथमिकी दर्ज कराई थी.

पेज एक का शेष...

महुआ मोइत्रा की लोस सदस्यता..

इससे पहले एथिक्स कमेटी की रिपोर्ट पर सदन में आधे घंटे से अधिक चर्चा हुई. इस दौरान स्पीकर ओम बिरला ने मोइत्रा को बोलने का मौका नहीं दिया. उन्होंने कहा कि मोइत्रा कमेटी के सामने अपनी बात रख चुकी हैं. लोकसभा स्पीकर ने कहा कि सदन की गरिमा और मर्यादा को कायम रखने के लिए यदि कुछ कड़े फैसले लेने की जरूरत पड़ी, तो लेने होंगे. महुआ पर उद्योगपति दर्शन हीरानंदानी से महंगे उपहार की एवज में उनकी तरफ से संसद में सवाल पूछने का आरोप था. इतना ही नहीं, उन पर आरोप था कि उन्होंने अपने संसदीय लॉग इन आईडी और पासवर्ड को भी हीरानंदानी को बता रखा था, ताकि वह सीधे सवाल पूछ सकें.

जारी है नोटों की गिनती....

शराब के कारोबार से जुड़ा है धीरज साहू का परिवार

बता दें कि धीरज साहू के रिश्तेदार वर्षों से शराब के कारोबार में है. इनमें से एक कंपनी है 'बलदेव साहू एंड ग्रुप ऑफ कंपनीज' 40 साल पहले इस कंपनी ने ओडिशा में देशी शराब बनाना शुरू किया था. इसी कंपनी से जुड़ी कई कंपनियां हैं, जिनमें बौद्ध डिस्टिलरी प्राइवेट लिमिटेड, क्वालिटी बॉटलर्स प्राइवेट लिमिटेड और किशोर प्रसाद -विजय प्रसाद बेवरेज प्राइवेट लिमिटेड शामिल है. चतरा से 2 बार लोकसभा का चुनाव हार चुके धीरज साहू तीसरी बार राज्यसभा सांसद बने हैं.

भाजपा ने मांगा सीएम का...

हाल के विधानसभा चुनाव परिणामों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि लोगों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ मोदी की लड़ाई का समर्थन किया है. उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्षी दल देश और लोगों के अधिकारों को दीमक की तरह खा रहे हैं. उन्होंने कहा कि जब जांच एजेंसियां छापेमारी करती हैं तो विपक्षी नेता दावा करते हैं कि उनकी कार्रवाई केंद्र सरकार की बदले की भावना से प्रेरित है लेकिन तथ्य यह है कि कानून अपना काम कर रहा है. उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने भी उनकी याचिका खारिज कर दी है और लोगों ने उन्हें सबक भी सिखाया है.

तीन कॉलेजों में इसी सत्र से पीजी की पढ़ाई को मंजूरी

संवाददाता। धनबाद

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय (बीबीएमकेयू) के तीन कॉलेजों में बंद की गई पीजी की पढ़ाई वर्तमान (2023-25) सत्र से शुरू हो जाएगी. इसके लिए जल्द ही फिर से चांसलर पोर्टल खोला जाएगा. यह निर्णय 8 दिसंबर को विश्वविद्यालय के नए कैंपस में हुई एकेडमिक काउंसिल की 16वीं बैठक में ली गई. बता दें कि बीएस सिटी कॉलेज बोकारो, आरएसपी कॉलेज झरिया बेलगड़िया और एसएसएलएनटी महिला कॉलेज में जारी पीजी की पढ़ाई इसी सत्र से बंद कर दी गई थी. पढ़ाई शुरू होने से पीजी में 888 सीटें बढ़ जाएंगी.

फिर शुरू होगी जूलॉजी और बॉटनी की पढ़ाई : बैठक में जूलॉजी और बॉटनी की पीजी स्तर की पढ़ाई फिर से शुरू करने का निर्णय लिया गया. इन दोनों विषयों को लाइफ साइंस से अलग कर फिर से अलग विषय के रूप में मान्यता दी जाएगी. वहीं पीएचडी कोर्स वर्क के पेपर 3 और 4 में भी बदलाव को मंजूरी दी गई है.

आपकी सकारात्मक सोच ही सुंदर भविष्य गढ़ेगी

तनाव में मंजिल पाना असंभव : चौहान

संवाददाता। कसमार (बोकारो)

एसएस प्लस टू उवि कसमार और प्लस टू उवि हरनाद में शुक्रवार को खुशी क्लास का आयोजन हुआ, जबकि सिपाहीटांड़ में खुशी चौपाल का आयोजन हुआ. लाइफ केयर हॉस्पिटल, रांची और खुशी मिशन के तत्वावधान में आयोजित खुशी क्लास को संबोधित करते हुए संस्थापक सह संचालक मुकेश सिंह चौहान ने कहा कि तनाव, डिप्रेशन, आत्महत्या की प्रवृत्ति महामारी का रूप लेती जा रही है. हमारे बच्चे, बड़े-बूढ़े सभी थोड़े से तनाव में आकर बहुमूल्य जिंदगी गंवा दे रहे हैं. तनाव दूर करने की कोई दवा बनी ही नहीं. इससे हम सकारात्मकता के साथ खुश रहकर ही लड़ सकते हैं. चौहान ने सकारात्मकता से सजी कहानी भी सुनाई. चौहान ने बच्चों को कहानी सुनाते हुए कहा कि गुब्बारे वाला बच्चों को लुभाने के लिए तरह-तरह के गुब्बारे रखता है. लाल, पीले, हरे, नीले... जब कभी उसे लगता कि बिक्री कम हो रही है, वह झट से एक गुब्बारा हवा में छोड़ देता. गुब्बारा उड़ता देखकर बच्चे खुश हो जाते और गुब्बारे खरीदने के लिए पहुंच जाते.

इसी तरह एक दिन वह हाट में गुब्बारे बेच रहा था.बीच-बीच में गुब्बारे उड़ा भी रहा था. पास ही खड़ा एक छोटा बच्चा ये सब बड़ी जिज्ञासा के साथ देख रहा था. इस बार जैसे ही गुब्बारे वाले ने एक सफेद गुब्बारा उड़ाया, वह तुरंत उसके पास पहुंचा और मासूमियत से बोला- अगर आप ये काला वाला गुब्बारा छोड़ेंगे तो क्या वो भी ऊपर जाएगा. गुब्बारा वाले ने कहा- हां बेटा, बिलकुल जाएगा. गुब्बारे का ऊपर जाना इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि वो किस रंग का है, बल्कि इसपर निर्भर करता है कि उसके अंदर क्या भरा है.

बीआईटी सिंदरी

सिविल इंजीनियरिंग विभाग में मना प्लैटिनम जुबली समारोह

75वीं वर्षगांठ पर लेक्चरर सीरीज का आयोजन

संवाददाता। सिंदरी

बीआईटी सिंदरी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर संस्थान के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के सी 51 राजेंद्र प्रसाद हॉल में विभाग द्वारा प्लैटिनम जुबली लेक्चर सीरीज आयोजित किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आईआईटी (बीएचयू) के सहायक प्राध्यापक डॉ. सुरेश कुमार थे.

मुख्य अतिथि ने नरम मिट्टी के व्यवहार स्टोन कॉलम के साथ सुदृढ़ करने की चर्चा की. उन्होंने नरम मिट्टी पर हो रहे निर्माण में आने वाले तकनीकी असुविधाओं पर प्रकाश डालते हुए इसके तकनीकी उपचारों का वर्णन किया. कार्यक्रम में ए आइ/एम एल प्लेटफार्म के अभियान्त्रिकी निदेशक मोती लाल वत्स ने विश्व में चल रहे तकनीकी विकास में अपने योगदान के बारे में श्रोताओं को अवगत कराया. कार्यक्रम में आइओसीएल के उप महाप्रबंधक सुनील कुमार अग्रवाल को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया. कार्यक्रम में संस्थान निदेशक डॉ. पंकज राय, सिविल इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष डॉ जीतू कुजूर, प्राध्यापक डॉ. विक्रमा पाण्डेय, डॉ. उदय कुमार सिंह, प्रो प्रफुल्ल कुमार शर्मा, सह प्राध्यापक डॉ ब्रह्मदेव यादव, सह प्राध्यापक डॉ माया राजनारायण रे, डॉ. सुमित कुमार, डॉ कोमल कुमारी, डॉ. अभिजित आनंद, प्रो प्रकाश कुमार उरांव, प्रो इक़बाल शेख, प्रो सरोज मीणा एवं प्रो प्रशान्त रंजन मालवीय उपस्थित थे. कार्यक्रम में सिविल इंजीनियरिंग विभाग के स्नातक व स्नातकोत्तर विद्यार्थी उपस्थित थे.

अवैध कारोबार के खिलाफ भाजमो का धरना 14 को

जमशेदपुर। बर्मामाइंस सहित अन्य रिहायशी इलाकों में खुलेआम संचालित हो रहे अवैध स्क्रैप टाल, तेल कटिंग सहित अन्य गोरखधंधों के विरोध में भारतीय जनतंत्र युवा मोर्चा जिला पुलिस मुख्यालय के समक्ष 14 दिसंबर को धरना-प्रदर्शन करेगी. युवा मोर्चा के इस कार्यक्रम में भारतीय जनतंत्र मोर्चा जमशेदपुर महानगर जिला कमेटी, महिला मोर्चा, एसटी एवं एससी मोर्चा भी पूर्ण रूप से सक्रिय भूमिका में रहेगी. इस कार्यक्रम के संबंध में शुक्रवार को भाजमो युवा मोर्चा की एक बैठक जिलाध्यक्ष अमित शर्मा की अध्यक्षता में बारीडीह स्थित कार्यालय में हुई. इसमें धरना-प्रदर्शन को सफल बनाने के लिए विचार-मंथन किया गया. बैठक में तय हुआ कि भाजमो युवा मोर्चा आगामी एक सप्ताह के भीतर जिला के सभी मंडलों में बैठक कर योजना बनाएगी.

जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी में एनएसएस का विशेष शिविर शुरू

संवाददाता। जमशेदपुर

जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की ओर से स्पेशल कैंप का आयोजन किया गया है. स्पेशल कैंप का उद्घाटन शुक्रवार को विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो (डॉ) अंजिला गुप्ता ने किया. उन्होंने सभी एनएसएस वोलेंटियर्स (छात्राओं) को स्पेशल कैंप की शुभकामनाएं देते हुए समाज में ज्वलंत मुद्दों पर जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित किया.

समन्वयक डॉ ग्लोरिया पूर्ति ने सप्ताह भर चलने वाले इस के स्पेशल कैंप में होने वाली गतिविधियों का ब्योरा प्रस्तुत किया. इसके अनुसार एनएसएस की छात्राएं स्वच्छता अभियान, पौधारोपण कार्यक्रम में भाग लेते हुए गोद लिए गए तीन गांव में सामाजिक मुद्दों जैसे नशा मुक्ति, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या एवं समाज के लिए उपयोगी विभिन्न विषयों पर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता फैलाएंगी. इसके अलावा कैशलेस ट्रांजेक्शन, बचत योजनाओं एवं सरकार द्वारा चलाए गए ग्राम कल्याणकारी योजनाओं की चार्ट, पोस्टर के के माध्यम से ग्रामीणों को जानकारी देंगी. इस सात दिवसीय कैंप में कौशल विकास के लिए ग्रामीण महिलाओं को पापड़, बड़ी, पेपर बैग, कलश पेंटिंग इत्यादि का प्रशिक्षण एनएसएस की छात्राओं द्वारा दिया जाएगा. कैंप के दौरान एकदिवसीय स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया जाएगा. कैंप का समापन 14 दिसंबर को होगा.

एवर्टन ने दिखाया जज्बा, न्यूकासल को हराया

भाषा । लंदन

एवर्टन पर इंग्लिश प्रीमियर लीग के वित्तीय नियमों का उल्लंघन करने के लिए 10 अंक का जुर्माना लगने के बाद दूसरी डिवीजन में खिसकने का खतरा मंडरा रहा था, लेकिन उसकी टीम ने अपना जज्बा बनाए रखा और गुरुवार को यहां न्यूकासल पर 3-0 से जीत दर्ज की. इस जीत से एवर्टन अभी खतरे के निशान से बाहर निकल गया है, लेकिन उसे आगामी मैचों में अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखना होगा. एवर्टन के 15 मैच में 10 अंक हैं और वह 17वें स्थान पर पहुंच गया है. एवर्टन की जुर्माना लगने के बाद यह लगातार दूसरी जीत है. इससे पहले शनिवार को उसने नॉटिंघम फॉरेस्ट को 1-0 से हराया था. इस बीच टोटेनहैम का खराब प्रदर्शन जारी रहा और वेस्ट हैम ने उसे 2-1 से हराया. टोटेनहैम पिछले पांच मैच में जीत दर्ज नहीं कर पाया है.

फुटबॉल लीग

- एवर्टन ने न्यूकासल को 3-0 से हराया
- 15 मैचों ने 10 अंक के साथ 17वें स्थान पर है एवर्टन

टोटेनहैम का खराब प्रदर्शन जारी, वेस्ट हैम ने 2-1 से हराया.

आओ जानें

किस एथलीट के इंस्टाग्राम में कितने फॉलोअर्स

एथलीट	फॉलोअर्स (मिलियन में)	खेल	देश
क्रिस्टियानो रोनाल्डो	613	फुटबॉलर	पुर्तगाल
लियोनेल मेसी	493	फुटबॉलर	अर्जेंटीना
विराट कोहली	264	क्रिकेटर	भारत
नेमार	216	फुटबॉलर	ब्राज़िल
लैब्रन जेम्स	159	बास्केटबॉल	अमेरिका
किलियन म्बाप्पे	110	फुटबॉलर	फ्रांस
डेविड बेकहम	86.1	फुटबॉलर	यूके
रोनाल्डिन्हो	70.1	फुटबॉलर	ब्राजिल
मार्सेलो विएरा जूनियर	63.5	फुटबॉलर	ब्राजिल
ज्लाटन इब्राहिमोविक	55.3	फुटबॉलर	स्वीडन

ब्रीफ खबरें

हर कोई राय रखने के लिए स्वतंत्र: वार्नर

मेलबर्न । अनुभवी सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर ने ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज मिशेल जॉनसन की आलोचना का जवाब देते हुए कहा कि हर कोई अपनी राय रखने के लिए स्वतंत्र है. जॉनसन ने एक समाचार पत्र में अपने कॉलम में लिखा था कि क्या वार्नर इतनी अच्छी फॉर्म में है कि वह स्वयं ही अपनी संन्यास की तिथि को तय कर सकें. इसके अलावा उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में गेंद से छेड़छाड़ के मामले में वार्नर की भूमिका का भी जिक्र किया था. वार्नर ने पाकिस्तान के खिलाफ तीन जनवरी से सिडनी में शुरू होने वाले तीसरे और अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच के बाद संन्यास लेने की इच्छा जाहिर की थी. ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला 14 दिसंबर से पर्थ में शुरू होगी.

हांगकांग में मैच खेलेंगे लियोनेल मेसी

फोर्ट लॉडरडेल । अर्जेंटीना के स्टार स्ट्राइकर लियोनेल मेसी अगले साल चार फरवरी को अमेरिका के अपने फुटबॉल क्लब इंटर मियामी की तरफ से हांगकांग में मैच खेलेंगे. मेजर लीग सॉकर की टीम इंटर मियामी ने गुरुवार को इस कार्यक्रम की घोषणा की. इस मैच में मेसी और इंटर मियामी का सामना हांगकांग की फर्स्ट डिवीजन लीग में खेलने वाले शीर्ष खिलाड़ियों को मिलाकर बनाई गई टीम से होगा. इंटर मियामी के सह मालिक डेविड बैकहम ने यहां जारी बयान में कहा कि हांगकांग एक खूबसूरत शहर है जिसका खेल परिदृश्य शानदार है.

चोट के कारण टीम से बाहर हुईं एम्मा लैंब

मुंबई । इंग्लैंड ने अपनी ऑल राउंडर एम्मा लैंब को पीठ की समस्या के कारण 14 से 17 दिसंबर तक यहां भारत के खिलाफ आगामी एकमात्र टेस्ट की टीम से बाहर कर दिया. इंग्लैंड क्रिकेट के अनुसार एम्मा को पीठ में चोट लगी है और यह 25 साल की खिलाड़ी अब चिकित्सक की सलाह लेने के लिए स्वदेश लौटेंगी. इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के मुताबिक मध्यक्रम बल्लेबाज माइया बाउचियर और बायें हाथ की स्पिनर कर्स्टी गोर्डन को टेस्ट टीम में शामिल किया गया है. ईसीबी ने एक बयान में कहा कि एम्मा लैंब को पीठ की समस्या के कारण भारत से खेलने वाली इंग्लैंड की महिला टेस्ट टीम से हटा लिया गया.

महिला क्रिकेट : भारत व इंग्लैंड के बीच दूसरा टी-20 मुकाबला आज

वापसी करना चाहेगा भारत

भाषा । मुंबई

पहले मैच में हार से आहत भारतीय महिला क्रिकेट टीम को तीन मैचों की श्रृंखला को अगर जीवंत बनाए रखना है तो उसे इंग्लैंड के खिलाफ शनिवार को यहां होने वाले दूसरे टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में बेहतर प्रदर्शन करना होगा. इंग्लैंड ने पहले मैच में शानदार प्रदर्शन करके 38 रन से जीत दर्ज की और इस तरह से भारत पर दबदबा बनाए रखा. इससे उसने श्रृंखला में शुरुआती बढ़त हासिल की. इंग्लैंड की यह भारत के खिलाफ 28 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 21वीं और भारतीय धरती पर 10 मैच में आठवीं जीत थी.

भारतीय टीम पहले मैच में परिस्थितियों से अच्छी तरह तालमेल नहीं बिठा पाई थी और इसके अलावा उसने कुछ गलतियां भी की थी जिससे यह मैच एकतरफा बन गया था. सपाट पिच पर गेंदबाजों को खास मदद नहीं मिल रही थी तथा भारत ने चार स्पिनरों का उपयोग किया जिन्होंने कुल मिलाकर 12 ओवर में 121 रन लुटाए. भारत ने बाएं हाथ की दो स्पिनर श्रेयंका पाटिल और सैका इशाक को पदार्पण का मौका दिया लेकिन इन दोनों का अपनी गेंदों पर नियंत्रण नहीं था और वे महंगे साबित हुए. यहां तक की अनुभवी स्पिनर दीप्ति शर्मा भी प्रभावित नहीं कर पाई और उन्होंने अपने कोटे के पूरे चार ओवर भी नहीं किये. भारत का क्षेत्ररक्षण भी अच्छा नहीं रहा और इंग्लैंड की तरफ से शानदार प्रदर्शन करने वाली डैनी वाट और नेट साइवर ब्रंट दोनों को जीवनदान मिले, जो भारतीय टीम को महंगे पड़े. भारत की तरफ से गेंदबाजी में केवल तेज गेंदबाज रेणुका सिंह ने प्रभावशाली प्रदर्शन किया. उन्होंने मैच के पहले ओवर में ही दो विकेट निकालकर भारत को अच्छी शुरुआत दिलाई थी लेकिन टीम इसका फायदा नहीं उठा पाई और उसने इंग्लैंड को वापसी का मौका दिया.

जहां भारतीय स्पिनर नहीं चल पाए, वहीं इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टोन (4-0-15-3) और सारा ग्लेन (25 रन देकर एक विकेट) की स्पिन जोड़ी ने भारतीय बल्लेबाजों को दबाव में रखा और उन्हें खुलकर नहीं खेलने दिया. भारत के सामने 198 रन का लक्ष्य था लेकिन सलामी बल्लेबाज शैफाली वर्मा (52) और कप्तान हरमनप्रीत कौर (26) ही कुछ योगदान दे पाए. स्मृति मंधाना और जेमिमा रोड्रिग्स बल्लेबाजी के लिए अनुकूल पिच पर नाकाम रहे.

- मैच भारतीय समयानुसार शाम सात बजे शुरू होगा
- श्रृंखला में बने रहने के लिए भारत को जीत की जरूरत
- तीन मैचों की श्रृंखला में 1-0 से आगे है इंग्लैंड

2006 के बाद इंग्लैंड से श्रृंखला नहीं जीत पाया है भारत

भारतीय महिला टीम 2006 के बाद इंग्लैंड से टी20 श्रृंखला नहीं जीत पाई है. अगर उसे श्रृंखला में जीत हासिल करनी है तो अगले दो मैचों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करना होगा. भारतीय टीम को जल्द से जल्द अपने खेल में सुधार करने की जरूरत है क्योंकि तीन मैच की इस टी-20 श्रृंखला के बाद वह इंग्लैंड के खिलाफ एक टेस्ट मैच खेलेगी और फिर तीनों प्रारूप में ऑस्ट्रेलिया का सामना करेगी.

टीमें

भारत : हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उप-कप्तान), जेमिमा रोड्रिग्स, शैफाली वर्मा, दीप्ति शर्मा, यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर), ऋचा घोष (विकेटकीपर), अमनजोत कौर, श्रेयंका पाटिल, मन्नत कश्यप, सैका इशाक, रेणुका सिंह ठाकुर, तितास साधु, पूजा वस्त्राकर, कनिका आहूजा, मिन्नू मणि.

इंग्लैंड : लॉरेन बेल, मैया बाउचियर, एलिस कैप्सी, चार्ली डीन, सोफिया डंकले, सोफी एक्लेस्टोन, महिका गौर, डेनिएल गिब्सन, सारा ग्लेन, बेस हीथ (विकेटकीपर), एमी जोन्स (विकेटकीपर), फ्रेया केम्प, हीथर नाइट (कप्तान), नेट साइवर-ब्रंट, डेनिएल वाट.

खिलाड़ियों समर्थन देने के लिए लांच हुआ 'प्रोजेक्ट ग्रैंडस्लैम'

नयी दिल्ली । पिछले पांच वर्षों में कोई भी भारतीय महिला टेनिस खिलाड़ी जूनियर ग्रैंडस्लैम में जगह नहीं बना सकी है जिससे चिंतित होकर 'लक्ष्य स्पोर्ट्स एंड अमलगम स्टील' ने 'प्रोजेक्ट ग्रैंडस्लैम' लांच किया है. इस महत्वकांक्षी परियोजना का मकसद कड़ी प्रक्रिया के जरिये चुनी गयी पांच खिलाड़ियों को पूर्ण समर्थन देना होगा. इसके अंतर्गत युवा खिलाड़ियों का जमीनी स्तर पर मार्गदर्शन दिया जाएगा. पहले चरण में माया राजेश्वरन, प्रिशा शिंदे, काशवी सुनील, ऐश्वर्या जाधव, ऋषिता रेड्डी, नैनिका रेड्डी, याशिका शौकीन, सेजल भुटाडा और आकृति सोनकुसारे को इस परियोजना के लिए छांटा गया है.

आईसीसी ने विश्व कप फाइनल की पिच को औसत करार दिया

नयी दिल्ली । अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम की उस पिच को औसत करार दिया है जिस पर 19 नवंबर को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच वनडे विश्व कप का फाइनल खेला गया था. आईसीसी मैच रेफरी और जिम्बाब्वे के पूर्व बल्लेबाज एंडी पाइक्रॉफ्ट ने हालांकि मैदान की आउटफील्ड को बहुत अच्छा करार दिया. जिस पिच पर फाइनल खेला गया वह काफी धीमी थी. ऑस्ट्रेलिया ने फाइनल में भारत को छह विकेट से हराकर खिताब जीता था. भारतीय टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवर में केवल 240 रन बना पाई. ऑस्ट्रेलिया ने 43 ओवर में लक्ष्य हासिल कर दिया.

गेंदबाजी कोच ने कहा

कोई कोच शमी जैसा गेंदबाज नहीं बना सकता: पारस म्हाम्ब्रे

भाषा । नयी दिल्ली

भारत के गेंदबाजी कोच पारस म्हाम्ब्रे ने कहा कि मोहम्मद शमी के पास हर बार गेंद को सीधी सीम में डालने की दुर्लभ प्रतिभा है और दुनिया का कोई भी कोच इस तरह की तेज गेंदबाजी करने वाला गेंदबाज तैयार नहीं कर सकता. वनडे विश्व कप के सात मैच में 24 विकेट चटकाकर गेंदबाजी सूची में शीर्ष पर रहने वाले शमी वनडे और टेस्ट में भारत के बेहतरीन गेंदबाज रहे हैं. म्हाम्ब्रे शमी की सफलता के लिए कोई श्रेय नहीं लेना चाहते.

जब उनसे पूछा गया कि क्या भारत को मोहम्मद शमी जैसी प्रतिभा वाला गेंदबाज मिलेगा. तो उन्होंने दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए रवाना होने से पहले पीटीआई से साक्षात्कार में कहा कि अगर मैं कहूं कि कोच शमी जैसा गेंदबाज बना सकते हैं तो यह सच नहीं होगा. अगर कोई गेंदबाज हर बार सीधी सीम में गेंद को डाल सकता तो दुनिया का हर गेंदबाज शमी बन जायेगा. उन्होंने कहा कि यह ऐसा कौशल है जो शमी ने कड़ी मेहनत के दम पर हासिल किया है और खुद को ऐसा गेंदबाज बनाया है. म्हाम्ब्रे ने कहा कि सीम पर ही एक के बाद एक गेंद फेंकना और वो भी परफेक्ट कलाई पॉजिशन के साथ तथा इसे दोनों तरफ घुमाना एक दुर्लभ प्रतिभा है. काफी गेंदबाज अगर सीम पर गेंद डाल भी पाते हैं तो उनकी गेंद पिच पर लगते ही सीधी हो जाती है. पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज ने जसप्रीत बुमराह के बारे में भी इसी तरह की बात करते हुए कहा कि यहां तक कि बुमराह का एक्शन असमान्य है लेकिन वह गेंद को इसी एक्शन से अंदर या दूर कर देता है. यह एक कला है और इस कला का पारखी होने में काफी कड़ी मेहनत और समर्पण की जरूरत होती है. शमी और बुमराह दुनिया भर के बल्लेबाजों पर दबदबा बनाने में सफल रहे हैं जिससे म्हाम्ब्रे काफी हैरान हैं.

म्हाम्ब्रे ने कहा कि मुझे लगता है कि टेस्ट मैचों में हमारे पास बुमराह, शमी और ईशांत (शर्मा) थे जिन्होंने इस तरह का जादू बिखेरा था लेकिन अगर अब आप मुझे पूछोगे कि क्या मैंने इस तरह के दबदबे की उम्मीद की थी तो मैंने इस स्तर के प्रदर्शन का सपना भी नहीं देखा था.

क्या कहा

- शमी के पास हर बार गेंद को सीधी सीम में डालने की प्रतिभा
- शमी की सफलता के लिए कोई श्रेय नहीं लेना चाहते हैं म्हाम्ब्रे

जूनियर महिला हॉकी विश्व कप

भारत ने कोरिया को हराया

भाषा । सैंटियागो (चिली)

भारत ने शुरू में पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करके जूनियर महिला हॉकी विश्व कप के नौवें से 12वें स्थान के क्लासिफिकेशन मैच में दक्षिण कोरिया को 3-1 से हराया. गुरुवार को खेले गए इस मैच में भारत की तरफ से रोपनी कुमारी (23वें मिनट), मुमताज खान (44वें) और अन्नू (46वें) ने गोल किए. कोरिया की तरफ से एकमात्र गोल जियुन चोई (19वें) ने किया. पहले क्वार्टर में कोरिया का दबदबा रहा और इस दौरान उसने पहला पेनल्टी कार्नर हासिल किया लेकिन वह इसका फायदा नहीं उठा पाया.

दूसरे क्वार्टर में दोनों टीम ने एक दूसरे पर दबाव बनाने का प्रयास किया. चोई ने पेनल्टी कॉर्नर पर गोल करके कोरिया को बढ़त दिलाई लेकिन रोपनी ने भी पेनल्टी कार्नर को गोल में बदलकर भारत को बराबरी दिला दी. मध्यांतर तक दोनों टीम 1-1 से बराबरी पर थी. भारत ने तीसरे क्वार्टर में दबदबा बनाया और इस बीच मुमताज ने पेनाल्टी कार्नर पर गोल करके टीम को बढ़त दिला दी. इसके बाद अन्नू ने चौथे क्वार्टर के शुरू में मैदानी गोल करके भारत की जीत सुनिश्चित की. भारत के पास अभी नौवें स्थान पर रहने का मौका है. वह टूर्नामेंट के अपने अंतिम मैच में शनिवार को चिली या अमेरिका से भिड़ेगा.

खास बातें

- भारत ने पिछड़ने के बाद की शानदार वापसी
- भारत ने दक्षिण कोरिया को 3-1 से हराया

वापसी एक प्रक्रिया, अभी फिटनेस पर ध्यान: डुप्लेसी

बेंगलुरू । दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान फाफ डुप्लेसी के सामने राष्ट्रीय टीम में वापसी करने का विकल्प है लेकिन इस पर गंभीरता से विचार करने से पहले वह पूर्ण फिटनेस हासिल करना चाहते हैं. दक्षिण अफ्रीका के कोच रॉब वाल्टर ने हाल में संकेत दिए थे कि डुप्लेसी, क्विंटन डिकॉक और रिली रोसो जैसे सीनियर पेशेवर खिलाड़ियों के लिए राष्ट्रीय टीम में वापसी के दरवाजे खुले हुए हैं. डुप्लेसी ने सितंबर में अपनी एक कोहनी का ऑपरेशन करवाया था और इसलिए ऐसी किसी संभावना पर विचार करने से पहले वह पूरी तरह फिट होना चाहते हैं. डुप्लेसी ने पीटीआई से कहा कि मैं यह नहीं कहूंगा कि इसके (दक्षिण अफ्रीका टीम में वापसी) लिए प्रक्रिया नहीं चल रही है. मेरे कहने का मतलब है कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट अब भी इस खेल का चरम है. आपको अब भी यह महसूस होता है कि यही वह मुकाम है जहां क्रिकेट में आपको सबसे अधिक दबाव महसूस होता है.

लुई सुआरेज ने जीता 'गोल्डन बॉल'

साओ पाउलो । बार्सिलोना में लियोनेल मेसी के पूर्व साथी और उरुग्वे के स्टार स्ट्राइकर लुई सुआरेज को ब्राजील की फुटबॉल लीग में सत्र का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया जिसके लिए उन्हें 'गोल्डन बॉल' का पुरस्कार मिला. लिवरपूल और अजेक्स की तरफ से खेलने के बाद स्पेन में मेसी के साथ खेलने वाले सुआरेज ने ब्राजील की लीग में दूसरे स्थान पर रही ग्रेमियो की तरफ से 17 गोल किए. ब्राजील की लीग बुधवार को समाप्त हुई जिसमें पालमेरास अपना खिताब बचाने में सफल रहा. सुआरेज ने सत्र के अंतिम दिन रियो डी जनेरियो के माराकाना स्टेडियम में फ्लुमिनेंस के खिलाफ दो गोल किए जिससे उनकी टीम यह मैच 3-2 से जीतने में सफल रही.

महिला हॉकी भारत ने स्पेन में होने वाले पांच देशों के टूर्नामेंट के लिए 22 सदस्यीय टीम की घोषणा की

झारखंड की चार खिलाड़ियों को टीम में मिला मौका

भाषा । नयी दिल्ली

भारत ने गोलकीपर सविता पूनिया की अगुवाई में स्पेन में होने वाले पांच देशों के हॉकी टूर्नामेंट के लिए शुक्रवार को 22 सदस्यीय महिला टीम घोषित की जिसमें अनुभवी फॉरवर्ड वंदना कटारिया को उप कप्तान बनाया गया है. इस टीम में झारखंड की चार खिलाड़ी सलीमा टेटे, निक्की प्रधान, संगीता कुमारी और ब्यूटी डुंगडुंग भी शामिल हैं. भारत 15 से 22 दिसंबर तक वेलेंसिया में होने वाले इस टूर्नामेंट में आयरलैंड, जर्मनी, स्पेन और बेल्जियम का सामना करेगा. रांची में 13 जनवरी से शुरू होने वाले ओलंपिक क्वालीफायर्स की तैयारी के लिहाज से यह टूर्नामेंट काफी महत्वपूर्ण है. भारत की मुख्य कोच यानिक शोपमैन ने हॉकी इंडिया की यहां जारी विज्ञप्ति में कहा कि हमारी टीम काफी संतुलित और मजबूत है. यह टूर्नामेंट टीम के लिए हाल के अपने अच्छे प्रदर्शन को आगे बढ़ाने और ओलंपिक क्वालीफायर्स से पहले खुद को अच्छी मानसिक स्थिति में रखने के लिए आदर्श मंच होगा.

खास बातें

- ओलंपिक क्वालीफायर्स के लिए महत्वपूर्ण है टूर्नामेंट
- सविता पूनिया करेंगी भारतीय टीम की अगुवाई

15 से 22 दिसंबर तक वेलेंसिया में होगा टूर्नामेंट

भारतीय टीम

- **गोलकीपर :** सविता (कप्तान), बिचू देवी खारीबाम
- **डिफेंडर :** निक्की प्रधान, उदिता, इशिका चौधरी, गुरजीत कौर, अक्षता अबासो ढेकाले
- **मिडफील्डर :** निशा, वैष्णवी विट्ठल फाल्के, मोनिका, सलीमा टेटे, नेहा, नवनीत कौर, सोनिका, ज्योति, बलजीत कौर
- **फॉरवर्ड :** ज्योति छेत्री, संगीता कुमारी, दीपिका, वंदना कटारिया (उप-कप्तान), ब्यूटी डुंगडुंग, शर्मिला देवी

संजय बांगड़ की पंजाब किंग्स में हुई वापसी

चंडीगढ़ । पंजाब किंग्स ने शुक्रवार को पूर्व भारतीय बल्लेबाजी कोच संजय बांगड़ को आगामी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सत्र के लिए अपना क्रिकेट विकास प्रमुख नियुक्त किया. पूर्व भारतीय आल राउंडर 2014 में फ्रेंचाइजी के सहायक कोच थे जब टीम उप विजेता रही थी. अगले दो सत्र में वह मुख्य कोच थे जब टीम तालिका में निचले स्थान पर रही थी. बांगड़ ने मीडिया विज्ञप्ति में कहा कि फिर से पंजाब किंग्स के साथ होना मेरे लिए सम्मान की बात है. बांगड़ टीम के मुख्य कोच ट्रेवर बेलिस के साथ मिलकर काम करेंगे और दोनों 19 दिसंबर को दुबई में होने वाली आईपीएल नीलामी के लिए योजना बनायेंगे. बांगड़ रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के बल्लेबाजी सलाहकार थे जिसके बाद अगले दो साल के लिए उन्हें टीम का मुख्य कोच नियुक्त कर दिया गया.

न्यूजीलैंड बनाम बांग्लादेश

ग्लेन फिलिप्स की आक्रामक बल्लेबाजी, रोमांचक हुआ मैच

भाषा । मीरपुर (बांग्लादेश)

ग्लेन फिलिप्स की 72 गेंद में 87 रन की आक्रामक बल्लेबाजी के दम पर न्यूजीलैंड दो मैचों की श्रृंखला के आखिरी टेस्ट के तीसरे दिन पहली पारी में शुक्रवार को यहां आठ रन की मामूली बढ़त लेने के बाद दूसरी पारी में बांग्लादेश के दो विकेट झटक कर मुकाबले को रोमांचक बना दिया है. बारिश से प्रभावित इस मैच में बांग्लादेश के 172 रन के जवाब में न्यूजीलैंड की पहली पारी चाय के विश्राम से ठीक पहले 180 रन पर सिमट गयी. खराब रोशनी के कारण दिन के खेल को जल्दी रोक दिया गया. खेल रोके जाने तब बांग्लादेश ने दूसरी पारी में 38 रन तक दो विकेट गंवा दिए थे. बांग्लादेश की टीम 30 रन से आगे है और उसके आठ विकेट बचे हुए है. मैच का दूसरा दिन पूरी तरह से बारिश की भेंट चढ़ गया था. न्यूजीलैंड ने तीसरे दिन की शुरुआत पांच विकेट पर 55 रन से की. फिलिप्स ने सीमित ओवर प्रारूप की शैली में बल्लेबाजी करते हुए अपनी पारी में चार चौके और इतने ही छक्के लगाये. उन्होंने खासकर हसन के खिलाफ आक्रामक रूख अपनाया और शुरुआती तीन ओवरों में तीन चौके और एक छक्का लगाकर दबाव को कम किया. फिलिप्स ने इस दौरान डेरिल मिचेल (18) के साथ छठे विकेट के लिए 49 और काइल जैमीसन (20) के साथ आठवें विकेट के लिए 55 रन की साझेदारी कर टीम को मुश्किल स्थिति से बाहर निकाला.

ब्रीफ खबरें

पुलिस के हिरासत से भागा रूसी नागरिक पकड़ा गया

पणजी। गोवा में मादक पदार्थ से जुड़े एक मामले के तहत गिरफ्तार किए गए एक रूसी नागरिक ने अदालत से लौटते वक्त पुलिस की हिरासत से भागने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने उसका पीछा कर उसे पकड़ लिया. पुलिस उपाधीक्षक जिवबा दलवी ने संवाददाताओं को बताया कि आरोपी मस्किन कुसानी ने बुधवार को उस वक्त पुलिस की हिरासत से भागने की कोशिश की जब उसे मापुसा में अतिरिक्त जिला एवं सत्र अदालत से लगभग 15 किमी दूर कोलवाले केंद्रीय कारावास ले जाया जा रहा था.

सऊदी अरब का लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त

दुबई। सऊदी अरब की वायुसेना का एक एफ-15एसए लड़ाकू विमान बृहस्पतिवार को दुर्घटनाग्रस्त हो गया. इस दुर्घटना में चालक दल के दो सदस्यों की मौत हो गई. सऊदी प्रेस एजेंसी ने सेना के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल तुर्की अल-मालिकी ने कहा कि दुर्घटना जहरान में अब्दुल अजीज वायुसेना अड्डे पर प्रशिक्षण मिशन के दौरान हुई. अल-मालिकी ने दुर्घटना के बारे में कोई और जानकारी नहीं दी. एफ-15एसए मैकडॉनेल डगलस लड़ाकू विमान का एक प्रकार है.

लालदुहोमा मिजोरम के सीएम पद की ली शपथ

आइजोल। जोराम पीपुल्स मूवमेंट (जेडपीएम) के नेता लालदुहोमा ने शुक्रवार को मिजोरम के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली. राज्यपाल हरि बाबू कंभमपति ने लालदुहोमा को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई. जेडपीएम के 11 अन्य नेता भी मंत्री पद की शपथ लेंगे. शपथ ग्रहण समारोह राजभवन में आयोजित किया गया जहां मिजो नेशनल फ्रंट के नेता और निवर्तमान मुख्यमंत्री जोरमथांगा भी मौजूद थे. इस कार्यक्रम में एमएनएफ के विधायक दल के नेता लालचंदमा राल्ते भी शामिल हुए.

हाथी ने दो लोगों को कुचलकर मार डाला

भुवनेश्वर। ओडिशा के अंगुल जिले में अलग-अलग स्थानों पर एक जंगली हाथी ने दो लोगों को कुचलकर मार डाला. एक वन अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी. जान गंवाने वाले लोगों की पहचान सारधापुर गांव के गुरू नायक और चेलियापाडा गांव की अनिथु साहू के रूप में की गयी है. पुलिस ने गुरुवार रात को इन दोनों के शव बरामद किये. अंगुल के संभागीय वन अधिकारी विवेक कुमार ने बताया कि हाथी ने पहले सारधापुर में घूमने निकले नायक पर हमला कर निशाना बनाया.

गुजरात के कच्छ में 4.2 तीव्रता का भूकंप

अहमदाबाद। गुजरात के कच्छ जिले के रापर कस्बे के पास शुक्रवार सुबह 4.2 तीव्रता का भूकंप आया. अधिकारियों ने यह जानकारी दी. अधिकारियों ने बताया कि इस दौरान जान-माल के नुकसान की कोई जानकारी नहीं मिली है. भूकंप विज्ञान अनुसंधान संस्थान के एक अधिकारी ने कहा, कच्छ जिले के रापर से 19 किलोमीटर पश्चिम-दक्षिण पश्चिम में सुबह करीब नौ बजे भूकंप आया जिसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 4.2 तीव्रता मापी गई.

पांच लाख का गांजा जब्त, 9 लोग गिरफ्तार

अगरतला। त्रिपुरा के अगरतला रेलवे स्टेशन पर बिहार के नौ लोगों से पांच लाख रुपये की कीमत का गांजा जब्त किए जाने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया. अगरतला जीआरपी थाना प्रभारी संजीत सेन ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस की टीम गुरुवार की रात अगरतला रेलवे स्टेशन पहुंची और नयी दिल्ली जाने वाली त्रिपुरा सुंदरी एक्सप्रेस पर सवार होने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे आरोपियों की तलाशी ली.

अगले साल मार्च तक प्याज निर्यात पर रोक

नयी दिल्ली। सरकार ने प्याज की घरेलू उपलब्धता बढ़ाने और इसकी कीमतों पर काबू पाने के लिए अगले साल मार्च तक इसके (प्याज) निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है. विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने एक अधिसूचना में कहा कि प्याज की निर्यात नीति को 31 मार्च, 2024 तक मुक्त से प्रतिबंधित श्रेणी में कर दिया गया है. राजधानी दिल्ली में स्थानीय सब्जी विक्रेता 70-80 रुपये प्रति किलोग्राम पर प्याज बेच रहे हैं.

88 के हुए 'धरम'

बॉलीवुड के 'धरम' यानी धर्मेंद्र ने शुक्रवार को अपना 88वां बर्थडे सेलिब्रेट किया. गदर-2 के अभिनेता सनी देओल ने अपने पिता के बर्थडे पर उन्हें खास अंदाज में विश किया. **-फोटो : पीटीआई**

आओ जानें

दुनिया की जनसंख्या

2000		2022	
जापान	126 मिलियन	जापान	125 मिलियन
भारत	1 अरब	भारत	1.4 बिलियन
हंगरी	10.2 मिलियन	हंगरी	9.6 मिलियन
बुल्गारिया	8.1 मिलियन	बुल्गारिया	6.4 मिलियन

भाजपा सरकार में दलितों के खिलाफ अपराध बढ़े : खड़गे

भाषा। नयी दिल्ली

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों का हवाला देते हुए आज शुक्रवार को आरोप लगाया कि मौजूदा (मोदी)सरकार में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के खिलाफ अपराध बढ़ गये हैं. एनसीआरबी की रिपोर्ट भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का काला चिट्ठा है. मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक्स पर किये गये पोस्ट में एक रिपोर्ट साझा की जिसमें कहा गया है कि 2013 के बाद से दलितों के खिलाफ अपराधों में 46.11 प्रतिशत और आदिवासियों के खिलाफ अपराधों में 48.15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है. उन्होंने कहा, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो केवल आंकड़ें मात्र नहीं हैं, एससी-एसटी समाज के जीवन को असुरक्षित बनाने का भाजपाई काला चिट्ठा है.

यह भाजपा-आरएसएस के सबका साथ वाले महाढोंग का पर्दाफाश करता है : कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि यह आकड़े अन्याय, अत्याचार और दमन, पिछले एक दशक से भाजपा द्वारा समाज को बांटने के षड्यंत्रकारी एजेंडे का हिस्सा है. खड़गे ने दावा किया कि दलितों और आदिवासियों का लगातार होता उत्पीड़न भाजपा एवं आरएसएस के सबका साथ वाले महाढोंग का पर्दाफाश करता है.

हत्या के पीछे चीनू, गैंगस्टर रोहित गोदारा व संपत नेहरा का हाथ होने की आशंका

गोगामेड़ी हत्याकांड में 3 मोस्ट वांटेड

शुभम संदेश न्यूज नेटवर्क

गैंगस्टर रोहित गोदारा ने खुलकर सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की हत्या करवाने की जिम्मेदारी ली है. कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई गैंग के करीबी रोहित गोदारा और सुखदेव सिंह गोगामेड़ी के बीच विवाद चल रहा था. बीकानेर के कालू थाना इलाके का निवासी रोहित गोदारा इन दिनों दुबई में बैठकर अपना गैंग चला रहा है. श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेड़ी हत्याकांड में पुलिस की जांच अब तीन एंगल पर जाकर टिक गई है. इस हत्याकांड में आनंदपाल गैंग की बेटी चीनू, गैंगस्टर रोहित गोदारा और गैंगस्टर संपत नेहरा का हाथ होने की आशंका है.

दो हमलावरों ने गोगामेड़ी के घर में घुसकर मारी थी गोलियां : गौरतलब है कि जयपुर में मंगलवार को दो हमलावरों ने श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेड़ी के घर में घुसकर उन पर गोलियां चला दीं. पुलिस के अनुसार गोली लगने से घायल गोगामेड़ी की बाद में अस्पताल में मौत हो गई. इस घटना के दौरान हमलावरों ने अपने साथ आए नवीन शेखावत को भी गोली मार दी और घर में मौजूद एक अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया. हमले की जिम्मेदारी रोहित गोदारा गैंग ने ली है. राजस्थान के डीजीपी उमेश मिश्रा ने बताया कि हमलावर बातचीत करने के बहाने गोगामेड़ी के घर में दाखिल हुए और कुछ देर बातचीत करने के बाद उन्होंने गोलियां चलानी शुरू कर दीं. गोगामेड़ी के गार्ड ने भी जवाबी गोली चलाई. मिश्रा ने बताया कि बाद में दोनों हमलावरों ने उनके साथ आये नवीन शेखावत को भी गोली मार दी. उनके मुताबिक इस वारदात में गोगामेड़ी और नवीन की मौत हो गई जबकि परिचित अजीत गंभीर रूप से घायल हो गया. गोगामेड़ी पर हमले का पूरा घटनाक्रम घर पर लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गया.

1 राजस्थान पुलिस के एनकांउटर में मारे गए कुख्यात गैंगस्टर आनंदपाल के गैंग को उसकी बेटी चीनू दुबई से ऑपरेट कर रही है. पिता आनंदपाल के एनकाउंटर के बाद से चीनू का किसी बात को लेकर सुखदेव सिंह गोगामेड़ी से विवाद चल रहा था. चीनू पढ़ने के लिए दुबई गयी थी.

2 गैंगस्टर रोहित गोदारा ने खुलकर सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की हत्या करवाने की जिम्मेदारी ली है. कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई गैंग के करीबी रोहित गोदारा और सुखदेव सिंह गोगामेड़ी के बीच भी व्यापारियों से वसूली को लेकर विवाद चल रहा था. जिन व्यापारियों को गोदारा फोन कॉल पर धमकी देता था, उन्हें गोगामेड़ी अपना समर्थन देकर एक्सटॉर्शन मनी देने से रोकते थे. बीकानेर के कालू थाना इलाके का निवासी रोहित गोदारा इन दिनों दुबई में बैठकर अपना गैंग चला रहा है.

3 इस हत्याकांड में पुलिस के शक की सुई गैंगस्टर संपत नेहरा की तरफ भी घूम रही है. दरअसल, नेहरा के करीबी गैंगस्टर अंकित भादू के खिलाफ सुखदेव गोगामेड़ी ने सोशल मीडिया पर एक विवादित कमेंट किया था. यही नहीं, पुलिस एनकाउंटर में गैंगस्टर भादू के मारे जाने के बाद भी कमेंट किया था. बताया जा रहा है कि उसी समय से संपत नेहरा सुखदेव सिंह गोगामेड़ी को मरवाना चाहता था.

श्री एंगल

- हमले की जिम्मेदारी रोहित गोदारा गैंग ने ली है
- पूरा घटनाक्रम घर पर लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड

हत्याकांड में वीरेंद्र चारण संदिग्ध

सुखदेव सिंह गोगामेड़ी हत्याकांड के लिए बनाए गए स्पेशल जांच दल (एसआईटी) ने जयपुर समेत डीडवाना, बीकानेर, चुरू और हरियाणा के महेंद्रगढ़ सहित दूसरे जिलों में करीब 200 संदिग्धों से पूछताछ की है. हत्याकांड में गैंगस्टर गोदारा के करीबी वीरेंद्र चारण की भूमिका संदिग्ध है. एसआईटी हेड के अनुसार, राजू ठेहट हत्या मामले में एक लाख के इनामी वीरेंद्र के करीबी 60 लोगों से पूछताछ की गई है. फिलहाल वीरेंद्र सहित गोगामेड़ी हत्याकांड के दोनों शूटर नितिन फौजी और रोहित राठौड़ की सरगर्मी से तलाश जारी है.

आनंदपाल की बेटी चीनू कई मामलों में वांटेड

बता दें कि साल 2017 के जून माह में गैंगस्टर आनंदपाल सिंह पुलिस एनकाउंटर में मारा गया था. उसकी दो बेटियां हैं. छोटी बेटी योगिता कंवर नागौर जिले स्थित अपने गांव सांवराद में ही परिवार के साथ रहती है. जबकि बड़ी बेटी चीनू सिंह दुबई में रहती है. चीनू को पढ़ने के लिए पिता आनंदपाल ने दुबई भेजा था, लेकिन तब से वह कभी भारत नहीं आई. यहां तक कि पुलिस एनकाउंटर में मारे गए पिता के अंतिम संस्कार में भी नहीं. बता दें कि आनंदपाल की बेटी कई मामलों में वांटेड है. इसी वजह से वह स्वदेश नहीं लौटती. चीनू दुबई से ही अपने पिता की गैंग को चलाती है. कुख्यात गैंगस्टर राजू ठेहट हत्याकांड में दुबई में बैठी चीनू का नाम सामने आया था. दरअसल, राजू ठेहट और आनंदपाल एक-दूसरे के दुश्मन थे. गैंगस्टर आनंदपाल पुलिस एनकांटर में मारा गया, जबकि राजू ठेहट की पिछले साल दिसंबर में हत्या करवा दी गई. इस हत्याकांड में पकड़े गए आरोपी शक्तिसिंह ने पुलिस पूछताछ में दुबई में बैठी लड़की चीनू का का नाम लिया था.

भारतीय-अमेरिकी समुदाय के लोगों ने किया नृत्य

गरबा की धुन और संगीत से गूंज उठा 'टाइम्स स्क्वायर'

भाषा। न्यूयॉर्क

अमेरिका के न्यूयॉर्क स्थित 'टाइम्स स्क्वायर' उस वक्त 'गरबा' की धुन और संगीत से गूंज उठा, जब भारतीय-अमेरिकी समुदाय के लोगों ने इसे (गरबा को) संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल होने के बाद यहां पारंपरिक गुजराती नृत्य किया. गुरुवार देर शाम कड़ाके की ठंड के बीच न्यू जर्सी सहित न्यूयॉर्क त्रि-राज्य क्षेत्र के प्रवासी सदस्य बड़ी संख्या में टाइम्स स्क्वायर में गरबा के लिए एकत्र हुए. इस सप्ताह की शुरुआत में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए अंतर-सरकारी समिति ने बोत्सवाना के कसाने में अपने 18वें सत्र के दौरान 'गुजरात के गरबा' को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया. यहां महिलाओं और पुरुषों ने पारंपरिक गरबा परिधान पहने नृत्य किया, जिसे देखने और इसे कैमरे में कैद करने के लिए दुनिया भर के पर्यटक वहां रुक गए.

ताइवान जलडमरूमध्य में दिखा चीन का सैन्य निगरानी गुब्बारा

भाषा। ताइपे

ताइवान जलडमरूमध्य में एक चीनी सैन्य निगरानी गुब्बारा और बड़े पैमाने पर भेजे गए सैन्य विमान एवं पोत देखे गए हैं. ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी दी. मंत्रालय ने बताया कि गुब्बारा बृहस्पतिवार रात उत्तरी बंदरगाह शहर कीलुंग के दक्षिण-पश्चिम से गुजरा और पूर्व की ओर बढ़ने के बाद संभवतः प्रशांत महासागर में गायब हो गया. ताइवान ने ऐसे गुब्बारों को मार गिराने की धमकी दी है, लेकिन मंत्रालय ने यह नहीं बताया कि इस मामले में क्या कोई कार्रवाई की गई. उसने बताया है कि गुब्बारे को लगभग 6,400 मीटर (21,000 फुट) ऊंचाई पर उड़ते हुए देखा गया. उसने यह भी कहा कि शुक्रवार सुबह छह बजे से पहले 24 घंटों में 10 चीनी नौसैन्य पोत के अलावा 26 चीनी सैन्य विमानों का पता लगाया गया.

इन विमानों में से 15 विमानों ने उस मध्य रेखा को पार किया जो दोनों पक्षों के बीच एक अनौपचारिक सीमा रेखा है, लेकिन बीजिंग इसे स्वीकार नहीं करता. कुछ विमानों ने ताइवान के हवाई क्षेत्र के बाहर उसके वायु रक्षा पहचान क्षेत्र में भी प्रवेश किया.

अभिनेता जूनियर महमूद का कैंसर से हुआ निधन

मुंबई। 'कारवां', 'हाथी मेरे साथी' और 'मेरा नाम जोकर' जैसी फिल्मों में अपनी भूमिकाओं के लिए जाने जाने वाले चरित्र अभिनेता जूनियर महमूद का कैंसर के कारण शुक्रवार को निधन हो गया. वह 68 वर्ष के थे. जूनियर महमूद के छोटे बेटे हसनैन सैय्यद ने कहा कि मेरे पिता पेट के कैंसर से जूझ रहे थे. उनकी हालत पिछले 17 दिन से गंभीर बनी हुई थी. उनका एक महीने में 35 से 40 किलोग्राम वजन कम हो गया था.जूनियर महमूद का असली नाम नईम सैय्यद था. उन्होंने एक बाल कलाकार के रूप में 'मोहब्बत जिंदगी है' (1966) और 'नौनिहाल' (1967) से फिल्मी करियर की शुरुआत की थी.

इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध को कवर करने गये 68 पत्रकार मारे गये

2023 में दुनियाभर में 94 पत्रकारों की हत्या

भाषा। ब्रुसेल्स

दुनिया भर में पत्रकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले एक अग्रणी संगठन ने मीडियाकर्मियों के अपना काम करते समय मारे जाने की घटनाओं को गंभीर चिंता का विषय करार दिया है. बताया कि 2023 में दुनिया भर में 94 मीडियाकर्मियों की मौत हुई और पिछले 30 से अधिक वर्षों में किसी भी संघर्ष के दौरान इतनी अधिक संख्या में पत्रकारों की जान नहीं गयी, जितने पत्रकार हमास एवं इजराइल के युद्ध में मारे गये हैं.

पत्रकारों की सुरक्षा के लिए नये वैश्विक मानक बनाये जाना जरूरी

समूह ने पत्रकारों के लिए बेहतर सुरक्षा का प्रबंध किये जाने और उन पर हमला करने वालों को जवाबदेह ठहराये जाने का आह्वान किया. आईएफजे की अध्यक्ष डोमिनिक प्राडाली ने कहा कि पत्रकारों की सुरक्षा के लिए नये वैश्विक मानक बनाये जाना अत्यावश्यक हो गया है. हमास द्वारा इजराइल पर हमला किये जाने के बाद से इजराइल-हमास युद्ध को कवर करने वाले 68 पत्रकार मारे गये हैं.

400 अन्य पत्रकारों को जेल में डाला गया है

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ जर्नलिस्ट्स (आईएफजे) ने मीडिया कर्मियों की मौत की अपनी वार्षिक गणना के अनुसार बताया कि इस साल अब तक 94 पत्रकार मारे गये हैं और लगभग 400 अन्य पत्रकारों को जेल में डाला गया है. संगठन ने अफगानिस्तान, फिलीपीन, भारत, चीन और बांग्लादेश में भी मीडियाकर्मियों मौत की घटनाओं की निंदा की.

गाजा में युद्ध कवर कर रहे कई पत्रकार मारे गये : संगठन ने बताया कि इनमें से अधिकांश पत्रकार गाजा पट्टी में युद्ध कवर कर रहे फिलिस्तीनी पत्रकार थे. किसी भी संघर्ष में इतने पत्रकारों की मौत नहीं हुई, जितने मीडियाकर्मी इस युद्ध के दौरान मारे गये हैं.

यूक्रेन पत्रकारों के लिए खतरनाक देश बना : संगठन ने कहा कि रूस यूक्रेन पत्रकारों के लिए एक खतरनाक देश बना हुआ है. उसने पत्रकारों के खिलाफ अपराधों के मामलों में सजा नहीं होने को लेकर चिंता जताई जतायी है.

अधिसूचना 10वीं की परीक्षा 21 फरवरी व 12वीं की परीक्षा 12 फरवरी से शुरू होगी

आईसीएसई बोर्ड परीक्षा की डेटशीट हुई जारी

भाषा। नयी दिल्ली

काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन यानी सीआईएससीई बोर्ड ने 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा की डेटशीट जारी कर दी है. आईसीएसई की 10वीं और आईएससी की 12वीं की वार्षिक परीक्षा फरवरी में आयोजित की जायेगी.

10वीं की परीक्षा 21 फरवरी से शुरू होगी, जो 28 मार्च 2024 तक चलेगी. वहीं 12वीं की परीक्षा 12 फरवरी से शुरू होगी और 3 अप्रैल 2024 को समाप्त होगी. छात्र बोर्ड की ऑफिशियल वेबसाइट cisce.org पर डेटशीट चेक कर सकते हैं.

10वीं-12वीं की परीक्षा के पहले दिन होगा इंग्लिश पेपर

काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन की ओर से जारी नोटिफिकेशन के अनुसार, आईसीएसई कक्षा 10वीं की पहले दिन इंग्लिश पेपर 1 की परीक्षा होगी, जो सुबह 11 से एक बजे तक होगी. जबकि लास्ट डे आर्ट सब्जेक्ट की परीक्षा आयोजित की जायेगी, जो सुबह 9 बजे से 12 बजे तक चलेगी. 12वीं बोर्ड में भी पहले दिन इंग्लिश पेपर 1 की ही परीक्षा होगी. परीक्षा दोपहर 2 बजे से शाम पांच बजे तक चलेगी. टाइम टेबल देखने के लिए छात्र दिये गये स्टेप्स को फॉलो कर सकते हैं.

खास बातें

- 10वीं की परीक्षा 28 मार्च 2024 तक चलेगी
- 12वीं की परीक्षा 3 अप्रैल 2024 को समाप्त होगी

ऐसे चेक करें टाइम टेबल

स्टेप 1 : बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट cisce.org पर जाएं.
स्टेप 2 : होम पेज पर, आईसीएसई या आईएससी बोर्ड परीक्षा 2024 टाइम टेबल लिंक पर क्लिक करें.
स्टेप 3 : बोर्ड परीक्षा का टाइम टेबल की पीडीएफ स्क्रीन पर खुल जाएगी, इसे चेक करें.
स्टेप 4 : डेटशीट डाउनलोड करें और आगे के लिए प्रिंटआउट लेकर अपने पास रख लें.

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा-

सुनहरा भविष्य युवाओं के इंतजार में

भाषा। नयी दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि देश के युवाओं का सुनहरा भविष्य इंतजार कर रहा है और पिछले 10 वर्षों में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और जातिवाद की जगह विकास ने ले ली है. अमित शाह यहां बुराड़ी में आज शुक्रवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे.

उन्होंने कहा कि शिक्षा सिर्फ करियर को आकार देने के लिए नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण के लिए भी है. इस क्रम में शाह ने कहा, सुनहरा भविष्य देश के युवाओं का इंतजार कर रहा है. पिछले 10 वर्षों में देश में बड़े बदलाव हुए हैं, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और जातिवाद की जगह विकास ने ले ली है. उन्होंने कहा कि युवा देश की रीढ़ हैं और इसके विकास को गति देते हैं.

बोले मंत्री

- पूरी दुनिया भारत की तरफ देख रही है
- शिक्षा राष्ट्र निर्माण के लिए भी जरूरी है

अब भारत का समय आ गया है

उन्होंने कहा, भारत का समय आ गया है और पूरी दुनिया विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए उसकी ओर देख रही है. उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और विकास विरोधाभासी नहीं हैं. गृह मंत्री ने कहा कि किसी को विश्वास नहीं था कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो सकता है. एबीवीपी की सराहना करते हुए शाह ने कहा कि इसने न केवल शिक्षा प्रणाली की खामियों के खिलाफ संघर्ष किया है बल्कि छात्रों के चरित्र निर्माण में भी मदद की है.

आईआईटी-आईएसएम : 43वां दीक्षांत समारोह 10 दिसंबर को, राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन भी होंगे शामिल

42 टॉपर्स को गोल्ड मेडल देंगे उपराष्ट्रपति, 1919 छात्रों को मिलेगी डिग्री

संवाददाता। धनबाद

आईआईटी-आईएसएम के 43वें दीक्षांत समारोह का आयोजन 10 दिसंबर को संस्थान के पेनमेन हॉल में होना है. समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और विशिष्ट अतिथि के रूप में झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन भाग लेंगे. लगभग एक घंटे 20 मिनट उपराष्ट्रपति आईआईटी-आईएसएम में उपस्थित रहेंगे और इस दौरान अपने अभिभाषण के साथ 42 टॉपर्स को गोल्ड मेडल देकर सम्मानित करेंगे. यह जानकारी 8 दिसंबर को आईआईटी आईएसएम में आयोजित प्रेस वार्ता में संस्थान के निदेशक प्रो जेके पटनायक ने दी. उन्होंने बताया कि इसके एक दिन पूर्व 9 दिसंबर को संस्थान का 98वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा, जिसमें राज्यपाल भाग लेंगे.

शाम 5 बजे पहुंचेंगे उपराष्ट्रपति धनखड़

निदेशक ने बताया कि दीक्षांत समारोह चार सेशन में होगा. तीसरे सेशन की शुरुआत शाम पांच बजे से होगी. इसमें उपराष्ट्रपति भाग लेंगे. सेशन में 324 विद्यार्थियों को डिग्री दी जाएगी. इसके पूर्व सुबह 9 बजे से 11:25 तक चलने वाले पूर्व सेशन में 528, दोपहर 12 से 1:50 बजे तक चलने वाले दूसरे सेशन में 436 और चौथे सेशन में 37 विद्यार्थियों को मेडल दिया जाएगा.

दीक्षांत समारोह में संस्थान के 1249 विद्यार्थी मौजूद रहेंगे

निदेशक ने बताया कि दीक्षांत समारोह में बीटेक, एमटेक, पीएचडी, पीजी डिप्लोमा और मास्टर्स ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, साइंस, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, इंटीग्रेटेड मास्टर ऑफ़ टेक्नोलॉजी के 1919 विद्यार्थियों को डिग्री दी जानी है. इनमें से 1249 विद्यार्थी संस्थान में मौजूद रहेंगे. इसके अलावा एक विद्यार्थी को प्रेसिडेंट गोल्ड मेडल, 15 विद्यार्थी को सिल्वर मेडल, 19 विद्यार्थियों को स्पॉन्सर्ड मेडल और नौ विद्यार्थियों को बेस्ट थीसिस अवार्ड से भी सम्मानित किया जाएगा.

एनआईआरएफ रैंकिंग में टॉप 10 में शामिल होना लक्ष्य

संस्थान के निदेशक ने बताया कि आईआईटी आईएसएम को नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) रैंकिंग में टॉप 10 में शामिल करना उनका लक्ष्य है. इसे लेकर वे अपनी पूरी टीम के साथ प्रयासरत हैं. इसके अलावा न्यू एजुकेशन पॉलिसी के तहत डिजाइन किए गए करिकुलम को जल्द से जल्द लागू करने को लेकर वह प्रतिबद्ध हैं. इसके लिए फेज वाइज तैयारी की जा रही है. इसके साथ ही नए कोर्सेज की शुरुआत करने से लेकर विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने को लेकर भी तैयारी चल रही है. प्रेस वार्ता में उपनिदेशक प्रो धीरज कुमार, कॉरपोरेट कम्युनिकेशन डीन प्रो रजनी सिंह के साथ अन्य मौजूद थे.

आओ जानें

नौ दिसंबर का इतिहास

- 1961 : तंगानिका को आजादी मिली. जूलियस न्येरेरे प्रथम प्रधानतंत्री बने. 1964 में नया नाम हुआ तंजानिया
- 1987 : इंग्लैंड के पाक दौरे में दूसरे टेस्ट मैच के दौरान कप्तान माइक गैटिंग और अंपायर शकूर राणा के बीच जमकर बहस हुई
- 1992 : प्रिंस चार्ल्स और प्रिंसेस डायना के अलग होने की औपचारिक तौर पर घोषणा
- 2011 : कोलकाता के एएमआरआई अस्पताल में भीषण आग लगने से तकरीबन 90 मरीजों की मौत
- 2011 : कोलकाता के अस्पताल में लगी भीषण आग, 90 मरीजों की मौत

बोकारो डीपीएस की आयुषी ने बनाया बायोमीट्रिक पैड बॉक्स

संवाददाता। बोकारो

डीपीएस बोकारो की सातवीं कक्षा की छात्रा आयुषी ने बायोमीट्रिक तकनीक आधारित एक सैनिटरी पैड बॉक्स बनाया है. इसकी मदद से स्कूली छात्राएं बिना किसी के सामने कुछ बोले और बगैर किसी की मदद के अपनी जरूरत पूरी कर सकती हैं. वह भी महज उंगलियों के निशान मात्र से. आधार नंबर और विद्यालय के रिकॉर्ड से जुड़ी इस प्रणाली में छात्राएं अपना फिंगरप्रिंट इस्तेमाल कर अपनी जरूरत के हिसाब से सैनिटरी पैड निकाल सकती हैं. सामाजिक सरोकार से जुड़े इस नए आविष्कार के लिए आयुषी का चयन केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी 'इंस्पायर अवार्ड मानक' योजना 2022-23 में हुआ है. 15 दिसंबर को रांची में आयोजित राज्यस्तरीय प्रदर्शनी सह प्रोजेक्ट प्रतियोगिता में वह अपने इस नवाचार को प्रस्तुत करेगी. जबकि, हाल ही में बाल अधिकार कांग्रेस (सीआरसी) की राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धा में भी उसका प्रोजेक्ट चयनित हुआ है.

इंस्पायर मानक में जिलास्तरीय चयन के बाद आयुषी को प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए सरकार की ओर से 10 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि भी मिली थी. प्रोजेक्ट बनाने में छात्रा ट्विंकल सिन्हा ने भी उसका साथ दिया है.

सैनिटरी बॉक्स में 100 पैड की है क्षमता

यह सैनिटरी बॉक्स 100 पैड की क्षमता वाला है. आयुषी ने बताया कि फिंगरप्रिंट सेंसर वाला यह सैनिटरी पैड बॉक्स दो हिस्सों में बंटा है. एक हिस्से से पैड निकाला जाता है और दूसरे में पैड डोनेशन चैंबर बना है. एक पैड लेने वाली छात्रा को बाद में इसके बदले दो पैड बॉक्स में अधिकतम एक हफ्ते में डोनेट करने होंगे. देर होने पर उसे रिमाइंडर भी दिया जाएगा. जो दो पैड छात्राएं डालेंगी, उनमें से एक सरकारी स्कूल की छात्राओं को दान स्वरूप दिया जाएगा, जबकि दूसरा उसी बॉक्स में पैड निकालने वाले हिस्से में रखा जाएगा. पैड लेने और देने की प्रक्रिया एलईडी ग्लो बल्ब और सेंसर से जुड़ी है.

नेहरू युवा केंद्र के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में राज्यपाल ने कहा-

प्रयास करें तो आरयू वर्ल्ड क्लास विवि बन सकता है

संवादादाता। रांची

हम सब प्रयास करें तो रांची विश्वविद्यालय एक विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय बन सकता है. आज आवश्यकता इस बात की है कि अपनी विरासत पर गर्व करते हुए युवाओं को चरित्र निर्माण के साथ-साथ अपनी योग्यता से समाज को आगे ले जाने में अहम भूमिका निभानी होगी. उपरोक्त बातें नेहरू युवा केंद्र के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में कही. उन्होंने कहा कि यह संगठन युवाओं को आगे बढ़ने और समाज की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अगले 25 वर्षों के लिए 5 संकल्प लेने को कहा. बताया कि भारत को विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में ये पांच संकल्प लोगों को हमेशा प्रेरित करते रहेंगे और इस दिशा में युवाओं का उत्तरदायित्व काफी बढ़ जाता है.

नेहरू युवा केंद्र ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया है. इस प्रतियोगिता का थीम पंच प्रण हैं, जिसमें ऑन स्पॉट कविता लेखन, मोबाइल फोटोग्राफी, देशभक्ति और राष्ट्र निर्माण पर भाषण प्रतियोगिता,लोक कला पर आधारित सांस्कृती पर प्रतियोगिता कराई गई.

खास बातें

- राज्यपाल ने छात्रों-अफसरों को दिलाई शपथ
- नेहरू युवा केंद्र ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता कराई

इस प्रतियोगिता में जितने वाले छात्र दिल्ली में होने वाली राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में भाग लेंगे. इस कार्यक्रम में उपस्थित खेल सचिव मनोज कुमार ने राज्यपाल समेत सभी को शपथ दिलाई. उस प्रतियोगिता की शुरुआत 4 मार्च से हुई थी, प्रखंड और जिला स्तर पर होते हुए अब राज्य स्तर कर हुआ. प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा 9 दिसंबर को किया जाएगा. इस कार्यक्रम में रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजित सिन्हा,नेहरु युवा केंद्र के झारखंड की काडिनेटर हनी सिन्हा, दूरदर्शन के डायरेक्टर आरके. राव शामिल रहे. खेल सचिव मनोज कुमार ने कहा कि जिला स्तर से हो कर यहां तक पहुंचने वाले सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं. यह कार्यक्रम हर साल किया जाता है. 24 जिलों में पंच प्रण कार्यक्रम हो चुका है. हनी सिन्हा ने कहा कि यह कार्यक्रम जजों की भूमिका पर आधारित है. यहां से जीत कर जाने वाले युवा राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेंगे. जीतने वाले युवाओं को पुरस्कार और राशि दी जाएगी.

बीआईटी मेसरा : मेडिकल इमेजिंग की जटिलता बताई

संवाददाता। रांची

बीआईटी मेसरा के लालपुर सेंटर में चल रहे दो दिवसीय कार्यशाला का शुक्रवार को दूसरा दिन रहा. दूसरे दिन के कार्यशाला में जाधवपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. डॉ यमुना कांत सिंह बताया कि मेडिकल इमेजिंग के तौर तरीकों की जटिलताओं में आगे की राह को अवगत कराया. प्रो. प्रदीप भट्टाचार्य ने मशीन लर्निंग से होने वाले लाभ के बारे में विस्तार पुरवक कहा. डॉ अमृता प्रियम डॉ, उमेश प्रसाद, डॉ सोमित्रो चक्रवर्ती, डॉ प्रणव कुमार ने उपस्थित सभी छात्रों के जानकारी दी. सत्र में गूगल के अत्रि डे

ऑनलाइन शामिल हुए. डॉ संजय कुमार, सिद्धि कांत मिश्रा, शांतनु सिन्हा, मनोज कुमार, बासुदेव सिंह, डॉ ममता पांडे, डॉ अमृता सरकार, डॉ स्वाति मिंज, डॉ शिवा, सुबोजित पाल, अजय कुमार, शुभाशीष रॉय, डॉ अपर्णा शुक्ला, डॉ महुवा डॉ सिबा मित्रा व अन्य शामिल रहे.

उपलब्धि : किसान का बेटा सचिन बना कस्टम इंस्पेक्टर

संवाददाता। गोमो

स्टाफ सेलेक्शन कमिशन (एसएससी) वर्ष 2023 की परीक्षा में किसान के बेटे ने कामयाबी के झंडे गाड़े हैं. धनबाद जिले के तोपचांची प्रखंड अंतर्गत नेरो गांव के सचिन कुमार ने ऑल इंडिया में 32वां रैंक हासिल किया है. इनके पिता पवन कुमार एक साधारण किसान हैं. बेटे की इस कामयाबी से गांव के लोग में खुशी से गदगद हैं. रिश्तेदार, मित्र बंधु उनके घर पहुंच कर सचिन की सफलता पर बधाई दे रहे हैं. इनके पिता पवन महतो ने बताया कि सचिन की शुरू से ही मेधावी छात्र

रहा. गांव के ही सरकारी विद्यालय से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की थी. उसके बाद बीआईटी सिंदरी से बीटेक करने के बाद कंपीटिशन की लगातार तैयारी करता रहा और यह कामयाबी हासिल करने में सफलता पायी.

कॅरियर-काउंसिलिंग

आईआईटी से एमसीए करना कॅरियर बनाने का बेहतर विकल्प

एमसीए एक 2 वर्षीय पोस्ट-ग्रेजुएट डिग्री है, जो बीसीएस के बाद किए जाने वाला कोर्स हैं. इस कोर्स में छात्रों को सी, सी, जावा पाइथन, पीएचपी, रुबी,एसक्यूएल, जावा स्क्रिप्ट, पीर्ल एचटीएमएल जैसी वेब डेवलपमेंट लैंग्वेज के बारे में पढ़ाया जाता है. एमसीए मे छात्रों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग एप्लिकेशन बनाना, कम्प्यूटर फंडामेंटल, वेब डिजाइनिंग, नेटवर्किंग से संबंधित भी पढ़ाया जाता है, जिसे पढ़ने के बाद आप कंप्यूटर के किसी भी क्षेत्र में एक अच्छी जॉब पा सकते हैं.

आईआईटी से एमसीए करने के फायदे

- आईआईटी भारत का बेस्ट टेक्निकल कॉलेज है.
- आईआईटी से एमसीए करने के बाद अच्छा प्लेसमेंट मिलता है.
- आईआईटी में भारत के बेस्ट प्रोफेसर्स पढ़ाते हैं.
- आईआईटी से एमसीए करने के बाद अच्छा पैकेज मिलता है.
- अगर आप विदेश में जॉब करना चाहते हैं तो आपको ज़रूर आईआईटी से एमसीए करना चाहिए. आईआईटी से एमसीए करने के बाद विदेश में जॉब लगने की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं.

स्पेशलाइजेशन

- आईटी
- प्रोग्रामिंग एंड डाटा स्ट्रक्चर
- मैथेमैटिकल फाउंडेशन
- ऑपरेटिंग सिस्टम्स
- कंप्यूटर एंड कम्युनिकेशन
- नेटवर्क
- नेटवर्किंग प्रोग्रामिंग
- प्रोग्रामिंग फंडामेंटल्स
- बिज़नेस प्रोग्राम
- वेब टेक्नोलॉजी

आईआईटी में एमसीए के लिए योग्यता

- आईआईटी से एमसीए करने के लिए उम्मीदवारों को कंप्यूटर एप्लीकेशन, कंप्यूटर विज्ञान या संबंधित अनुशासन में बैचलर्स किया होना चाहिए.
- आईआईटी से एमसीए करने के लिए उम्मीदवारों को बैचलर स्तर पर न्यूनतम 50% कुल अंक प्राप्त करे होने चाहिए.
- आईआईटी से एमसीए कोर्स के लिए पात्र होने के लिए उम्मीदवारों को 12वीं कक्षा में मुख्य विषय के रूप में गणित का अध्ययन करना होगा.

आईआईटी में एमसीए के लिए योग्यता

- आईआईटी में एमसीए के लिए एसे करे आवेदन
- सबसे पहले आईआईटी की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाएं.
- इसके पश्चात स्कैन किए फोटो, हस्ताक्षर व 12वीं के सर्टिफिकेट को अपलोड करना होगा.
- इसके पश्चात निर्धारित तिथि तक फीस का भुगतान क्रेडिट/ डेबिट कार्ड/ नेट बैंकिंग/ यूपीआई अथवा पेटीएम के माध्यम से करना होगा. इस फीस पर जीएसटी भी कटेगा.
- इसके बाद वेबसाइट पर विवरण में संशोधन के लिए मौका मिलेगा. कुछ तिथियों पर करेक्शन विंडो खोली जाएगी, जिसकी जानकारी वेबसाइट पर अपलोड कर दी जाएगी.

एमसीए के लिए अन्य प्रवेश परीक्षा

- **एनआईएमसीईटी**
एनआईएमसीईटी या नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एमसीए कॉमन एंट्रेंस टेस्ट नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की एमसीए प्रवेश परीक्षा है. एनआईटी भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय महत्व के संस्थान हैं. अगरतला, इलाहाबाद, भोपाल, जमशेदपुर, कुरुक्षेत्र, रायपुर, सुरथकल, तिरुचिरापल्ली और वारंगल में एनआईटी एमसीए कार्यक्रम प्रदान करते हैं. इन 9 एनआईटी में से किसी में एमसीए कोर्स में प्रवेश एनआईएमसीईटी रैंक पर आधारित है.

- **एमएएचएमसीए सेट**
एमएएचएमसीए सेट या महाराष्ट्र मास्टर इन कंप्यूटर एप्लीकेशन कॉमन एंट्रेंस टेस्ट महाराष्ट्र के स्टेट कॉमन एंट्रेंस टेस्ट सेल द्वारा आयोजित एक प्रवेश परीक्षा है. एमएएच एमसीए सीईटी रैंक का उपयोग सरकारी/सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों, विश्वविद्यालय विभागों, विश्वविद्यालय प्रबंधित संस्थानों और गैर-सहायता प्राप्त एमसीए संस्थानों में एमसीए कोर्स में प्रवेश देने के लिए किया जाता है.

- **बीएचयू पेट एमसीए**
BHU PET एमसीए एक विश्वविद्यालय स्तर की प्रवेश परीक्षा है जो बनारस हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा वार्षिक आधार पर आयोजित की जाती है. परीक्षा कंप्यूटर आधारित परीक्षण (सीबीटी) मोड में है. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में एमसीए उम्मीदवारों के लिए कुल 492 सीटें हैं.

- **टीएएनसीईटी**
टीएएनसीईटी का मतलब तमिलनाडु कॉमन एंट्रेंस टेस्ट है. यह अन्ना विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों जैसे एमसीए, एमबीए, एमटेक, एम.आर्क, आदि में प्रवेश देने के लिए आयोजित एक राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा है. टीएएनसीईटी ऑफ़लाइन या पेन-एंड-पेपर मोड में आयोजित किया जाता है.

- **डब्यूबीजेईसीए**
डब्यूबीजेईसीए का फुल फॉर्म कंप्यूटर एप्लीकेशन के लिए पश्चिम बंगाल संयुक्त प्रवेश परीक्षा है. आमतौर पर डब्यूबीजेईसीए के रूप में जाना जाता है, प्रवेश परीक्षा पश्चिम बंगाल संयुक्त प्रवेश परीक्षा बोर्ड द्वारा पश्चिम बंगाल के कॉलेजों में प्रवेश देने के लिए आयोजित की जाती है. यह एमसीए कोर्स में प्रवेश के लिए एक वार्षिक परीक्षा है.

- **सीयूईटी एमसीए**
सीयूईटी एमसीए का फुल फॉर्म सेंट्रल यूनिवर्सिटीज कॉमन एंट्रेंस टेस्ट है. यह एनटीए द्वारा आयोजित एक अखिल भारतीय स्तर की प्रवेश परीक्षा है. परीक्षा कंप्यूटर आधारित परीक्षा के रूप में ऑनलाइन मोड में आयोजित की जाती है.

- **ओजेईई**
ओजेईई का फुल फॉर्म ओडिशा संयुक्त प्रवेश परीक्षा है. यह एक राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा है जो ओजेईई सेल द्वारा बी फार्म, एमबीए/पीजीडीएम, एमसीए और एम टेक जैसे पाठ्यक्रमों में प्रवेश देने के लिए प्रशासित है. यह एक कंप्यूटर आधारित टेस्ट (सीबीटी) है.

आईआईटी में नामांकन के लिए ये रखे अपने पास

- 10 की मार्कशीट
- 10+ 2 मार्कशीट
- ग्रेजुएशन की मार्कशीट
- पासपोर्ट साइज फोटो
- आधार कार्ड
- अपडेट किया गया रिज्यूमे
- आईआईटी जेएम का स्कोर कार्ड

आईआईटी में एमसीए के लिए प्रवेश परीक्षाएं

- आईआईटी में एमसीए में एडमिशन लेने के लिए आईआईटी जेएएम (जॉइंट एडमिशन टेस्ट) का एग्जाम क्वालीफाई करना अनिवार्य होता है.

आईआईटी में एमसीए करने के बाद कॅरियर स्कोप

- आईआईटी के स्टूडेंट्स को देश की सबसे बेहतरीन कंपनियों में प्लेसमेंट मिलता है. इसके अलावा इंटरनेशनल लेवल के कई बड़े ब्रांड्स भी आईआईटी कैंपस में स्टूडेंट्स को हाई पैकेज पर हायर करके ले जाते हैं.

टॉप रिक्रूटर्स

- गूगल
- समसंग
- माइक्रोसोफ्ट
- नोकिआ
- विप्रो
- इंफोसिस
- टेक महिंद्रा
- एसेनचर
- कैप्ज मिनी

भारत में एमसीए के लिए अन्य प्रवेश परीक्षा

- एनआईएमसीईटी
- एमएचए एमसीए सेट
- बीएचयू पेट एमसीए
- टीएएनसीईटी
- डब्ल्यूबीजेईसीए
- बीआईटी एमसीए
- क्यूईटी एमसीए
- ओजेईई
- पीयू सेट
- आईपीयू सेट

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा 304-305 समृद्धि स्क्वायर, किशोरगंज चौक, हरमू रोड, रांची- 834001, झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - **सुरजीत सिंह**, स्थानीय संपादक - **संजय सिंह***. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - **JHAHIN/2023/84487** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)